विशेषांक

मार्च १९७०

एक प्रति का मूल्य २,०० रु.

वार्षिक शुल्क ८,०० रु.

2021

ज्यौतिष मार्तण्ड

डी--१९ गणेश मार्ग बापू नगर

जयपुर--४ (राजस्थान)

फोन : ६२५०६

अनुक्रमणिका

राष्ट्रीय प्रिंटिंग प्रेस बाजदारों की मोरी, चांदी की टकसाल जयपुर।

ज्यौतिष–मार्तण्ड पत्रिका के उद्देश्य

★ ज्योतिष, सामुद्रिक, अंक–ज्योतिष, मंत्र, तंत्र एवं तत्सम्बन्धी समस्त शास्त्रों आदि की चर्चा-परिचर्चा।

★ समय-समय पर सम्बन्धित विषयों पर परिसम्वादों का आयोजन, विवेचन एवं अनुसंधान करना, इन कार्यों में लगे हुये विद्वानों के लिए सामग्री की सूचनाएं एकत्र करना तथा उनके अनुभवों एवं उपलब्धियों को प्रकाश में लाकर सामान्य जन का ज्ञान-सम्बर्द्धन करना।

★ सामान्य जन में ज्योतिष शास्त्र एवं अधिकृत विश्वासों के प्रति विश्वास एवं श्रद्धा बढ़ाना।

★ देश-विदेश के सम्बन्धित अधिकृत विद्वानों से सम्पर्क कर, उनके विचारों एवं उपलब्धियों से लोगों को अवगत कराना।

★ अधिकृत पाण्डुलिपियों की खोजकर, पत्रिका द्वारा उसे प्रकाश में लाते हुये, बाद में पुस्तकाकार में समग्र सामग्री को विवेचन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन के लिए उपलब्ध कराना।

★ अधिकृत विद्वानों को आमंत्रित कर उनका सम्मान करना।

★ इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए साधन जुटाने में सहयोग देना।

अपने नगर के समाचार पत्र बिक्रेता से ज्योतिष मार्तण्ड की मांग कीजिये।

कृपया अपने पत्र के साथ जबाबी टिकिट लगा लिफाफा अवश्य भेजिये।

"ज्यौतिष मार्तण्ड"

का नियमित प्रकाशन
उसके संरक्षकों, तथा सदस्यों
पाठकों पर निर्भर है

अतः इसके संरक्षक व सदस्य बनकर इसे सहयोग दीजिये।

ऐसे महानुभावों के नाम प्रत्येक अंक में प्रकाशित किये जावेंगें तथा हम इनका संक्षिप्त परिचय भी प्रकाशित करेंगे।

संरक्षक एवं सदस्य बनने के अधिकारी।

संरक्षकः—जो व्यक्ति या संस्थानः—

१००१) रुपये या इससे अधिक प्रदान करेगें।

उप संरक्षकः—

५०१) रुपये या इससे अधिक प्रदान करेगें।

सदस्यः—

१०१) रुपये या इससे अधिक प्रदान करेगें।

वर्तमान संरक्षक

१. श्रीमत्, हर हाईनैस राजमाता जी साहिबा, जोधपुर।

२. श्री देवधर पाण्डेय, महामंत्री, ज्यौतिष अनुसंधान एवं अध्ययन केन्द्र जयपुर।

३. मेसर्स जे. के. प्रतिष्ठान, कमला टावर कानपुर।

४. सेठ श्री सूरजभानजी, केजड़ीवाल कानपुर।

आपका ग्राहक नम्बर लाल मुहर के साथ कवर पर अंकित है।

पाठकों को धन्यवाद

ज्योतिष मार्तण्ड के विज्ञ लेखक श्री पं० केदारदत्त जोशी ज्योतिश्शास्त्राचार्य ने अपने एक पत्र के माध्यम से उन सभी महानुभावों के प्रति अपना धन्यवाद ज्ञापित किया है जिन्होंने उनके लेख एवं विचारों से प्रभावित होकर उन्हे पत्र लिखे हैं।

ज्योतिष मार्तण्ड उन पाठकों को अपनी ओर से भी धन्यवाद दे रहा है। श्री जोशी जी आजकल अस्वस्थ्य हैं, इसीलिए वे विज्ञ पाठकों की जिज्ञासानुसार उत्तर नहीं दे पाये हैं। इसका उन्हे दुःख है।

ज्योतिष मार्तण्ड उनके स्वास्थ्य की कामना करता है।

काम की बात कीजिये ! कम बात कीजिये !
काम कीजिये; और काम करने दीजिये

ऐसे ज्योतिष प्रेमियों से जो अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान चाहते हैं से विनम्र निवेदन है कि टिकिट लगे लिफाफे के साथ पत्र व्यवहार द्वारा अपने प्रश्न भेजें, ताकि उनके प्रश्नों के उत्तर शीघ्र प्रेषित किये जा सके। हमारा लक्ष्य व्यावसायिक नहीं है, अतः समस्याओं के बारे में साक्षात्कार करने में समयाभाव और अत्यधिक व्यस्तता के कारण हम असमर्थ है, इस पर भी यदि कोई महानुभाव साक्षात्कार करना ही चाहें तो कृपया फोन ६२५०६ पर सम्पर्क कर वार्ता का समय निर्धारित कराने की कृपा करे।

—व्यवस्थापक

कृपया ध्यान दीजिये

कुछ प्रेमी पाठकों को ज्यौतिष मार्तण्ड के दूसरे अंक की प्रतियाँ रजिस्टर्ड कवर से भेजी गई थी वह उनको मिल भी गई, परन्तु उनकी बिक्री की राशि अभी तक प्राप्त नहीं हुई। कृपया राशि या बिना बिके अंक शीघ्र वापस भेजें।

पत्रिका की सुदृढ़ स्थापना के लिये सभी प्रकार का सहयोग आवश्यक है।

—सम्पादिका

आवश्यकता है

ज्योतिष मार्तण्ड अतिशीघ्र मासिक पत्र के रूप में सामने आने वाला है। अतः इसकी व्यवस्था कार्य को सम्भालने के लिए एक ज्योतिषाचार्य की आवश्यकता है। कृपया न्युनतम स्वीकृत वेतन के साथ पत्र व्यवहार करें।

—सम्पादिका

मंगलाचरण

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयिश्रीः श्रयतां यशः ।।

भारतीय संस्कृति सदैव विश्वबन्धुत्व एवं विश्व मैत्री की समर्थक रही है । अपने हित लाभ की कामना तो सभी करते हैं, मानवता इसी में है कि हम स्वार्थ से परे समस्त मानव-समुदाय के कल्याण एवं समृद्धि की कामना करें । इसी आदर्श को लेकर ऋग्वेद के मानव ने महालक्ष्मी से प्रार्थना की थी—हे देवि ! हमारे मन की सभी अभिलाषायें पूर्ण और हमारे वचन सदैव सत्य होते रहें । हमारी कीर्ति, रूप, धन-धान्यादि सदा स्थिर रहें ।"

नये वर्ष के पावन अवसर पर इसी प्रार्थना को दुहराते हुए हम अपने ग्राहकों, पाठकों, विज्ञापन-दाताओं, हितचिन्तकों एवं कोटि-कोटि मानव समाज की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं ।

"The Divine Sun represents the Holy Trinity, because He is the creator in the morning, Lord Mahesvara, at noon and Lord Narayana Himself in the evening. The great teacher of Astrology-Astronomy viz. Varahamihira, invokes the Sun God at the commencement of his Brihajjataka as the Path leading to Emanciation or Final Deliverance from bondage, as the very soul of beings as the Lord of the eternal planets, as the lamp of the three worlds and finally as the bestower of intellectual keenness and fine speech. Hence, realizing the great powers of the divine Sun. I pray to him at the commencement of this work of mine, so that he may vouchsafe unto me and the readers long life, prosperity, success and the dcesired objects.



भारतीय ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियां हमें आश्चर्य चकित कर देती हैं जब हमारे सामने सामान्य तन इतना बृहद् विश्लेषण शास्त्र के स्तर पर आता है, यह तथ्य और भी चुनौतियों को साथ लेकर आता है जिसके लिए आज की तितली सभ्यता के पास कोई तर्क नहीं है, कोई उत्तर नहीं है । इतना ही नहीं वरन् वर्तमान-युग का रूढ़ भौतिकवादी, मन में चाहे जैसा उपलब्धियों का पहाड़ लेकर चलता हो, उसके अन्तर में भारतीय ज्योतिष की एक अनबूझ पहली की संज्ञा ने, जाने अनजाने में, अनायास घर कर लिया है । उसकी समस्त भौतिक सिद्धियां चकनाचूर होती देखी गई हैं, केवल वेशभूषा बनाये अपने को भविष्य वक्ता बताने वाले व्यवसायी ज्योतिषियों के सामने क्यों कि उसे अपना भविष्य जानने की उत्कृष्ट अभिलाषा है ।

भारत में एक बहुत बड़े वर्ग ने चलते-फिरते ढंग से, इसे एक ढ़ाल बनाकर अपने संरक्षण का

साधन बना लिया है। यह सही है कि इस भौतिक साधन से समाज में उन्हें रोटी मिल जाती है पर सही अर्थों में ये लोग खुले चौराहे पर हमारे इस विश्लेषित विज्ञान की मजाक बना रहे हैं। यह हमारे लिए लज्जाजनक है। राजस्थान ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र इस चुनौती को स्वीकार कर चुका है और इसी दिशा में प्रयत्न कर रहा है कि आने वाला समाज भारतीय ज्योतिष की मूल परिकल्पना से परिचित हो।

भारतीय ज्योतिष का एक शुद्ध व्यावहारिक पक्ष है। ग्रहों की स्थिति और उसका प्रभाव निश्चित करते हुये वह यह संकेत मात्र कर सकता है कि यदि कोई इन ग्रहों के प्रभाव को कम कर सकता है, तो उसका जीवन सुखमय व्यतीत हो सकता है। यह सब अनुभव, अध्ययन और अनुसंधान का प्रतिफल है।

ज्योतिष में रुचि रखने वाला समाज इससे परिचित है कि अनन्त आकाश में ग्रह और ताराएं अपने अपने कक्ष मार्ग में अबाध गति से चलते रहते हैं। उनमें पारस्परिक आकर्षण है और उसका स्पष्ट प्रभाव पृथ्वी (एक ग्रह) पर विचरण करने वालों पर पड़ता है। समस्त मानव जीवन एक अदृश्य शक्ति से संचालित है, इसे पाश्चात्य और भारतीय, सभी स्वीकार करने के लिये बाध्य हैं। साथ ही, इसे भी पूरे विश्व ने स्वीकारा है कि ग्रहों, तारों एवं उनकी स्थितियों के अध्ययन-विवेचन तथा विद्वानों के अनुभवों के आधार पर भारतीय ज्योतिष अपनी गणित से पूर्ण है, और वह व्यक्ति, –समाज तथा विश्व पर पड़ने वाले ग्रहों के प्रभाव की पूर्व गणना कर सकता है। इतना ही नहीं वरन् इसे इस प्रकार कहने में भी कोई अत्युक्ति अथवा अतिशयोंकित नहीं होगी कि भारतीय ज्योतिष व्यक्ति के अदृश्य भविष्य की परिकल्पना की सूक्ष्मतम गणना करने, उसे बताने, उससे बचने तथा उसके सहयोगी ग्रहों की उपलब्धियों के विषय में पूरी जानकारी दे सकने में सक्षम है।

राजस्थान ज्योतिष अध्ययन-अनुसंधान केन्द्र अपनी स्थापना के साथ ही यह संकल्प लेकर चल रहा है कि वह ज्योतिष के सही मार्ग से विश्व को अवगत कराये, इसे प्रशस्त करने में लोगों का सहयोग ले और पिछले वर्षों में फैलाये गये भ्रमों को समाप्त करते हुये समाज को सही मार्ग-दर्शन के आयाम बनाये। केन्द्र आप सभी का हार्दिक स्वागत करता है। आप अपने विचारों, अनुभवों एवं उपलब्धियों से केन्द्र को सहयोग दे सकते हैं।

पिछले अंक में अपने पाठकों को यह सूचना दी थी कि यह अंक राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया की जन्म कुण्डली की अध्ययन सामग्री दिये हुये होगा। इस अंक के संबंध में हमें काफी सामग्री प्राप्त हुई है, विभिन्न अध्ययन एवं विचार भी मिले हैं। कई विद्वानों के लेख इस अंक में, स्थानाभाव के कारण नहीं दिये जा रहे हैं। उनके सहयोग के लिये पत्रिका का सम्पादक मण्डल आभारी है।

———

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

सूर्य का मेष राशि में प्रवेश ही नये वर्ष की कुण्डली है और उस समय की ग्रह स्थिति विश्व की वर्ष स्थिति होगी। इस नये वर्ष में सं० २०२७ वि० चैत्र शुक्ल ७ सोमवार तदनुसार १३ अप्रेल १९७० को धनु लग्न में सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा। उस समय की विश्व कुण्डली निम्न प्रकारेण होगी।



इस वर्ष की विश्व कुण्डली

इस वर्ष का सम्राट (राजा) मंगल और महामंत्री चन्द्रमा जगत् लग्न से छठे और आठवें स्थान में हैं, जो कि क्रमशः कष्ट और मृत्यु के स्थान हैं, अतः सम्पूर्ण विश्व में अशान्ति, अन्ध विश्वास, लूटपाट, रक्तपात और अराजकता बनी रहेगी। मंगल स्वयं अग्नि तत्व प्रधान है, अतः जगह जगह दंगे, हिंसा, युद्ध एवं संघर्ष होगा, लोगों में छीना-झपटी की भावना बढ़ेगी, तथा विश्व तीवृता से युद्ध के कगार की ओर बढ़ेगा।

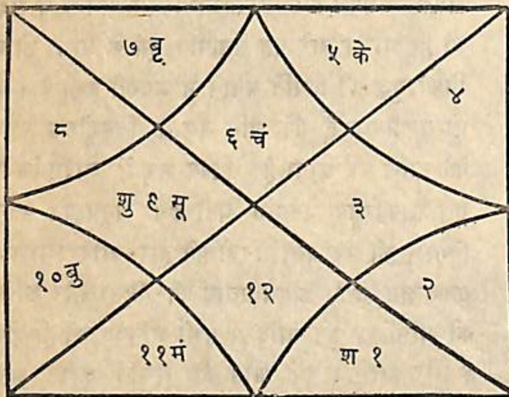
परन्तु इसके साथ ही साथ शनि की स्थिति विचित्र है, प्रथमतः वह मंगल की राशि पर बैठ कर युद्ध प्रिय बन गया है साथ ही उसने षष्टेश शुक्र से संबंध स्थापित कर विस्फोटक स्थिति बनाने में मदद दी है, और तीसरे वह सेनापति सूर्य के साथ होकर विश्व युद्ध की स्थिति बनाने में अग्रणी हुआ है। जो हो यह स्पष्ट है कि शनि जब से विस्फोटक मंगल की राशि पर आया है, विश्व भर में आश्चर्यजनक एवं आकस्मिक घटनाएं घटी हैं। अयूब का पतन, दिगाल की पराजय, अरबों की हार और भारत में गृह-कलह, दंगे, अहमदाबाद की हिंसा और कांग्रेस की आंतरिक फूट आदि ये सभी शनिदेव की ही कृपा है और इस पूरे वर्ष शनि की स्थिति यही है अतः संसार में उत्पात, विग्रह, अशान्ति एवं युद्ध बने रहें या बढ़ें, तो आश्चर्य क्या ?

शनि बुध विदेश नीति में जबरदस्त मोड़ लायेगा। सभी सभ्य देशों की विदेश नीतियों में अन्तर आयेंगे तथा काश्मीर, केरल, बंगाल, मद्रास, तेलंगाना, नैपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इङ्गलैंड, अमेरिका, फ्रांस, चीन, रूस, चेकोस्लोवाकिया, बर्मा और जापान आदि देशों में शनि का विपरीत एवं क्रूर प्रभाव बढ़ेगा तथा सभी अशान्ति एवं गृह कलह के शिकार होंगे। महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आकस्मिक पतन एवं अकाल मृत्यु, आन्तिरिक विद्रोह आदि सामान्य बातें होंगी। अमेरिका गृह कलह से पूर्णतः ग्रस्त रहेगा तथा यूरोप के देशों में भूकम्प, अग्निकांड, विस्फोट, राज्य-विप्लव आदि सामान्य

बातें होंगी। रूस, चीन के बीच मतभेद बढ़ेंगे तथा रूस और अमेरिका बाह्य रूप से अलग-अलग होते हुए भी आन्तरिक रूप से नजदीक आयेंगे। विश्व में शक्ति संतुलन अमेरिका के पक्ष में रहेगा तथा राजनीतिक क्षेत्र में अनेक नाटकीय परिवर्तन होंगे।

सन् ७० तथा भारतीय गणराज्य

३१ दिसम्बर १९६९ को रात्रि के ठीक बारह बजकर एक मिनट पर १९७० का वर्ष प्रारंभ होगा। इस समय कन्या लग्न पूर्ण अंशों में चल रहा होगा तथा उसकी ग्रह स्थिति निम्न रूपेण होगी—



भारत की सन् ७० की जन्म कुण्डली

सन् ७० में अष्टमेश-षष्टेश का पारस्परिक सम्बन्ध बना है अर्थात् अष्टमेश मंगल छठे घर में तथा षष्टेश शनि अष्टम भाव में है। यह योग राजनैतिक, साम्प्रदायिक एवं आर्थिक चिंताओं से राष्ट्र को ग्रस्त रखने वाला है। गुप्त शत्रु एवं घुसपैठियों से राष्ट्र को सावधान रहने की जरूरत है। वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रकृति प्रकोप एवं उग्र प्रदर्शन स्वाभाविक होंगे। कहीं सूखे से तो कहीं वर्षाभाव से एवं कहीं वर्षाधिक्यता के फलस्वरूप राष्ट्र संघर्षशील एवं दुखी रहेगा। सीमा विवाद, भाषा विवाद एवं प्रांतीय विवाद उग्र से उग्रतर होते रहेंगे तथा श्रमशीलों एवं पूंजीपतियों में संघर्ष बढ़ेगा। प्रत्येक प्रांत में थोड़े बहुत रूप में दंगे, प्रदर्शन एवं हिंसात्मक घटनायें घटित होंगी।

इस वर्ष में सुरक्षा पर विशेष व्यय होगा। तथा यह व्यय होना भी चाहिये क्योंकि शनि की विस्फोटक स्थिति पूर्व एवं पश्चिमोत्तर सीमा पर आक्रमण की संभावना प्रबल रूप से व्यक्त करती है। काश्मीर समस्या एक बार पुनः उग्ररूप धारण कर देश के सम्मुख आयेगी तथा चीन एवं पाकिस्तान के गुप्तचर सक्रिय होंगे एवं जगह जगह अराजकता की स्थिति बनेगी।

इस वर्ष का स्वामी भी मंगल है जो राहु से सम्पर्क स्थापित कर षष्ठस्थ है अतः प्रधान मंत्रते एवं मुख्य मंत्रियों को अनेक समस्याओं में उलझी रहना पड़ेगा। वर्ष के बीच में राज्यों में नाटकीय परिवर्तन होंगे।

परन्तु इसके साथ ही साथ गुरू चन्द्र की स्थिति साहस बंधाती है जो कि सुखेश होकर उपयुक्त स्थान पर स्थित है तथा वायेश चन्द्र केन्द्र में बैठ कर भारत को पराक्रम दिलाने में सक्षम है। इस वर्ष भारत पुनः षड़यंत्रकारियों एवं विपक्षियों के बीच में से सकुशल निकल कर अपनी सक्षमता एवं ओजस्विता सिद्ध करेगा।

कांग्रेस इस समय पूर्णतः शनि के प्रभाव में है और मेष राशि पर शनि जब जब भी आया है उसने विग्रह, फूट एवं विरोधी भावनाओं की वृद्धि की ही है। सन् १९१० से १९१२ में मेष के शनि ने प्रथम महायुद्ध का बीजारोपण किया था। इस वर्ष पुनः शनि मेष राशि पर गतिशील है अतः विश्व बारूद के ढेर पर बैठा रहे और कब चिनगारी सुलग जाय कुछ कहा नहीं जा सकता।

कांग्रेस इस वर्ष दो टुकड़ों में बंट जायगी जो कि वामपंथी और दक्षिणपंथी के नाम से प्रसिद्ध होगी। कांग्रेस विभक्तिकरण का बीजारोपण तो उसी दिन हो गया था जब शनि मेष राशि पर गतिशील हुआ था। कांग्रेस और उससे प्रभावित पदाधिकारी हर समय विस्फोटक स्थिति पर बने रहेंगे

और ये नेता शनैः शनैः साम्यवाद के प्रभाव से प्रभावित होते दिखाई देंगे।

स्वतंत्र भारत की नये वर्ष की कुण्डली भी हमें इसी तथ्य की ओर ले जाती है कि भारत इस वर्ष भी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कुचक्रों से ग्रस्त रहेगा। शत्रुकृत भय, उपद्रव एवं आंतरिक दंगों से राजनीतिक स्थिति धूमिल होगी, जनता में आतंक बढ़ेगा तथा मंहगाई एवं प्रकृति प्रकोप से जनता ग्रस्त रहेगी।

भारत सरकार

स्वतंत्र भारत की वर्ष कुण्डली का सूक्ष्म अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है, कि भारतीय राज्य सत्ता एवं स्वतंत्रता के लिये यह वर्ष कठिन परीक्षा का तथा चुनौती भरा है। कई नेताओं की राजनीतिक मृत्यु तो कई नेताओं के सिंहासन प्रबल झंझावात में हिल जायेंगे, तथा देश की डांवाडोल स्थिति से अधिकारी चिंतित रहेंगे। वर्ष के ग्रह योग भारत सरकार एवं उसकी केबिनेट के लिए अशुभ है, अतः केबिनेट में भयंकर विग्रह, उलटफेर एवं मतभेद बने रहेंगे। भारतीय विदेश नीति में धीरे-धीरे गहरा मोड़ आयेगा, तथा वह कई मित्र देशों को शत्रु और कई शत्रु देशों को मित्र बनायेगा। अन्य समस्या बदस्तूर कायम रहेगी, तथा दिनोदिन बढ़ती हुई मंहगाई से जनता त्रस्त रहेगी।

काश्मीर

काश्मीर पूर्णतः शनि के प्रभाव में है, और शनि नीचराशिस्थ होकर प्रबल विग्रह कारक बना है, अतः इस वर्ष काश्मीर की समस्या उग्रतर बनेगी। पाकिस्तान की घुसपेंठ एवं षड़यंत्र बढ़ेगा, तथा विदेशी शक्तियां इस प्रश्न को बार बार उछालने का प्रयत्न करेंगी। यूरोपीय देश पाकिस्तान को हर समय उकसाकर १९६५ की पुनरावृत्ति के लिए प्रेरित करेंगे, तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ में काश्मीर समस्या को अधिक से अधिक जटिल बनाने का प्रयास किया जायेगा।

वर्ष के उत्तरार्ध में काश्मीर मंत्रिमंडल में संकट के बादल घुमड़ने लगेंगे, तथा घुसपैठियों एवं पंचमागियों से प्रान्त चक्रित होगा। आर्थिक दृष्टि से काश्मीर दिनोदिन शोचनीय अवस्था की ओर बढ़ेगा, तथा प्रकोप, उत्पात एवं दुर्भिक्ष से जनता पीड़ित रहेगी।

पंजाब, हरियाना, हिमाचल प्रदेश

ये तीनों प्रांत राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर बने रहेंगे, तथा प्रान्तीय समस्याओं एवं राजधानी विवाद की समस्या उलझी रहेगी। पंजाब में साम्प्रदायिक वैमनस्य बढ़ेगा, तथा हिंसा एवं लूटपाट के आसार बढ़ेंगे। पंजाब की सीमा भी इस वर्ष सुरक्षित नहीं कहीं जा सकती। चंडीगढ़-भाखड़ा का विवाद पंजाब हरियाणा में मनोमालिन्य बढ़ायेगा, तथा पंजाब में स्थायी मंत्रिमंडल के आसार कम ही रहेंगे। वर्ष में २-३ बार मंत्रिमंडलों में परिवर्तन होगा, तथा राष्ट्रपति शासन होने की संभावना बढ़ेगी।

पंजाब में ऐसा कोई त्यागी एवं प्रभावशाली नेता दिखाई नहीं देगा, जिसका प्रभाव सभी वर्गों पर हो। सिक्खों एवं कांग्रेसियों में परस्पर विरोध बढ़ता रहेगा, तथा वर्ष के मध्य में उग्ररूप धारण करेगा। पंजाब तथा हरियाणा में लूटपात, अग्निकांड एवं कुनबापरस्ती एक स्वाभाविक बात होगी। मंत्रिमंडल आन्तरिक फूट से ग्रस्त रहेगा, तथा किसी भी समय आन्तरिक विग्रह से ढ़ह सकेगा। हिमाचल प्रदेश में भी मंत्रिमंडल में गत्यावरोध बना रहेगा, परन्तु प्रजा अपेक्षाकृत अधिक सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेगी।

राजस्थान

राजस्थान इस वर्ष भी पूर्णतः शनि के अधिकार क्षेत्र में रहेगा। पश्चिमोत्तर राजस्थान (जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर) अनावृष्टि, प्रकृतिप्रकोप एवं दुर्भिक्ष से ग्रस्त रहेगा। यद्यपि नये कारखाने एवं उद्योग धन्धे स्थापित होंगे, परन्तु फिर भी प्रजा में बैचैनी बनी रहेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में राजनीति में जबरदस्त मोड़ आयेगा, तथा मंत्रिमंडल में परिवर्तन होगा। भ्रष्टाचार एवं दलगत राजनीति में मंत्रिमंडल ग्रस्त रहेगा। पश्चिमोत्तरीय सीमा संकट ग्रस्त होगी, तथा किसी भी समय युद्ध के नगाड़े बज

सकते हैं। भूतपूर्व नरेश और जागीरदार एक सूत्र में संगठित होते होते भी बिखरे बिखरे से प्रतीत होंगे, तथा ये सभी कांग्रेस से घोर असन्तुष्ट होंगे। जनसंघ, स्वतंत्रपार्टी आदि एक हो जाने का प्रयत्न करेगी, पर यह गठबंधन आंशिक ही होगा। विपक्षी दल में प्रभावशाली नेता की कमी से समस्त विरोधी दल विच्छिन्न सा रहेगा।

राजस्थान कांग्रेस तथा मंत्रिमण्डल को भी घोर परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, तथा एक दो मंत्री ऊँचे स्तर को प्राप्त करने हेतु जी तोड़ प्रयत्न करेंगे। कांग्रेस में ही कुछ युवा तुर्क होंगे, जिससे हर समय मंत्रिमण्डल को खतरा बना रहेगा। प्रदेश की राजनीति एवं सामाजिक स्थिति अनिश्चित बनी रहेगी।

उत्तर प्रदेश

इस वर्ष उत्तर प्रदेश की स्थिति भी डांवाडोल दिखाई देती है। कांग्रेस की आपसी फूट से प्रदेश क्षीण पड़ेगा एवं आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में यह प्रदेश असफल रहेगा। कांग्रेस स्पष्टतः दो घड़ों में विभाजित रहेगी, तथा राजनीतिक अस्थिरता बराबर बनी रहेगी। मंत्रिमंडल की आपसी फूट की गूंज उग्र स्वर में सुनी जा सकेगी, तथा मंत्रिमण्डल लड़खड़ा जायेगा, तथा राष्ट्रपति शासन की संभावना बनी रहेगी। तथा खरे तपे हुए नेता के अभाव में उत्तर प्रदेशीय प्रजा दिशा शून्य सी दिखाई देगी। धार्मिक तथा औद्योगिक क्षेत्रों में तनातनी बनी रहेगी। एक प्रमुख नेता का अवसान स्पष्टतः दीख पड़ता है।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश की राजनीति भी अस्थिर ही कही जा सकती है, क्योंकि यह शनि के भरणी नक्षत्र में अन्त्य नाड़ी पर गतिशील रहेगा। मालवा क्षेत्र में दुर्भिक्ष रहेगा, तथा सरकार का एक से अधिक बार पतन होगा। मुख्यमंत्री को दलगत भ्रष्ट राजनीति से विक्षुब्ध होना पड़ेगा। वर्ष भर राजनीतिक अस्थिरता, एवं प्रकृति प्रकोप स्वभावतः दिखाई देते हैं।

महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र

गुजरात राजनीतिक दृष्टि से पूर्णतः असन्तोष का घर बना रहेगा, हर समय उस पर केन्द्र की तलवार लटकी रहेगी, तथा राजनीतिक अस्थिरता बनी रहेगी। आर्थिक दृष्टि से प्रजा त्रस्त रहेगी, एवं कांग्रेस स्पष्टतः दो खेमों में बंट जायेगी। विरोधी दल पुनः सशक्त बन कर उभरेगा, तथा सन् ७२ के चुनाव की पृष्ठभूमि के लिए महत्वपूर्ण कार्य करेगा। बम्बई आदि समुद्रतटीय नगरों में संघर्ष बना रहेगा। गुजरात में उद्योग धन्धे पनपेंगे परन्तु महात्मा गांधी की जन्मभूमि पर भी न तो पूर्णतः नशाबंदी होगी, और न हिंसा ही रुकेगी। वर्ष के अन्त में उपद्रव बढ़ेंगे। आन्ध्र का मंत्रिमंडल भी लड़खड़ाता ही दिखाई देगा।

बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा

इन पूर्वाञ्चलस्थ प्रदेशों को वर्ष भर चौकन्ना रहना है क्योंकि हत्या एवं उपद्रव वर्ष भर इन प्रदेशों में बने रहेंगे। न तो मंत्रिमंडल स्थायी बन सकेंगे, और न प्रजा को ही शांति मिलेगी। साम्यवाद का प्रभाव तेजी से बढ़ेगा, तथा तेजस्वी नेता के अभाव में ये प्रदेश किंकर्तव्य विमूढ़ और निराश से दिखाई देंगे।

सारांशतः यह वर्ष भारत एवं विश्व के अन्य राष्ट्रों के लिए प्रबल संकट पूर्ण है, तथा यह वर्ष तथा आगामी कुछ वर्ष विश्व के लिए चुनौती भरे एवं क्रांतिकारी सिद्ध होंगे।

राष्ट्रनायकों एवं भारत के प्रबुद्ध पाठकों एवं नागरिकों से मेरा निवेदन है कि वे समस्त प्रकारेण भेद भाव भुलाकर राष्ट्र को एक सूत्र में ग्रथित करने के लिये कटिबद्ध हो जायं, क्योंकि हम समस्त विश्व को साथ लेकर चलने वाले हैं, समस्त विश्व हम सबका है, इसे सुख शांति पूर्ण बनाना हम सबका परम कर्त्तव्य है।

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली

श्री मोहन लालजी सुखाड़िया

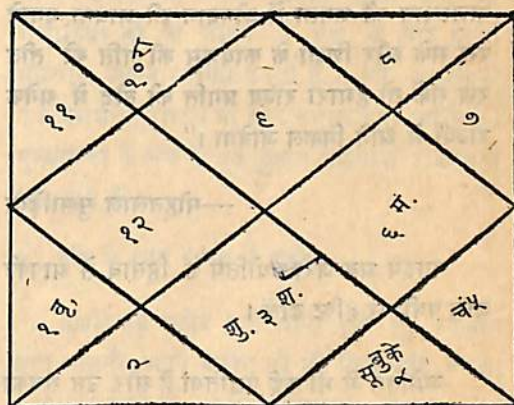
—देवधर पाण्डेय, महामन्त्री

ज्योतिष मार्तण्ड का यह सुखाड़िया अंक आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुये अपार हर्ष है कि हम अपनी योजना के अनुसार इसे ठीक समय पर दे पा रहे हैं। पाठकों से विनम्र निवेदन है कि इस अंक का अध्ययन करें और अपने विचारों से हमें अवगत अवश्य कराएं। नीचे हम राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहन लाल सुखाड़िया की जन्म कुण्डली देते हुये चक्र संकेत आपके मार्गदर्शन के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं।

—सम्पादक



श्री मोहन लाल सुखाड़िया



श्री मोहनलाल सुखाड़िया जी की जन्मकुण्डली

मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया का जन्म ३१ जुलाई, १९१६ की दोपहर के पश्चात् ५ बज कर २२ मिनट पर उदयपुर में हुआ। आपका बाल्यकाल झालावाड़ व नन्दवाना में व्यतीत हुआ। आप १९३९ में बम्बई से इलैक्ट्रिकल इंजीनियर का डिप्लोमा प्राप्त कर देश की सेवा में लग गये, आप एक अच्छे वक्ता व खिलाड़ी हैं। १९४६ में आप मेवाड़ राज्य में नागरिक रसद, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सहायता व पुनर्वास मन्त्री रहे। १९४८ में राजस्थान के प्रथम मंत्रीमण्डल में आप सामुदायिक विकास मंत्री रहे। प्रथम महानिर्वाचन, १९५२ में उदयपुर से विधानसभा के सदस्य चुने गये तथा १९५७, १९६२, १९६७ में भी आप उदयपुर से ही विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुये। २६-४-१९५१ से ३-३-१९५२ तक आप नागरिक रसद, कृषि व सिंचाई मंत्री रहे। ४-३-१९५२ से १२-११-१९५४ तक कृषि, राजस्व एवं अकाल सहायता मंत्री रहे। १३-११-१९५४ को

श्री सुखाड़िया राज्य के सबसे कम आयु के मुख्यमंत्री निर्वाचित हुये। श्री सुखाड़िया तब से आज तक मुख्य मंत्री पद पर विराजमान हैं। १९६१ में आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये। श्री सुखाड़िया जी छोटे से कांग्रेस कार्यकर्त्ता के स्तर से उठकर इस महान पद पर पहुंचे हैं। आपने स्वयं श्रीमती इन्दुबाला से तथा अपनी पुत्रियों के भी अन्तर्जातीय विवाह किये हैं। आपके दो पुत्र व तीन पुत्रियां हैं।

श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया ने राजस्थान के भविष्य के प्रति उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा—

"जब से राजस्थान के भविष्य का स्वप्न देखने लगता हूं तो मुझे विश्वास होता है कि यदि हम राजस्थान की जनता में योगदान की भावना बनाये रख सके और शिक्षा के कार्यक्रम की गति को तीव्र रख सकें तो हमारा राज्य प्रगति की दौड़ में अनेक राज्यों से आगे निकल जावेगा।"

—मोहनलाल सुखाड़िया

आइये अब जरा ज्योतिष के हिसाब से आपकी जन्म पत्री पर दृष्टि डालें।

ज्योतिष में भी कई पद्धतियां हैं और उन सबका फलाफल जानने की विधियाँ विभिन्न हैं, परन्तु इन सबका सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि भले ही पद्धतियां अलग-अलग हों, देखने और विचारने के ढंग अलग-अलग हों परन्तु सभी पद्धतियों के निर्णय एक ही निकलते हैं, जहां निर्णय में अन्तर है, वहां स्वयं निर्णायक की अज्ञानता है, पद्धति का दोष नहीं। हम जिस पद्धति से श्री मोहनलाल सुखाड़िया की कुण्डली का अध्ययन कर रहे हैं, वह अन्य विद्वान लेखकों के लेखों में नही आई है। इस कारण आइये हम यहां केवल इस पद्धति से कुछ योगों का ही अध्ययन करें।

१. चन्द्र के व्यय में रवि—

सिंह का चन्द्र और कर्क का रवि एक शुभदायक योग है, इसमें मनुष्य की कीर्ति फैलती है, धन प्राप्ति पर्याप्त हो परन्तु हाथ में धन नहीं रहता है, दान धर्म बहुत होता है, जनता में प्रभाव बना रहता है, अल्प विद्या, सुशिक्षित—चुनाव में यशस्वी नेता होने के शुभ लक्षण प्राप्त होते हैं। श्री सुखाड़िया जी अपने हर चुनाव में जीते तथा आप में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो एक शक्तिशाली व सम्पन्न पार्टी के नेता में होने आवश्यक हैं। श्री सुखाड़िया जी के बारे में यह कहना सत्य है कि—

His services to the country are known throughout the length and breadth of the country.

२. रवि के तीसरे मंगल—

रवि कर्क का हो और मंगल कन्या का १०वें घर में हो तो यह भी अत्यन्त शुभ योग है। इसमें स्वतंत्र व्यवसाय करने की प्रवृति तथा उसी में उनका उदय सम्भव होता है तथा तीस वर्ष की उम्र में कीर्ति व धन प्राप्ति सम्भव होती है, व्यवहार में उदार रहते हैं, धन की परवाह नहीं करते, कठोरता से पेश आते हैं, पर हृदय से बड़े दयालु होते हैं। हाथ में जो नौकर रहते हैं, उनको अनुशासन में रखने वाले होते हैं, खूब प्रभावशाली होते हैं। सुस्ती पास नही फटकती, महान आत्म विश्वास रखते हैं, अपनी पत्नि व परिवार से अत्यन्त प्रेम रखने वाले होते हैं, बड़ा मित्र परिवार रखते हैं, यह योग केवल धनु लग्न के लिये, अष्टम से दशम् अत्यन्त शुभ है। इस योग के कारण श्री सुखाड़िया जी में यह गुण है कि समस्या कितनी ही गम्भीर क्यों न हो उसका हल करने में अपनी शांति को न खोना एवं अपना सन्तुलन कायम रखना उनका स्वभाव विशेष है। इसी कारण राजस्थान को एक स्थाई शासन मिला और कठिन से कठिन परि-

स्थितियों का साहस के साथ मुकाबला कर, उन्होंने उस पर विजय पाई।

His long record of service is an open testimony to his patriotic fervour and reformative zeal. Under his dynamic leadership the people of Rajasthan have indeed made a significant contribution towards national progress.

३. सूर्य बुद्ध युति—

केवल धनु लग्न के लिये यह युति अगर लग्न चौथे या आठवें स्थान पर हो तो अत्यन्त शुभ होती है, धन उत्तम प्राप्त होता है। कीर्ति प्राप्त होती है, बड़े बड़े मित्र होते हैं, मान-सम्मान प्राप्त होता है, बड़ी-बड़ी संस्थाओं का संस्थापन सम्भव बन जाता है, लोगों का सम्पूर्ण ध्यान, जहां कही भी हो, अपनी ओर आकर्षित करा लेते हैं. हर विषय के अधिकारी वे स्वयं होते हैं, वेदान्त की ओर मन जाता है, शिक्षा कम होते हुये भी अति शिक्षित और ज्ञानी होते हैं, श्री सुखाड़िया जी ने राजस्थान के निर्माण और योजनावद्ध विकास व चतुर्मुखी प्रगति के लिये जो अनेक प्रयत्न किये हैं, वे भारत के नव निर्माण के इतिहास का उल्लेखनीय परिच्छेद बन गये हैं।

He has given ample evidence of political sagacity and administrative ability. Rajasthan has grown from strength to strength under the wise guidance of Shri Sukhadiaji. Sukhadiaji has been a social worker and a statesman.

श्री सुखाड़ियाजी ने राजस्थान के औद्योगिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में जो कार्य किये हैं, वह भुलाये नहीं जा सकते। पंचायत राज्य के माध्यम से राज्य की सर्वतोन्मुखी उन्नति का प्रयास, स्थायी शासन, राज्य समृद्धि, आर्थिक शैक्षणिक प्रगति में उनका योगदान, इनके नेतृत्व में राजस्थान में औद्योगिक व कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति।

४. रवि के दशम गुरु—

अपने जन्म से पिता का भाग्योदय होने लग जाता है, पिता को आर्थिक, मानसिक. शारीरिक, सुख प्राप्त होता है, परन्तु पिता के सुख के साथ-साथ स्वंय को क्लेश हो जाते हैं अथवा पिता से पूर्व अपनी मृत्यु सम्भव हो जाती है या पिता की मृत्यु बचपन में ही हो जाती है। दोनों में से एक ही बचता है। पिता की मृत्यु के बाद आगे चलकर विशाल व्यवसाय में प्रसिद्धि प्राप्त होती है। वरिष्ठ अधिकारियों से काम लेते हैं। ३८ वर्ष की आयु में भाग्योदय होता है तथा गरीब घराने में जन्म हो तो भी उत्तरायुष्य उत्तम व्यतीत होती है। श्री सुखाड़िया जी के जीवन में एक के बाद दूसरी सफलता उनका स्वागत करती है। श्री सुखाड़िया एक देशभक्त, राष्ट्रप्रेमी और समाज सेवी व्यक्ति हैं। मुख्यमन्त्री के रूप में एक कुशल प्रशासक राजस्थान सिद्ध हुये हैं।

५. रवि के व्यय स्थान में शनि—

इसमें बड़े कठोर फल प्राप्त होते हैं, स्वभाव बड़ा साहसी, अपने शरीर की भी फिक्र नहीं करते, संस्थापक बनते हैं, महान देशभक्त, महान नेता, व्यवहार तथा रहन-सहन में सादगी, कुशल प्रशासन, अति लोकप्रिय होते हैं।

श्री सुखाड़िया जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में जो महत्वपूर्ण योग दिया है। स्वतन्त्रता के पश्चात् देश के नव-निर्माण में भी विभिन्न रूप से योगदान दिया है।

६. शुक्र से लाभ स्थान में सूर्य—

पत्नि पति पर अधिकार रखने वाली, प्रेम से वश में रखने वाली, शांत, धीर, गम्भीर, संसारदक्ष, अतिथि सत्कार करने वाली, आपत्ति-विपत्ति से

सामना लेने वाली, पति के हित-कल्याण में दक्ष, पति से तकरार न करने वाली, उद्यमशील, परिवार के सब लोगों को प्रेम से रखने वाली, सबका कल्याण चाहने वाली, धैर्यशील, सुशिक्षित, बाल-बच्चों से प्रेम करने वाली पर थोड़ी अधिक खर्चीली होती है। अच्छी सलाहकार, स्वतन्त्र व्यवसाय में नाम, पैसा तथा सम्पत्ति प्राप्त होती है।

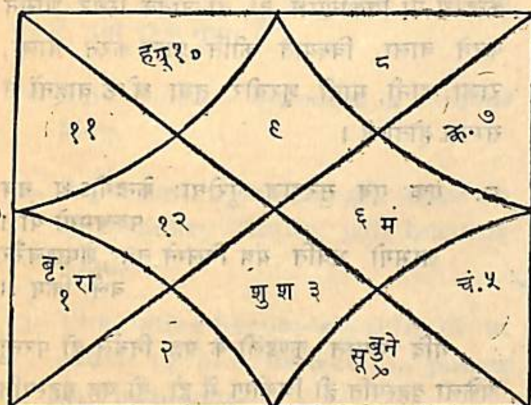
समस्त जीवन राष्ट्र के विशेष रूप से राजस्थान की दो करोड़ जनता के हित में बिताने वाले श्री सुखाड़िया जी ने राजस्थान का विकास जिस स्थिति पर पहुंचाया है, उसके समस्त श्रेय के अधिकारी हैं। भारत में सबसे पहले लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का शंखनाद फूँकने वाले श्री सुखाड़िया के नेतृत्व ने शासन की स्थिरता, औद्योगीकरण की बहुलता व नवीन नवीन योजनाओं का श्रीगणेश किया है, यह सब समय पाकर राजस्थान को एक समृद्धिशाली व हरा भरा प्रदेश बनाने में सहायक होगा।

It is but right people should remember every event of their leader's political and social career. I wish a long life, continued service to the country and prosperity and I also wish the enterprise success.

एक ज्योतिष शास्त्रीय अध्ययन

श्री मोहन लाल सुखाड़िया

—डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
एम. ए., पी. एच. डी.



(श्री मोहन लाल सुखाड़िया)
।। लग्न कुण्डली ।।

३१ जुलाई १९१६ को दोपहर पश्चात् ५ बज कर २२ मिनट पर उदयपुर में जन्म हुआ, जिसका अक्षांश २४/३५ और रेखांश ७३/४२ है, इस समय आकाश मण्डल में पूर्व क्षितिज पर धनु लग्न चल रहा था ।

संबंधित जन्म कुण्डली में सूर्य बुध का संबंध प्रबल राज्य योग सिद्ध कर रहा है, इसके साथ ही साथ कुछ अन्य योग भी श्रेष्ठ रूप में विद्यमान हैं, जो निम्न लिखित हैं—

१. **भौम सुनफा योग**

"विक्रम वित्त प्रायो निष्ठुरवचनश्च भूपतिश्चन्द्रे"

भौम के द्वारा सुनफा योग रखने वाला व्यक्ति प्रबल, धनवान, राज्य करने वाला एवं पराक्रमी होता है ।

२. **बुध अनफा योग**

"गन्धर्वो लेख्यपटुः कविः प्रवक्ता नृपाप्त सत्कारः ।
रुचिरः सुभगोऽपि बुधे प्रसिद्ध कर्माऽ नफायांहि ।।

बुध के द्वारा अनफा योग से सम्पन्न व्यक्ति चतुर, ललित कलाओं में रुचि रखने वाला, प्रसिद्ध वक्ता, राजा. सुन्दर आकृति युक्त, प्रबल भाग्यवान, और अपने कार्य में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला जातक होता है ।

३. **वापी योग**

दीर्घायुः स्यादात्मवंश प्रधानः
सौख्योपेतोऽत्यन्त धीरो नरो हि ।
चञ्चद्वाक्यस्तन्मनाः पुण्य वापी
वापी योगे यः प्रसूतः प्रतापी ।।

वापी योग में उत्पन्न जातक दीर्घायु, अपने वंश में प्रधान, सुखी, अत्यन्त विवेकी, प्रसन्नतायुक्त वचन बोलने वाला, प्रसन्नचित्त वाला, पुण्य करने वाला तथा बड़ा प्रतापी होता है ।

४. अर्द्ध चन्द्र योग

भूमीपाल प्राप्त चञ्चत्प्रतिष्ठः
श्रेष्ठः सेना भूषणार्थाम्बराद्यैः ।
चेदुत्पत्तौ यस्य योगोऽर्द्ध चन्द्र
श्चन्द्रः स स्यादुत्सवार्थ जनानाम् ।।

अर्द्धचन्द्र योग में उत्पन्न जातक राज्य करने में समर्थ, मनुष्यों में श्रेष्ठ, भोग विलास मय जीवन व्यतीत करने वाला एवं अत्यन्त प्रसिद्ध होता है ।

५. दामिनी योग

जातानन्दो नन्दनाद्यैः सुधीरो
विद्वान भूपः कोप सञ्जात तोषः
चञ्चच्छीलोदार्य बुद्धिः प्रशस्तः
शस्तः सूतौ दामिनी यस्य योगः ।।

जिस जातक की कुण्डली में दामिनी योग होता है, वह पुत्र एवं ऐश्वर्य से आनन्द प्राप्त करने वाला, गंभीर, विद्वान, राजा, उत्तम स्वभाव तथा बुद्धि से युक्त एवं ख्यातिवान होता है ।

उपर्युक्त मुख्य योगों के अतिरिक्त जन्म कुण्डली में कई ग्रहों ने राज्य योग बनाये है, जो शास्त्र समम्मत एवं प्रमाणिक हैं, उनमें से कुछ राजयोग मैं नीचे स्पष्ट कर रहा हूं—

६. प्रबल राज्य योग

लग्ने लग्नपतिर्बलान्वित वपुः केन्द्रे त्रिकोणे शिवे
पृच्छा जन्म विवाह यान तिलके कुर्यान्नृपं तं ध्रुवम् ।
सच्छीलं विभवान्वितं गजयुतं मुक्तात पत्रान्वितं
जातं निम्नकुले विभूतिपुरुषं शंसन्ति गर्गादयः ।।

अर्थात् जिसकी कुण्डली में लग्नेश लग्न या केन्द्र या त्रिकोण में हो, तो जातक निश्चय ही राज्य भोग करता है । ऐसा व्यक्ति उत्तम स्वभाव वाला, ऐश्वर्य सम्पन्न, विविध वाहनों से युक्त होता है, साधारण कुल में जन्म लेने वाला भी ऐसा व्यक्ति प्रबल ऐश्वर्यमान और राजा होता है ।

उपर्युक्त कुण्डली में वृहस्पति लग्नेश होकर त्रिकोणस्थ है, और साथ ही पूर्ण दृष्टि से लग्न को देख भी रहा है ।

७. एकः शुक्रो जनन समये लाभसंस्थे च केन्द्रे ।
जातो वै जन्मराशौ यदि सहजगते प्राप्यते वा त्रिकोणे ।
विद्या विज्ञान युक्तो भवति नरपतिर्विश्व विख्यात कीर्ति
दानी मानी च शूरो हयगुण सहितः सद्गजैः सेव्यमानः ।

अर्थात् पूरी कुण्डली में यदि अकेला शुक्र ही केन्द्रस्थ या त्रिकोणस्थ हो, तो जातक स्थिर शासन करने वाला, विख्यात कीर्ति प्राप्त करने वाला, राजा, दानी, मानी, शूरवीर तथा श्रेष्ठ वाहनों से सम्पन्न होता है ।

८. एक एव सुरराज पुरोधाः केन्द्रगोऽथ नव पञ्चमगो वा ।
लाभगो भवति यंत्र विलग्ने तत्र शेषखचरैर बलैः किम् ।।

यदि समस्त कुण्डली के ग्रह निर्बल हों परन्तु अकेला वृहस्पति ही त्रिकोण में हो, तो वह बृहस्पति अवश्य ही राज्ययोग करता है ।

९. भवति मदन मूर्तिर्वल्लभः कामिनीनां
सकल जन समर्थो दीर्घ जन्माविधेयः ।
गज विषय गुणज्ञो द्रव्यमुख्यः प्रधानः
सधन कनक पूर्णो दैत्यपो यस्य केन्द्रे ।।

अर्थात् शुक्र केन्द्र में हो तो प्रवल राज्ययोग सिद्ध होता है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति कामदेव के समान कान्तिवाला, स्त्रियों को प्रिय, सभी मनुष्यों में समर्थ, दीर्घायु, वाहन-विशेषज्ञ, धनी, समस्त जनों में प्रधान, और धन सुवर्ण से परिपूर्ण होता है ।

१०. लाभे त्रिकोणे यदि शीत रश्मिः
करोत्यवश्यं क्षितिपाल तुल्यम् ।
कुलद्वयानन्दकरं नरेन्द्रं
ज्योत्स्नेव दीपस्य तमोऽप हन्त्री ।।

अर्थात् नवम् भावगत चन्द्रमा व्यक्ति को पृथ्वी पति बनाता है, जैसे दीपक की ज्योति से अन्धकार नष्ट होता है, उसी तरह उस जातक के जन्म लेने से मातृ पितृ कुल में उजियाला होता है ।

११. लग्नाधिपो वा जीवो वा शुक्रो वा यत्र केन्द्रगः ।
तस्व पुंसश्च दीर्घायुः स भवेद्राज वल्लभः ।।

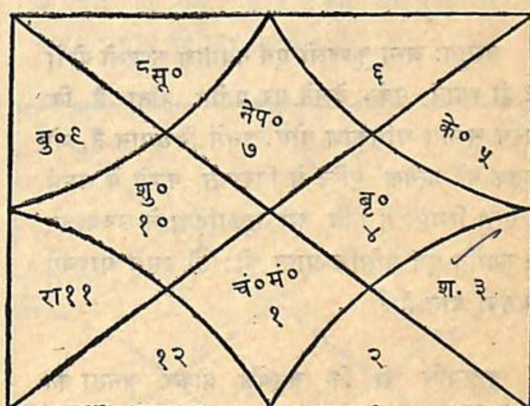
अर्थात् केन्द्रगत शुक्र व्यक्ति को दीर्घायु एवं प्रतापी राजा बनाने में समर्थ होता है ।

संस्कृत ग्रन्थों के अतिरिक्त अंग्रेजी ग्रन्थों के अनुसार भी चंद्र, गुरु और शुक्र प्रबल राज्य योग ग्रह हैं, तथा इनके संबध में :

1. The person becomes a famous king.
2. A person, even though born in an ordinary family, will become a ruler.
3. The native becomes a ruler or an equal to him, in wealth, power and influence.
4. The native becomes a great and respected ruler.
5. The native will possess an attractive appearance and he will be endowed with all the good qualities of high personages.
6. Many relations, polite and generous, builder of villages and towns; will have a lasting reputation even long after death.
7. Self earned property, king, ruler or his equal, intelligent, wealthy and good reputation.
8. Well formed organs, majestic appearance, good reputation, polite, generous, self-respect, fond of dress and sense pleasures.
9. The person will not be a dependent but will always command plenty of wealth.
10. The preson will become wealthy, prosperous, liberal, charitable, humorous and a king.
11. The person will have a well developed physique, will be strong minded, wealthy, happy with children and wife, will command vehicles, endowed with clean sense organs and renowned and learned.

उपर्युक्त भारतीय तथा पाश्चात्य मतों का विश्लेषण करने से प्रतीत होता है कि श्री सुखाड़िया जी की जन्म कुण्डली में उत्तम कोटि के योग बने हैं, जो प्रमुख राजयोगों में से हैं ।

जन्मकुण्डली के साथ साथ यदि हम नवमांश कुण्डली की ओर देखते हैं, तो यह भी प्रबल राज्य योग सम्पन्न कुण्डली सिद्ध होती है ।



।। नवमांश कुण्डली ।।

चन्द्र मंगल का केन्द्र में होना अपने आप में पूर्ण लक्ष्मी योग है, जिसके बारे में आर्य

ऋषियों ने "अतुल धन प्रदाता योग" कहा है, उसके साथ ही मंगल की धन स्थान पर पूर्ण दृष्टि तथा आयेश पर दृष्टि धन की पूर्णता स्पष्ट करती ही है, साथ ही राज्येश के साथ में होने से राज्य द्वारा पूर्ण धन प्राप्ति का योग स्पष्ट करता है।

पीछे जन्म कुण्डली में वृहस्पति को प्रबल राज्य योग निर्माता स्पष्ट कर चुके हैं, जो अपनी महादशा में जातक को सर्वोत्कृष्ट पद दिलाने में समर्थ है, वही बृहस्पति नवमांश में भी उच्च का होकर तथा केन्द्रस्थ होकर पंचमहापुरुष योग में से एक 'हंस योग' का निर्माता होता है, जिसके बारे में 'रमन' ने **He will possess a handsome body; he will be liked by others; he will be righteous in disposition and pure in mind"** कहा है तो भारतीय ऋषियों ने उन्नत मस्तिष्क भव्य व्यक्तित्व, सुखी, शास्त्र-नीति कलादि में निपुण तथा दीर्घायु सम्पन्न व्यक्ति माना है—

रक्तास्योन्नत नासिकः सुचरणो हंस स्वरः श्लेष्मको
गौराङ्ग सुकुमार दार सहितः कन्दर्पतुल्यः सुखी।
शास्त्रज्ञान परायणोऽति निपुणः श्री हंसयोगे गुणी
जातोऽशीतिकमायुरेति सयुगं साधुक्रिया चारवान्॥

वस्तुतः जन्म कुण्डली एवं नवमांश कुण्डली दोनों को ही ध्यान पूर्वक देखने पर प्रतीत होता है, कि शास्त्र सम्मत अधिकांश योग इनमें विद्यमान हैं, जो जातक को प्रत्येक दृष्टि से विख्यात करने में समर्थ हैं, ऐसी स्थिति में यदि श्री सुखाड़िया ने उच्चस्तर की ख्याति एवं प्रसिद्धि प्राप्त की; तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है?

वृहस्पति जो कि चतुर्थेश होकर जनता का प्रतिनिधित्व कर रहा है ११° ४८ अंशों पर होकर १६२° २४ अंश प्राप्त भौम से पूर्ण दृष्टि पा रहा है, फलस्वरूप जनता पर श्री सुखाड़िया जी का अद्भुत प्रभाव बना, रहा, और रहेगा।

विंशोत्तरी दशा पद्धति के अनुसार जन्म समय केतु की महादशा चल रही थी, जिसकी सप्त वर्षीय पूर्ण दशा में से मात्र पांच मास बीस दिन भुक्त दशा थी, और छः वर्ष छः मास दस दिन की भोग्य दशा थी, जो कि जन्म तारीख ३१–७–१६१६ से १० फरवरी १६२३ तक चली। तत्पश्चात २० वर्ष की शुक्र की दशा प्रारंभ हुई, जो १० फरवरी १६४३ तक चली। वस्तुतः देखा जाय, तो श्री सुखाड़िया जी का राजनीतिक जीवन इस शुक्र की दशा में ही प्रारंभ हो गया था, क्योंकि शुक्र जहां संघर्षों का हेतु बना, वहां पराक्रमेश शनि के साथ होने से संघर्ष को सहन करने की क्षमता भी प्रदान की। शुक्र ने जहां डगमगाते पांवों को स्थिरता दी, तो शनि ने बल प्रदान किया। वस्तुतः शुक्र शनि का संयोग अद्‌भुत क्षमताएं अपने आप में छिपाये हुए है।

इसके पश्चात् प्रारंभ होती है सूर्य की महादशा, जो १० फरवरी १६४३ से १० फरवरी १६४६ तक चलती है। यह समय पूर्णतः संघर्ष का समय है, क्योंकि जन्मकुण्डली में अष्टमेश-भाग्येश का परस्पर स्थान परिवर्तन योग बना है, एक तरफ यह सूर्य भाग्य को सही दिशा की ओर प्रेरित करता रहा, वहां अष्टमस्थ होने के फलस्वरूप मरणान्तक कष्ट भी प्रदान करता रहा। भयकर संघर्षों के बीच श्री सुखाड़िया जी का जीवन तपाता रहा। ब्रिटिश शासन की क्रूर निगाहें, पारस्परिक वैमनस्य, विपरीत परिस्थितियां और संघर्ष प्रधान इन वर्षों में भी श्री सुखाड़िया जी के व्यक्तित्व को सबल बनाये रक्खा तो इसका सम्पूर्ण श्रेय राहु और शनि को दिया जाना चाहिए, जिनकी पूर्ण दृष्टि सूर्य भाव पर है, परन्तु राहु के साथ ही साथ गुरु की भी दृष्टि भाग्य भाव पर है, अतः दशा का अन्त सुखद रहा, भारत स्वतंत्र हुआ, और उसकी स्वतंत्रता प्राप्ति में श्री सुखाड़िया जी का योगदान मुक्तकंठ से सराहा गया।

१० फरवरी १६४६ से १० फरवरी १६५६ तक श्री सुखाड़िया जी के जीवन पर चन्द्रमा का आधिपत्य

रहा । यों चन्द्रमा पाप मध्यत्व में पड़कर क्रूर हो गया है, परन्तु सूर्य के निकट होने के कारण अस्त-प्रायः भी हो गया है, जो कि अष्टमेश होने के फल-स्वरूप शुभ रहा, परन्तु साथ ही साथ गुरु की एक पक्षीय दृष्टि पाकर शुभग्रह भी बना, अतः स्पष्ट है कि यह समय श्री सुखाड़िया जी के जीवन का संघर्ष प्रधान ससय कहा जा सकता है, जिसमें निरंतर उत्थानपतन, उतार चढ़ाव आते गये । इन्हीं वर्षों में श्री सुखाड़िया जी राजनीति विशारद और नीति पटु बने, कड़वे-मीठे अनुभव प्राप्त किये, और अपने आप को डगमगाती राजस्थान-नौका के कर्णधार बनने की ओर अग्रसर किया । यदि सही अर्थो में कहा जाय, तो चन्द्रमा का समय श्री सुखाड़िया जी के जीवन का महत्वपूर्ण समय रहा ।

चन्द्रमा के बाद का समय सुखाड़िया जी के उत्कर्ष का समय है, क्योंकि १०–२–५६ से १०–२–६६ तक मंगल का ही आधिपत्य रहा, वस्तुतः इस कुण्डली में मंगल सर्वाधिक बलशाली एवं राजयोग कारक है । नारायण पद्धति से हम विवेचन करें, कि कौनसा ग्रह सर्वाधिक बली है—लग्न गत ग्रह प्रभाव इस कार्य हेतु हमारे लिए सहायक होगा—

१. **लग्न पर** —गुरु शुक्र, शनि, मंगल और (राहु मंगल की राशि पर बैठ पूर्ण दृष्टि से मंगल का प्रभाव) अतः मंगल ।

२. **लग्नेश पर**—मंगल (स्थिति द्वारा) मंगल (दृष्टि द्वारा)

३ **चन्द्र पर**—मंगल (प्रभाव युत) शनि, गुरु, (राहु मंगल की राशि में तथा पूर्ण दृष्टि) अतः मंगल

४. **चन्द्र लग्नेश पर**—गुरु, मंगल (राहु द्वारा)

५. **सूर्य पर**—गुरु, मंगल (राहु द्वारा)

६. **सूर्य लग्नेश पर**–मंगल (राहु द्वारा) गुरु, शनि, मंगल (प्रभाव युत)

७. **नवमांशलग्न पर**–मंगल, चन्द्र, गुरु, शनि (राहु द्वारा)

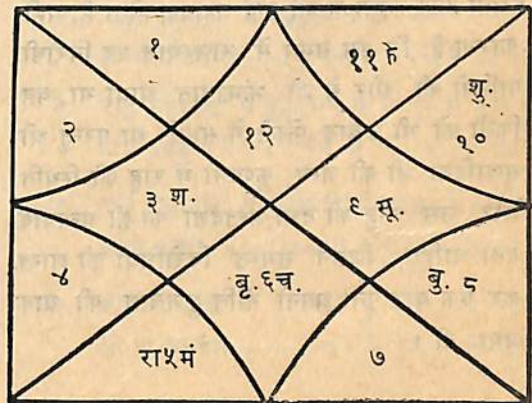
उपर्युक्त प्रभावों की गणना की जाय तो फल निम्न रूपेण होगा—

सूर्य के प्रभाव ०, चंद्र के १, मंगल के ११, बुध के ०, गुरु के ५, शुक्र के २, शनि के ४ ।

स्पष्टतः सर्वाधिक प्रभाव मंगल का है, मंगल स्वयं द्वादश-पंचम भावों का अधिपति होकर केन्द्र में बैठने से अत्यन्त प्रभावी और प्रबल बन गया है, जो लग्न पर पूर्ण दृष्टि डालने में समर्थ है ।

मंगल से कम, परन्तु अन्य ग्रहों से अधिक बली गुरु है, जो मंगल की राशि में विद्यमान है, तथा उस पर भी मंगल की पूर्ण दृष्टि है, इसके अतिरिक्त गुरु पर अन्य किसी भी ग्रह का प्रभाव नहीं, अतः गुरु-पंचम भाव से मंत्रणा कार्य में दक्ष एवं भौम राज्य योग कारक होने से मुख्यमंत्रित्व प्राप्त होना कोई बड़ी बात नहीं ।

वस्तुतः विंशोत्तरी पद्धति से मंगल की महादशा राज्य दिलाने में तथा सफलता पूर्वक राज्य चलाने में सहयोगी है । इस मंगल के समय में ही दो-दो चुनाव हुए, और इन चुनावों में मंगल पूर्ण विजय दिलाता रहा, एक प्रकार से श्री सुखाड़िया जी के द्वारा कांग्रेस को बल मिला ।

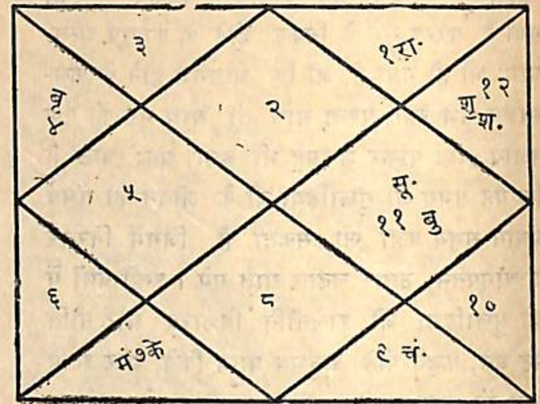


।। कांग्रेस जन्म कुण्डली ।।

श्री सुखाड़ियाजी और कांग्रेस की जन्म कुण्डलियों में अद्भुत समानता है, दोनों ही कुण्डलियों के लग्नेश बृहस्पति है, दोनों की जन्म कुण्डलियों के लग्न भाव पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है। लग्न पर दोनों ही कुण्डलियों में मंगल का पूर्ण प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है, साथ ही दोनों कुण्डलियों में शनि पूर्ण दृष्टि से तनुभाव पर दृष्टि रखता है। यदि दोनों कुण्डलियों का विश्लेषण करें, तो "अन्योन्याश्रय" योग बनता है, अर्थात् जहां श्री सुखाड़िया को कांग्रेस से लाभ रहा, वहां कांग्रेस को भी श्री सुखाड़िया से बल मिला, और इसका श्रेय गुरु और इससे भी बढ़कर मंगल को दिया जाना चाहिए।

१० फरवरी १९६६ से राहु की महादशा प्रारंभ होती है, जिसमें प्रथम अन्तर राहु का ही २ साल ८ महिना १२ दिन का रहा, इस प्रकार यह अन्तर २२-१०-६८ तक रहा। इस पूरे समय में राहु ही प्रधान रहा। जन्म कुण्डली में राहु की स्थिति विचित्र है, एक तरफ वह बृहस्पति (सौम्यग्रह) के साथ (स्वयं पाप ग्रह) बैठकर संघर्ष उत्पन्न करता है, वहीं दूसरी ओर मंगल (मित्र ग्रह) की राशि में बैठ तथा उससे दृष्ट होकर प्रबल व्यक्तित्व बनाने में भी सहायक होता है, इसके साथ ही साथ राहु लग्न पर दृष्टि रखता है, अतः आत्म बल, साहस, दक्षता और दृढ़ता में भी पूर्ण सहायक होता है, यही कारण है, कि इस समय में राजस्थान पर विरोधी पार्टियों की ओर से जो झंझावात आया था, वह किसी को भी उखाड़ फेंकने में समर्थ था परन्तु श्री सुखाड़िया जी की जन्म कुण्डली में राहु की स्थिति और उस राहु की दशा-अन्तर्दशा को ही धन्यवाद देना चाहिए, जिसने समस्त विरोधियों को शान्त कर एक बार पुनः अपनी नीति कुशलता की धाक जमा दी।

२२-१०-६८ से राहु महादशा में बृहस्पति का अन्तर चल रहा है। जन्म कुण्डली में राहु-गुरु



॥ राजस्थान जन्मकुण्डली ॥

का संबंध है, राहु मंगल की राशि में बैठकर तथा उससे दृष्ट होकर जहां मंगल का प्रभाव कर रहा है, तथा राज्य योग बना रहा है, वहां बृहस्पति का अन्तर उन्नति की ओर अग्रसर कर रहा है। यद्यपि पापग्रह की महादशा में सौम्यान्तर उचित एवं शुभ नहीं कहा गया है, परन्तु दोनों का संबंध होने से यह स्पष्ट होता है, कि इस समय में देश में महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन होंगे, केन्द्रीय शासन में भूकंप आयेगा, तथा एक उच्चस्तरीय नेता के देहावसान से काफी व्याघात बनेंगे। केन्द्रीय मंत्रि-मण्डल में हेर फेर होगा, तथा एक दो चोटी के नेता धराशायी होंगे। देश की प्रधान मंत्री इन दिनों काफी दृढ़ता दिखायेगी, और देश को सबल तथा दृढ़ बनाये रखने में श्री मोहन लाल सुखाड़िया का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

यह बृहस्पति का अन्तर १६ मार्च १९७१ तक चलेगा। श्री सुखाड़िया जी के जीवन में काफी संघर्ष आयेंगे, एक तरह से यह पूरा समय संघर्ष प्रधान ही रहेगा, परन्तु फिर भी व्यक्तित्व में कहीं न्यूनता नहीं रहेगी। नित नये शत्रु बनेंगे, कुछ **ऐसे व्यक्ति जो अन्तरंग एवं मित्र होंगे, धोखा दे देने से पश्चात्ताप एवं परेशानी बढेगी! राजस्थान की**

राजनीति में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा, एक श्रेष्ठ कोटि का नेता स्वयं के गलत प्रयत्नों से धराशायी होगा, उससे कांग्रेस को गहरा धक्का पहुंचेगा। प्रान्त दुर्भिक्ष से इसी प्रकार जूझता रहेगा, परन्तु फिर भी प्रदेश उन्नति की ओर गतिशील रहेगा।

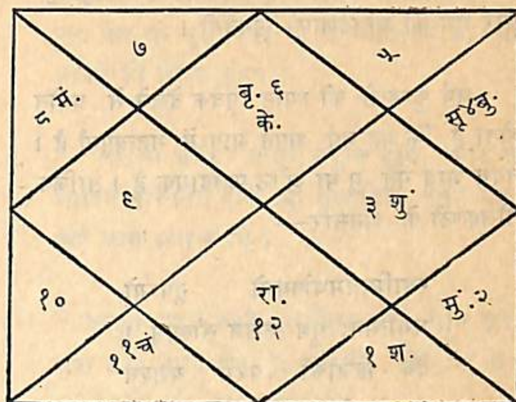
१६-३-१९७१ से २२-१-१९७४ तक का समय राहु महादशा में शनि के अन्तर का है। जन्मकुण्डली में शनि पराक्रमेश होकर केन्द्र में है, साथ ही उसकी दृष्टि लग्न पर तथा भाग्य भाव पर है, इसके साथ ही राहु से उसका स्थान तीसरा है अतः वह भी पराक्रम को ही बढ़ाने वाला है।

इन्हीं दिनों पूरा देश चुनावों में व्यस्त रहेगा, और ये चुनाव कांग्रेस के लिए पूर्णतः चुनौती भरे होंगे, परन्तु जहां तक राजस्थान और श्री सुखाड़िया का प्रश्न है, इस चुनाव में कांग्रेस को अपूर्व सफलता मिलेगी, तथा श्री सुखाड़िया विजयी होकर एक बार पुनः प्रान्त के कर्णधार बनेंगे।

शनि अपने आप में प्रबल योगकारक है, द्रविड़ मुन्नेत्र कड़घम के नेता श्री अन्नादुराई के केन्द्रस्थ शनि ने अपनी दशा में उन्हें तमिलनाडु का मुख्यमंत्री बना दिया, रिचार्ड निक्सन के केन्द्रस्थ शनि ने उन्हें अपनी दशा में अमेरिका का सर्वोच्च पद दिला दिया, तो श्री सुखाड़िया को केन्द्रस्थ शनि अपनी अन्तर्दशा में राजस्थान का मुख्यमंत्री बना रहने दे, एवं प्रबल भाग्योदय कारक बने, तो इसमें आश्चर्य क्या ?

परन्तु इस शनि की दशा में श्री सुखाड़िया को केन्द्र का निमंत्रण भी मिलेगा, परन्तु फिर भी राजस्थान की राजनीति से उनका घनिष्ठ संबंध दृष्टिगोचर होता है। इसी समय में विदेश यात्रा योग भी बनता है, जो काफी समय का है।

वस्तुतः यह समय भयंकर उथल-पुथल, परिवर्तन, संघर्ष, परेशानी, सफलता एवं श्रेष्ठता का है।



।। श्री सुखाड़िया जी के ५४ वें वर्ष की कुण्डली ।।

यह वर्ष

३१ जुलाई सन् १९६९ श्री सुखाड़िया जी का जन्मदिन है, जिस दिन वे चौपनवें वर्ष में प्रवेश करेंगे। इस समय विंशोतरी पद्धति के अनुसार राहु महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है, और इस वर्ष के अन्त तक यही दशा चलती रहेगी। इस वर्ष की प्रत्यन्तर दशा क्रम निम्नरूपेण रहेगा—

१. राहु महादशा में बृहस्पति के अन्तर में बुध की प्रत्यन्तर्दशा—४ जुलाई ६९ से ६ नवम्बर ६९ तक।

२. राहु महादशा में बृहस्पति के अन्तर में केतु की प्रत्यन्तर्दशा–६-११-६९ से २६-१२-६९ तक

३. राहु महादशा में बृहस्पति के अन्तर में शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा–२६-१२-६९ से २०-५-७० तक।

४. राहु महादशा में बृहस्पति के अंतर में सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा–२०-५-७० से ४-७-७० तक।

५. राहु महादशा में बृहस्पति के अन्तर में चंद्रमा की प्रत्यन्तर्दशा—४-७-७० से १६-९-७० तक।

इस प्रकार देखने से विदित होता है, कि इस वर्ष का प्रारम्भ बुध की प्रत्यन्तर्दशा से तथा समाप्ति

चंद्रमा की प्रत्यन्तर्दशा में होगी, इस बीच केतु, शुक्र और सूर्य की अन्तर्दशाएं भुगतेंगी।

वर्ष कुण्डली को ध्यान पूर्वक देखने से प्रतीत होता है, कि यह वर्ष अपने आप में महत्वपूर्ण है। नवम भाव गत मुंथा श्रेष्ठ फलदायक है। ताजिक नीलकण्ठी के अनुसार—

> स्वामित्वमर्थापगमो नृपेभ्यो
> धर्मोत्सवः पुत्र कलत्र सौख्यम्।
> देव द्विजार्चा परमं यशश्च
> भाग्योदयो भाग्यगतेथिहायाम्॥

अर्थात् नवम भावगत मुंथा प्रबल राज्ययोग में सहायक होने के साथ साथ धनवान, ऐश्वर्यवान, धार्मिक, पुत्र स्त्री सुख एवं यशवान बनाती है।

जन्म कुण्डली का राज्यभाव इस वर्ष लग्नभाव बना है, अतः राज्यकार्य में दक्षता बढ़े, एवं राज्य सम्मान मिले, राज्यपक्ष में स्थायित्व रहे, तथा उत्तम नीति से राज्य का प्रबंध श्रेष्ठ एवं सफल हो।

जनता (चतुर्थ भाव) का प्रतिनिधि बृहस्पति भाग्यभाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, इधर भाग्येश स्वयं पूर्ण दृष्टि से जनता भाव को देख रहा है, अतः इस वर्ष जनता में सम्मान बढ़े, तथा जनता द्वारा भाग्य वृद्धि हो।

'त्रिषट् एकादशे भौम सर्वारिष्ट प्रशान्तये' के अनुसार पराक्रमेश स्वयं पराक्रम स्थान में बैठा है, जो कि प्रबल रूपेण शत्रु हन्ता है। यद्यपि शत्रु कुचक्र रचेंगे, और राहु की दृष्टि होने से यह भी संभव है कि मित्र या विश्वासपात्र ही कुचक्र रचने का प्रयत्न करेगा, परन्तु वह निरर्थक एवं निष्फल रहेगा, और इससे उल्टा व्यक्तित्व में निखार एवं प्रखरता आयेगी।

पंचम भाव मंत्रणा, चतुराई, प्रतिभा एवं प्रखरता का है, पंचम भाव पर पंचमेश की दृष्टि इस भाव की सबलता ही सिद्ध करती है, और साथ ही कूटनीति में विजय के चिन्ह स्पष्ट करती है।

राज्य भाव पर शनि, राहु और मंगल की पूर्ण दृष्टियां हैं, और जो स्वयं बुध भाव है। राहु दशा में बुध का प्रत्यन्तर इस दृष्टि से सफल है, जोकि ६ नवम्बर तक रहेगा। राहु गोचर में कुंभ राशिस्थ होकर सफलता का परिचायक है। सितम्बर के उत्तरार्द्ध और अक्टूबर के पूर्वार्द्ध में श्री सुखाड़िया को एक भयंकर मानसिक संघर्ष का सामना करना पड़ेगा, जो राज्यनीति से संबंधित होगा, परन्तु इसमें अंततः विजय रहेगी।

१२ नवम्बर ६९ से बृहस्पति तुलाराशि में विचरण करेगा, जिस पर राहु की पापमय दृष्टि होगी, ठीक इन्ही दिनों केतु का प्रत्यंतर चलेगा, अतः यह समय स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य कहा जा सकता है, मानसिक परेशानी रहेगी, तथा कोई एक ऐसी राजनीतिक गुत्थी उलझेगी, जिससे परेशानी बढ़ जाना स्वाभाविक है, परंतु २६-१२-६९ से शुक्र का प्रत्यंतर इस गुत्थी को सुलझाने में सहायक होगा, और प्रभाव वृद्धि करेगा।

शुक्र जन्म कुण्डली में षष्ठेश-एकादशेश है, अतः प्रबल पापी है, फिर बृहस्पति में शुक्र का प्रत्यंतर संघर्षों की वृद्धि ही करेगा। श्री सुखाड़िया जी के लिए २६-१२-६९ से २०-५-७० **तक का समय सावधानी रखने का है। यही वह समय है, जब एक अन्तरंग साथी पीठ पीछे कुचक्र रचकर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न करेगा। यह समय भयंकर मोड़ लेते लेते बदल जायगा, राजस्थान के लिए यह समय कठिन संघर्षों का तथा श्री सुखाड़िया जी के लिए चुनौती भरा रहेगा।**

२० मई ७० के बाद का समय उत्तम समय कहा जा सकता है। देश की राजनीति एक गहरा मोड़ लेगी, कुछ नये मोहरे बिछेंगे, और प्यादी

वजीर के घर में बढ़ेगी पर मार्ग में ही पिट जायगी, इन सबके प्रत्यक्षदर्शी गवाह श्री सुखाड़िया रहेंगे, जिनके प्रयत्नों से बाजी एक बार फिर वजीर के हाथ में रह जायगी, और शह खाते खाते मात दे दी जायगी, इससे श्री सुखाड़िया का व्यक्तित्व एक बार पुनः पूरे देश पर छायेगा।

४ जुलाई ७० के बाद का समय चंद्रमा का है, जो इस वर्ष (वर्ष कुण्डली के अनुसार) के अंतिम समय तक रहेगा, जो कि श्रेष्ठ रहेगा।

समग्रतः यह वर्ष श्री सुखाड़ियाजी के लिए चुनौती भरा होगा, जिसमें भयंकर उत्थान-पतन स्पष्ट दीख रहे हैं, राजस्थान की नौका डगमगाते डगमगाते भी संभल जायेगी, और भयंकर कुचक्र के पर्दाफास से व्यक्तित्व में निखार आयगा, एक बार पुनः देश श्री सुखाड़िया जी के मस्तिष्क का लोहा मानने को विवश होगा।

देश में भयंकर उतार चढ़ाव होंगे, और असंभावित परिवर्तन होंगे, श्री सुखाड़िया इसमें महत्वपूर्ण भाग अदा करेंगे।

वस्तुतः यह वर्ष श्री सुखाड़िया जी के लिए चुनौती भरा और भाग्यवर्धक है, प्रसिद्धि की दृष्टि से यह वर्ष बेजोड़ कहा जा सकता है।

ईश्वर करे श्री सुखाड़िया दीर्घायु हों, और इसी प्रकार देश की सेवा करते रहें। श्री ॐ।

वर्ग कुण्डलियां एवं उनके फल

—तिलक धारी उपाध्याय
एम. ए.,

विभिन्न विधियों एवं परम्पराओं के विकास में अटूट विश्वास रखने वाले राजनेता श्री मोहन लाल सुखाड़िया राजस्थान के लब्ध प्रतिष्ठ जन नायक हैं। अपने राज्य के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में जी-जान से लगे हैं। जैसे इनके जीवन का मूल स्वर है—"यदि हम विश्व को सत्तावान वस्तुओं का सर्व योग मात्र मानते हैं, इसे नियम नियंत्रित व्यवस्था भर मानते हैं तो हमारी चेतना अपरिपूर्ण है। हम यदि यह समझ लें कि समस्त वस्तुएं आत्मिक रूप से हमारी चेतना से जुड़ी हैं, एवमेव आनन्ददायी हैं तो हमारी चेतना परिपूर्ण है। विश्व का चरम प्रयोजन यह नहीं है कि हम इसमें रहें, इसे जानें एवं काम में लावें। अपितु विश्व का चरम उद्देश्य यह है कि हम अपनी सहानुभूति को विस्तृत करके इस विश्व में अपना साक्षात्कार करें—अपने को विश्व से अलग करके उस पर हावी होने के बजाय उसे समझें और उसके साथ अपने को पूर्णतः एकाकार कर लें।" इन का जन्म समय इकतीस जुलाई सन् उन्नीस सौ सोलह ई० सोमवार अपराह्न ५ बजकर २२ मिनट दिया गया है। परन्तु तत्व शोधन प्रक्रिया के फलस्वरूप इष्टकाल ५ बजकर १२ मिनट आता है। निम्न-लिखित विवरण द्रष्टव्य है—

जन्म दिन सोमवार ३१–७–१९१६ ई० शुक्ल पक्ष द्वितीया तिथि श्रावण सम्वत् १९६३ वि० **इष्टकाल १९/४० प० (५ बजकर १२ मिनट शाम)**

दग्ध राशि — धनु एवं मीन
योगबिन्दु — कुंभ १९ अंश ५८ कं०
योगी — राहू
सहयोगी — शनि
अवयोगी — शुक्र
योग — व्यति पात योग

केतु दशा शेष **६ वर्ष ६ माह १० दिन।**

दशम लग्न तुला ५"१५' कला

जातक का जन्म तेज तत्व में हुआ है। व्यति-पात योग है। धनु लग्न उदय काल में बीत रहा था। लग्नाधिपति गुरु लग्न भाव को देख रहे हैं। मंगल, शनि, एवं शुक्र की भी दृष्टि लग्न पर है। राहू की युति लग्न भाव में है अत एवं सुगठित शरीर लम्बा कद, भव्य चेहरा, गौर वर्ण और आकर्षक व्यक्तित्व होना चाहिए। अनेक ग्रहों के प्रभाव के कारण विविधतामय जीवन होना निश्चित जान पड़ता है। विचार. संकुल, न्याय प्रिय, उग्र, एवं क्रांतिकारी स्वभाव होगा। आवेष्टन के प्रति विद्रोह आदर्श का अन्वेषण, स्व का विस्फार तथा आत्मानं विद्धि की पुकार प्रमुख विशेषताएं होगी। जीवन में संघर्ष एवं आधारभूत परिवर्तन की अपेक्षा रहेगी। पूर्णता की खोज, शान्ति की चाह एवं मौलिकता की आकांक्षा जातक के हृदय में सदा रही है। अव-रोध, अन्तः परीक्षा, आन्तरिक व्यग्रता, आवेष्टन के प्रति असंतोष भी दिखाई पड़ेंगे।

महर्षि पराशर के वृहत होरा के अनुसार लग्न भाव पर दुष्ट ग्रहों की दृष्टि राजयोग कारक होती है। डा० रमण के अनुसार चतुर्थाधिपति मंगल पर राहू की दृष्टि एवं चतुर्थ स्थान में दग्ध राश्याधिपति

गुरु की स्थिति कपट योग कारक है। जातक परिजात के अनुसार व्यतिपात योग का जन्म गुह्याति गुह्य विचार एवं व्यवहार का वाचक होता है। समप्त स्थान राजनायकत्व का है जिसमें शनि बैठे हैं। मंत्रेश्वर दैवज्ञ के कथनानुसार ३, ६, ८, एवं १२ स्थान लीन स्थान हैं। इन में बुध, राहू, केतू, मंगल एवं शनि की युति नीति निपुण व्यक्तित्व प्रदान करती है। प्रस्तुत कुण्डली में बुध अष्टम भाव में हैं। मंगल, शनि, एवं शुक्र द्विस्वभाव राशि में हैं। इन सारी बातों से स्पष्ट होता है कि जातक चतुर राजनेता हैं। उनमें सहज नीति पटुता, विवुध व्यक्तित्व एवं विलक्षण कूटनीतिक विशेषता है। चंद्रमा की दृष्टि द्वितीय भाव पर है जिससे इनके चेहरे पर सहज मुस्कान, अद्‌भुद आकर्षण एवं भेद भरा अर्थ छलकता रहता है।

शारीरिक ताकत एवं स्वास्थ्य पर विचार करने में षष्ट्यांश चक्र एवं नक्षत्रांश चक्र को देखना चाहिये। राशि चक्र (प्रथम चक्र) में तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ एवं दशम राशियां दुष्ट ग्रहों से क्लेशित हैं। भाव चक्र में प्रथम भाव तृतीय भाव, चतुर्थभाव, सप्त भांव, अष्टम भाव एवं नवम भाव में अशुभ ग्रहों की दृष्टि एवं युति है। नक्षत्रांश चक्र में राहू एवं गुरु दोनों अशुभ स्थान पर हैं। अतः अभी जबकि राहू की दशा में गुरु की अन्तरा चल रही है, कुछ ताकत की कमी, भारीपन, एवं सुस्ती का अनुभव होगा। स्वास्थ्य चक्र (६ वर्ग कुण्डली) में राहू ३रे स्थान में हैं। अतः अशुभ गुण जाहिर करेंगे। इसी दशा के शनि के अंतरा में स्वास्थ्य में कमजोरी आयेगी, क्योंकि शनि दूसरे स्थान में है। नक्षत्रांश में शनि तीसरे स्थान में एवं राहू दूसरे स्थान में हैं। इन ग्रहों की ऐसी स्थिति स्वास्थ्य एवं शरीर के लिए अशुभ कारक है। सामान्य तौर पर जातक के ठेहुना, यकृत, हृदय, फेफड़ा, गर्दन एवं मस्तिष्क में विकृति आने की सम्भावना हो सकती हैं। हृदय विकार, गुह्य अंगों में पीड़ा, पैर में चोट आदि का योग जान पड़ता है।

चतुर्थ स्थान के अधिपति मंगल नवम भाव में हैं। चतुर्थ स्थान में बुद्धि कारक गुरु बैठे हैं। पंचम स्थान के ग्रह पति शुक्र सप्तम भाव में हैं। बुध विद्याकारक अष्टम भाव में है। चतुर्थ स्थान के सूक्ष्माधिपति सप्तम भाव में हैं। इससे भावात भाव योग स्पष्ट हो रहा है। पंचम भाव के सूक्ष्माधिपति सूर्य अष्टम भाव में हैं और उनके साथ विद्याकारक वुध बैठे हैं। गुरु से पंचम स्थान पर चन्द्रमा एवं चन्द्रमा से पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि है। इन सब बातों से बुद्धि की उत्कृष्टता, तीक्ष्णता ऊहापोट एवं कल्पना शक्ति का प्राचुर्य दीख पड़ता है। शुक्र यद्यपि कि अवभोगी है, परन्तु भोगी ग्रह राहू के नक्षत्र में हैं। सूर्य शुक्र के नक्षत्र में है। राहू की दृष्टि पंचम स्थान पर है एवं चतुर्थ स्थान को स्वयं चतुर्थाधिपति देख रहे हैं। इस तरह मंगल, गुरु, शुक्र एवं राहू शिक्षादायक ग्रह हो रहे हैं। सिद्धांश चक्र में (चक्र २४) मंगल, गुरु एवं शुक्र चतुर्थ स्थान में हैं। गुरु उच्च हैं, शुक्र को दिग्बल है। अत एवं दर्शन, इतिहास, साहित्य, विधि, एवं धर्म शास्त्रों का विशेष अध्ययन जातक करेंगे। इन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त हुई है। चतुर्थ स्थान पर चतुयाधिपति पर अशुभ ग्रहों के प्रभाव से विद्या प्राप्ति में बाधा एवं पंचम स्थान एवं उसके अधिपति पर दुष्ट ग्रहों की दृष्टि के योग से स्मरण शक्ति की कमजोरी जाहिर होती है।

चतुर्थाधिपति लग्न से नवम एवं चतुर्थ से षष्ट स्थान में हैं। चतुर्थ भाव के कारक चन्द्रमा अष्टम भाव में हैं। चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि भी है। नवमाधिपाति बुध अष्टम भाव में हैं। अष्टमांश चक्र में नवम भाव के कारक सूर्य अष्टम स्थान में हैं। द्वादश चक्र में चतुर्थ भाव के कारक चन्द्रमा लग्न भाव में हैं। इन तथ्यों से स्पष्ट होता है कि माता-पिता का सुख इन्हें अधिक दिनों तक प्राप्त न हो सका है। माता के लिए शुक्र अरिष्ट ग्रह था। शुक्र की दशा में सूर्य, राहू एवं शनि की अन्तरा मारक समय हैं। केतू का अन्तरा भी अरिष्ट कर

है । गोचर की दृष्टि से शुक्र (सूर्य अन्तरा) ही माता के लिए अरिष्टकर है । शुक्र में बुध का अन्तरा पिता के लिए अरिष्टकर है ।

तृतीय स्थान दग्ध राशि है । इस पर मंगल क्रूर ग्रह की दृष्टि है । शनि की दशम दृष्टि भी इस भाव पर है । तृतीयपति चतुर्थ स्थान में है, इस तरह अशुभकारक हो गए हैं । एकादश स्थान के अधिपति नवम भाव में हैं । राशि चक्र में एकादशपति का एकादश से एकादश में स्थिति है । एकादशेश पर राहू की दृष्टि है । इन ग्रह स्थितियों से जातक में साहस, आन्तरिक बल, संघर्ष की क्षमता आती है तथा लाभात लाभ योग से सौभाग्य, सुख, लाभ की प्रचुरता जान पड़ती है । परन्तु अग्रज एवं अनुज के अच्छे योग नहीं बनते । द्रेष्काणांश में (चक्र ३) केतू, शुक्र, मंगल एवं राहू दुष्टाना में हैं । अतएव उपर्युक्त तथ्य सिद्ध हो जाता है ।

सप्तमाधिपति बुध अष्टमस्थ हैं । इस भाव के सूक्ष्माधिपति गुरु चतुर्थ भाव में हैं । केतू, शुक्र एवं शनि सप्तम भाव में हैं । बुध पर योग कारक राहू की दृष्टि है । बुध अपने ही नक्षत्र में है । अतः सप्तम भाव दोषपूर्ण है । शुक्र द्विस्व भाव राशि में है । गुरु उच्च नवांश के हैं । इस तरह बहुदारा योग परिलक्षित हो रहा है । नवमांश चक्र में शुक्र चतुर्थ स्थान में हैं । इन्हें दिग्बल प्राप्त है । गुरु उच्च हैं । सप्तम स्थान में चन्द्रमा एवं मंगल हैं । अतः शुक्र की दशा में गुरु की अन्तरा प्रथम शादी का समय जान पड़ता है ।

पंचम भाव पर विचार किया गया है । इस भाव पर और विचार करने के लिए सप्तमांश चक्र को देखना चाहिए । इस चक्र में शुक्र, सूर्य, चन्द्रमा एवं राहू शुभ स्थान में हैं, राशि चक्र में लग्न, चंद्र लग्न एवं वृहस्पति से पंचम स्थान पर क्रमशः शून्य, पांच एवं तीन ग्रहों का प्रभाव है । अतः इन के बराबर संतान होना चाहिए । गुरु एवं मंगल की दृष्टि से दो पुत्रों का संकेत मिलता है । राहू दशा में सन्तान सुखी रहेंगे । पंचम एवं नवम के ग्रह पतियों के बीच सहज मैत्री है एवं इन का योग कुण्डली में तात्कालिक मैत्री का भी परिचायक है । पंचमेश नवमेश की राशि में है । अतः संतान विनम्र, आज्ञाकारी एवं श्रद्धासु होंगे ।

दशम एवं एकादश भावों का विचार किया जा चुका है । दशम चक्र एवं लाभांश चक्र को देखना चाहिए । इन दोनों चक्रों में राहू और शनि परस्पर कैसे हैं, इस पर विचार करना है । क्योंकि राहू एवं शनि षष्ट्यांश चक्र एवं नक्षत्रांश चक्र में अनिष्टकर दिखलाए गए है । दशम चक्र में राहु एवं शनि षटाष्टक संबंध रखते हैं । बुध से राहू का द्विदादश संबंध है । इस लिए १५-३-१९७१ से २१-१-१९७४ तक शनि का अन्तरा एवं २२-१-१९७४ से १०-८-१९७६ तक बुध का अन्तरा प्रति कूल रहेगा । इस अवधि में राजनैतिक स्थिति, कार्य क्षेत्र, शक्ति, अधिकार, यश एवं लाभ की दृष्टि से स्थिति डावांडोल, परिवर्तन युक्त एवं निराशाजनक है । किन्तु लाभांश चक्र में स्थिति सुदृढ़ एवं सुखद है । अनुमानतः नवम्बर १९७१ में राजनैतिक उथल पुथल अथवा दलगत निदेश की रोशनी में साथ ही स्वास्थ्य की कमजोरी के फल स्वरूप जातक के कार्य क्षेत्र एवं अधिकार क्षेत्र में अन्तर आये । षोड़षांश चक्र में राहू ब्रह्मा के अंश में हैं । ब्रह्मा का अंश अचक्र की सीमा से बाहर दैवी अंश है । लाभांश में शनि लाभ स्थान में है । अतएव सितम्बर १९७३ ई० को जातक विशिष्ट उत्तर दायित्व के निर्वाह में संलग्न पाये जायेंगे । ग्रहों की स्थिति से गुरुतर अधिकार क्षेत्र एवं कार्य शक्ति का संकेत मिलता है ।

पंचमांश एवं विंशांश (चक्र ५ एवं २०) से उपासना, आध्यात्मिक जीवन, अध्ययन, ध्यान, योग एवं सुख के हेतु का बोध होता है । चक्र २० में राहू एकादश स्थान में है तथा गुरु तृतीय स्थान

में। परन्तु राहू एवं केतू दृष्टि विनिमय कर रहे हैं। इस तरह गुरु राहू के अधीन होकर अध्ययन, मनन, ध्यान, उपासना में योग दान करेंगे। शनि सप्तम में हैं। बुध द्वितीय स्थान पर है। शनि नवम भाव को देख रहे हैं। पंचमेश एवं दशमेश शुक्र योगी राहू के नक्षत्र में हैं अतएव अवयोगी होते हुए भी शुभ हैं। शुक्र नवमेश की राशि में बैठे हैं। इस तरह स्पष्ट हैं कि धर्म के संबंध में जातक नवीन दृष्टिकोण अपनाते हुए भी शास्त्र सम्मत विचार की कदर करते हैं। शनि पाखंड व्रत निरत बनाता है। लग्नेश की लग्न पर दृष्टि धर्म परायण होने में सहायक है।

अष्टमांश चक्र में शनि मारक स्थान में बैठे हैं, बुध की अन्तर्दशा प्रबल अरिष्टकर है।

एक हजार का पुरस्कार जीतिये

हमारे ज्योतिषियों का अधः पतन और ज्योतिष विद्या के प्रति निरादर की भावना का एक कारण यह भी है कि हमारे ज्योतिषी पूर्ण परिश्रम करके सही फलादेश नहीं दे पाते। प्रायः यह दलील दी जाती है कि उचित पारिश्रमिक के अभाव में ज्योतिषी ऐसा नहीं कर पाते। पर इसके विपरीत ऐसे उदाहरण भी हैं जहां भरपूर पारिश्रमिक देते हुए भी सही फलादेश करने वाले ज्योतिषी नहीं मिल पाते हैं। हम ज्योतिष मार्तण्ड के द्वारा देश के ज्योतिषियों के नाम अपील प्रसारित करते हुए निवेदन करते हैं कि वे इस स्थिति को ज्योतिष विद्या के लिये एक चुनौती समान स्वीकार करें। यदि कोई विद्वान अधिकार पूर्वक निम्नलिखित जन्म पत्रियों का भूत, वर्तमान और भविष्य की घटनाओं पर प्रकाश डाल सकें तो उन्हें एक हजार एक रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा। प्रथम पुरस्कार के अलावा ४०१ रुपये का द्वितीय पुरस्कार ऐसे सुयोग्य ज्योतिषी को दिया जायेगा जिसकी बातें ७४ प्रतिशत सत्य उतरेंगी। ऐसा करने का हमारा लक्ष्य केवल यही है कि विद्वानों को अपनी विद्वता प्रदर्शित करने और देश-व्यापी सम्मान प्राप्त करने का सुअवसर मिले। साथ ही ज्योतिष विद्या के प्रति लोगों की आस्था व विश्वास बढ़े। शत प्रतिशत सही फलादेश करने वाले विद्वान का सचित्र परिचय 'ज्योतिष मार्तण्ड' में सम्मान सहित प्रकाशित किया जायेगा। फलादेश सम्बन्धी निर्णय सम्पादक ज्योतिष मार्तण्ड के अधीन रहेंगे जो सब प्रकार से मान्य होंगे। फलादेश के लिये प्रस्तावित जन्म तिथि निम्न प्रकार है :—

१. ता० १८-७-१९२४ समय १-२० दोपहर बम्बई—अक्षांस १८ रेखांश ७३
२. ता० १-१०-१९२५ समय १-२० दोपहर स्थान आगरा
३. ता० २०-७-१९२७ समय ८-२० सुबह स्थान आगरा
४. ता० २५-९-१९५६ समय ९-५० सुबह स्थान जयपुर

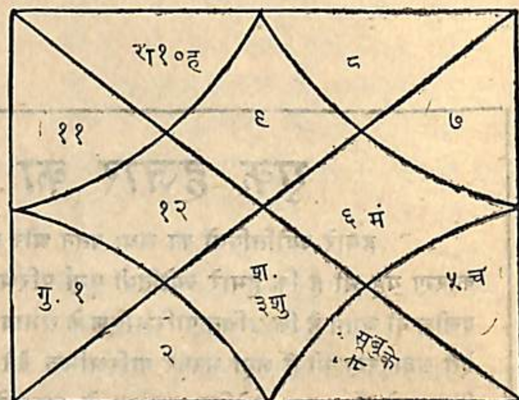
प्रधान सम्पादक

श्री मोहन लाल जी सुखाडिया

की जन्म पत्रिका पर शास्त्रीय विचार

—कल्याणदत्त शर्मा
ज्योतिषाचार्यः

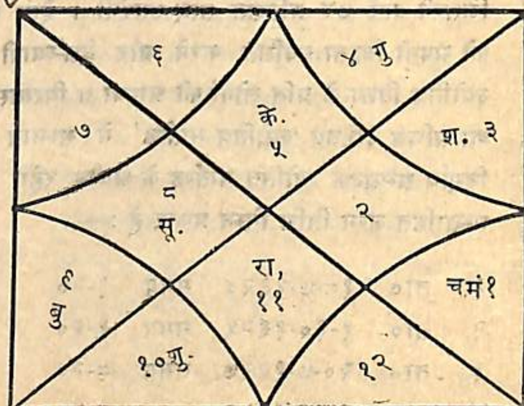
श्रीमान् का जन्म ३१ जुलाई १९१६ के सायं ५ बजकर २२ मि० स्टैण्डर्ड समय पर उदयपुर में हुवा है। आजकल प्रायः देखा गया है एक ही नगर से प्रकाशित पञ्चाङ्गों से ग्रहस्पष्टादि करने पर गणित द्वारा भिन्न-भिन्न मान प्राप्त होते हैं। जिससे नवमांश दशादि में काफी अन्तर दृष्टिगोचर होता है। इस विषमता का नाश तो सरकार के सहयोग से हो सकता है अन्यथा दूसरा कोई उपाय नहीं है। सरकार एक समिति का चयन करके उसके द्वारा दृग्गणितैक्य प्रणाली से पञ्चाङ्ग निर्माण कर्त्ताओं को पञ्चाङ्ग निर्माण करने को बाध्य करें तभी यह सम्भव हो सकता है।



श्रीमतां जन्म चक्रम्

श्रीमान् सुखाड़ियाजी की जन्म पत्रिका में दृग्गणितैक्य प्रणाली से गणित करने पर निम्नोक्त इष्ट कालादि प्राप्त होते हैं।

अथ श्रीमन्नृपति वैक्रमाद्बे १९७३ शकाद्बे १८३८ श्रावणमासे शुक्लपक्षे १ चन्द्रवासरे ५/२३ अश्लेषा भे २१/५१ तत्रेऽष्टम् २८/०/८ स्पष्टसूर्यः ३/३५/१३ लग्नम् ८/१५/४६ दशमलग्नम् ५/२९/२८ जन्मस्थानेऽक्षांशाः २४० /३५' रेखांशाः ७३० ४४ मध्यमान्तरम्-३५ मि. ४ से. स्पष्टान्तरम्-४५ मि, २३ से. सूर्योदयः ५ बजकर २५ मि. (स्थानीय समयानुसार) स्थानीय मध्यम समय ४ बजकर ४७ मि. स्टैण्डर्ड समय ५ बजकर २२ मि. सांयकाल दि० ३१ जुलाई १९१६ ई० जन्मस्थानम् उदयपुर (राजस्थान)। जन्म समय में केतु की दशा में ६ वर्ष ८ मास १० दिन शेष थे।



नवमांश चक्रम्

भाग्येश सूर्य के कर्क राशि गत होने से २४ वें वर्ष से परिपूर्ण भाग्योदय होने का योग बनता है एवं लाभेश धनेश के मिथुन राशिगत होने से ३२ वें वर्ष के उपरान्त धन लाभ का योग अत्युत्तम बनता है जन्म कुण्डली में धनुर्लग्न होने से प्रबल केन्द्र त्रिकोण पति बुध सूर्य होते है जिनका एकत्र योग हो जाने से प्रबल राज योग बन गया है। परन्तु यह योग कर्क राशि में बना है जिसका स्वामी चन्द्र सिंह राशिगत है अतः अष्टमेश से भी भाग्येश का सम्बन्ध हो गया जो राज योग भंग करता है। किन्तु नरन्ध्रेशत्व दोषस्तु सूर्यचन्द्रमसो र्भवेत् इस नियम से राजयोग भंग रहा। राहु द्वितीयस्थ होने से सूर्य बुध से दृष्टि सम्बन्ध हो जाने से सूर्य बुध के राजयोग का अपहरण करके स्वयं राज योग कारी बन गया। राहु की प्रकृति यही कि जिसके साथ सहवास वा दृष्टि सम्बन्ध बनावे उसके गुणों एवं अवगुणों को स्वयं धारण कर लेता है अतः राहु भी सूर्य और बुध की तरह पूर्ण राजयोग कारी बन गया। राहु नवम पञ्चमस्थ राशि पर भी दृष्टि पात कर रहा है अतः भौम के गुणों का भी ग्राहक बन गया। भौम पञ्चमेश होने से त्रिकोणाधिपति है अतः राहु में त्रिकोणाधिपति की शक्ति और भी बढ़ गयी है। सूर्य, बुध और मंगल के साथ पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध होने से पञ्चमेश सप्तमेश नवमेश दशमेश की शक्ति प्राप्त कर राहु सर्वोपरि शुभ फल कारक ग्रह बन गया है। लग्नेश सुखेश गुरु भौम क्षेत्रगत होकर भौम से दृष्ट है अतः यह योग भी केन्द्र त्रिकोणाधिपतियों से बना है जो राजयोग को अति पुष्टिकारक है।

शनि शुक्र की युति सप्तम भाव में हो रही है। शनि धनेश पराक्रमेश और शुक्र षष्ठेश लाभेश है दोनों परस्पर मित्र हैं अतः ये भी विरोधियों को परास्त कर धनलाभ में अपना अपूर्व योग दे रहे हैं तथा सप्तम भावस्थ होने से स्त्री के भाग्य की प्रबलता से भी धन लाभ व प्रताप की वृद्धि के द्योतक हैं। उपर्युक्त विवेचन से सबसे प्रबल शुभ फल कारक राहु बनता है। उसके बाद मंगल व गुरु शुभ फल कारक बनते हैं। सूर्य बुध के फल का तो राहु भक्षण कर गया अतः इन की स्थिति तो दयनीय होगई हैं।

इसलिये ही विंशोत्तरी दशामान् के आधार पर सूर्य की महादशा सन् १९४३ से सन् १९४९ के १० अप्रेल रही जो राज योग में परिपूर्णत्व नहीं ला सकी और जीवन को विशेष संघर्ष मय बनाये रखा यह सब राहु से सूर्य के दृष्ट होने से ही हुवा। आगे सन् ५९ से १० अप्रेल तक चन्द्रमा की महादशा रही इसमें भी जीवन संघर्षमय ही व्यतीत होने का योग बना क्योंकि चन्द्र अष्टमेश है। यहां यह बात भी विचारणीय है कि सूर्य भाग्येश है उसकी दशा सर्वोत्तम व्यतीत होनी चाहिये थी किन्तु अष्टमेश चन्द्र से स्थान सम्बन्ध हो जाने एवं राहु से दृष्ट हो जाने से सूर्य अपना पूर्ण शुभ फलन नहीं कर सका एवं चन्द्रमा अष्टमेश होने के कारण अशुभ फल कारक था किन्तु सूर्य भाग्येश से सम्बन्ध हो जाने के कारण विशेष अशुभ फल नहीं कर सका इस प्रकार दोनों ग्रहों के फल का आदान प्रदान हुवा। आगे मंगल की महादशा १०-४-१९५९ से १०-४-१९६६ तक व्यतीत हुई वह इन दोनों ग्रहों की (सू० च०) महादशा से अत्युत्तम व्यतीत हुई इसका मुख्य कारण गुरु से एकतर सम्बन्ध होना एवं राहु से दृष्ट होना है। इसके अनन्तर राहु की महादशा १०-४-६६ से प्रारम्भ हुई जो सर्वोत्तम दशा है। राहु जो प्रबल केन्द्र त्रिकोणाधिपति सूर्य और चन्द्र है उनके फल को उनकी दशा काल में निगल गया था उसे उगल रहा है अतः राहु की महादशा सर्वोत्तम फल कारक है। अभी वर्त्तमान में राहु की महादशा में गुरु का अन्तर्काल चल रहा है। गुरु मंगल से एकतर दृष्टि सम्बन्ध बना रहा है अतः शुभ फल कारक ही है। इसमें शनि का प्रत्यन्तर्काल थोड़ा कष्ट कारक है।

श्री मोहन लालजी सुखाड़िया

का कुण्डली अध्ययन

—हनुमान प्रसाद जोशी

इस कुण्डली में धनुर्लग्न उदय हुआ है। धनु राशी का स्वरूप है, शरचाप धारण किये हुए पुरुष का उर्ध्व भाग इसका अधो भाग अश्व का है। जो पूर्ण वेग से प्रधावित है एवं पुरूष अपने लक्ष्य भेद के लिये कृत संकल्प हैं।

तात्पर्य यह कि धनु लग्न जातक लक्ष्य वेध किंवा अपने उद्देश्य पूर्ति के लिये कृत संकल्प व तत्पर होते हैं। वे अनुशासन प्रिय और निरंतर आगे और आगे बढ़ते रहने में विश्वास रखने वाले होते है।

अब इस कुण्डली के विशेष योगायोग पर विचार किया जाता है।

१. लग्न त्रिकोण शुद्ध है। इस त्रिकोण में चन्द्रमा और वृहस्पति हैं। ये दोनों ही अपनी मित्र राशियों में अवस्थित हैं। लग्नेश गुरु लग्न और चन्द्रमा दोनों को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।चन्द्रमा मन मस्तिष्क का कारक माना गया है। अतः गुरु से दृष्ट होने के कारण मनोबल उच्च कोटि का हो जाता है। और मस्तिष्क mind में ज्ञान बुद्धि नैपुण्य, प्रतिभा आदि का विकास अपने पूर्ण रूप में विकसित हो जाता है। लग्न पर लग्नेश गुरु की दृष्टि से आत्मबल, संयम, अनुशासन, आदि गुणों का समावेश उच्च कोटि का हो जाता है।

लग्न बहुत बलवान है, कारण लग्न पर गुरू, मंगल शुक्र, शनि इन चार ग्रहों की दृष्टि है। इन चारों में गुरू नैतिक बल, आत्म सम्मान, बुद्धि नैपुण्य, श्रद्धा, धार्मिक आस्था, पूज्य भाव, मन्त्रणा शक्ति Thinking power अनुशासन प्रियता, नियमितता एवं नियंत्रण शक्ति का उच्च विकास किया है। मंगल लग्न को देखकर साहस शक्ति Controling power, नेतृत्व, दृढ़ता और समयानुसार साहसिक कदम बढ़ाने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। विषम से विषम परिस्थितियों पर साहस पूर्वक अधिकार पा लेने की शक्ति मंगल दे रहा है। शुक्र राजनीति एवं कूटनीति, वैभव भोग चातुर्य, कोमल भावना भी बढ़ा रहा है। शनि चिन्तन शीलता हर कार्य को सोच समझकर करने की शक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार ये चार ग्रह शासन में चारों प्रकार की राजनीति (साम, दाम दण्ड, भेद) का समावेश एवं उनका समयानुसार उचित प्रयोग करने की विशेष क्षमता प्रदान कर रहे हैं। इनमें गुरू साम नीति, शुक्र दाम नीति, मंगल दण्ड नीति एवं शनि भेद नीति का द्योतक हैं। चूंकि शनि की राशी में राहु है अतः राहु ही विशेष कर भेद नीति को प्रयुक्त करने वाला है। मंगल लग्न को भी देखता है और लग्नेश गुरू को भी देख रहा है। लग्नस्थ, या लग्न को देखने वाले ग्रह सदैव जातक के सहायक होते हैं और वे अपनी दशादि में जातक की अनेक प्रकार से सहायता और उन्नति प्रदान करते हैं।

चन्द्रमा पर गुरू और शनि दोनों की दृष्टि है। चन्द्रमा को शनि का सहयोग प्राप्त कर शुक्र भी

देख रहा है । चन्द्रमा और सूर्य का परस्पर राशी परिवर्तन योग बना हुआ है । सूर्य के कारण चन्द्रमा का सम्बन्ध बुध से भी बन जाता है । इस प्रकार चन्द्रमा का सन्म्बध भी ५ ग्रहों, वृ. शु. श. सु. बुध से बन जाता है । अतः लग्न की तरह चन्द्रमा भी बलवान है ।

Traditional Astrology या परम्परा गत पद्धति के अनुसार इस कुण्डली में राजयोग बने भी हैं और भंग भी हुए हैं एवं राजयोग भंग होकर भी उन्होंने काम किया है । जैसे इसमें नवमेश दश-मेश सूर्य बुध का राजयोग बना हुआ है । किन्तु साथ साथ यह भंग भी हो गया है । इस विषय में महर्षि पाराशर ने लिखा है :–

"त्रिकेशो यत्र भावस्था तद् भावेश चिकः स्थिता ।
मारकेश युतो दृष्टो जायते निर्धतो नरः ।।

अर्थात त्रिक ६. ८. १२ भाव के स्वामी जिस भाव में हों उस भाव का स्वामी यदि त्रिक (६.८.१२) में हो और मारकेश से युक्त वा दृष्ट हो तो ऐसे योग वाला व्यक्ति दरिद्र होता है । तदनुसार अष्टमेश चन्द्रमा भाग्य स्थान में गया है और भाग्येश सूर्य अष्टम भाव में आ गया है । इनमें सूर्य के साथ केतु है यह केतु राजयोग कारक सूर्य बुध दोनों के साथ है अतः यह योग भंग करता है । चन्द्रमा को मारकेश (द्वितीयेश) शनि देख रहा है । अतः उक्त राजयोग बन कर भी भंग हो गया है । अर्थात् जहां नवमेश सूर्य दशमेश बुध युति सम्बन्ध बनाये हुए हैं वहां यह अष्टमेश चन्द्रमा से भी राशि परिवर्तन योग बना रहा है अतः राजयोग कारक होते हुए भी सूर्य अपनी दशा में राजयोग जनित फल प्रदान करने में असमर्थ रहा है । दूसरे सूर्य के बाद चन्द्रमा भी तत्सम्बन्धी फल नहीं दे पाया है । अष्टमेश के विषय में ऐसा लिखा गया है कि यह साहचर्य से फल प्रदान करता है । किन्तु चन्द्रमा की दशा में भी ऐसा कुछ नहीं हुआ कारण चन्द्रमा पाप कर्तरि गत है ।

अब रहा शुक्र शनि का योग–७वें भाव में है । महर्षि पाराशर जी ने त्रिषडाय अर्थात् ३. ६. ११ भावों के स्वामी ग्रहों को पाप ग्रह माना है । अतः ये भी राजयोगाधिकारी नहीं हो सकते । दूसरे ज्योतिष का एक सिद्धान्त बहु प्रचलित यह भी है कि अष्टमेश और व्ययेश जिन २ भावों में जाते हैं उनका नाश करने वाले होते हैं । यदि इस सिद्धान्त को माना जाय तो अष्टमेश चन्द्रमा भाग्य स्थान में गया है, और व्ययेश मंगल कर्म स्थान में गया हुआ है । अतः भाग्य और कर्म दोनों भाव निर्बल बन जाते हैं । ऐसी अवस्था में भाग्य वृद्धि एवं राज्यधिकार केवल कल्पना के विषय रह जाते हैं । वैसे भी व्ययेश दशम में और दशमेश अष्टम में पाप ग्रह केतु से युक्त होकर राजयोग भंग की अनिवार्यता ही प्रगट कर रहे हैं । मात्र गुरू पंचम भाव में स्थित होकर राजयोग प्रदायक नहीं हो सकता फिर गुरू भी तो केन्द्राधिपतित्व के दोष से मुक्त नहीं है । गुरू केन्द्र पति बनकर त्रिकोण में अवश्य गया है लेकिन इसका अन्य किसी ग्रह से सम्बन्ध भी नहीं बन रहा है जबकि तथ्य यह है कि आज निरन्तर १० वर्षों से राजस्थान के मुख्य मंत्रित्व के पद को सुशोभित कर रहे हैं ।

अतः यह विचारधारा ही गलत हो जाती है । एवं परम्परागत प्रणाली से फल प्रतिपादन करना निरर्थक हो जाता है । मुझे विश्वास है कि अनेक विद्वान येन केन प्रकारेण इस कुण्डली में उसी प्रणाली के आधार पर राज योगों का प्रतिपादन करेंगे और इसी कारण मैंने संक्षेप में ही उपरोक्त संकेत दिये हैं ।

मेरे विचार में इस कुण्डली का विचार कुछ नवीन तथ्यों को सामने रख कर किया जाना चाहिये तभी उपयुक्त समाधान निकल सकता है एवं हम सत्य और आगत विगत घटनाओं पर सही ढंग से प्रकाश डाल सकते हैं ।

सर्व प्रथम इस कुण्डली में भाव स्थिति पर ध्यान देना चाहिये। लग्नोदय धनु राशी के १५° ५५' कला पर हुआ है। अब प्रथम यह देखना है कि इस क्षेत्र के अधिकारी कौन २ ग्रह हैं। लग्नेश गुरू है। लग्न का नक्षत्र पति शुक्र है। और धनु राशी में १५° ३३' २०" से १६° १३' २०" के क्षेत्र का स्वामी सूर्य है। सूर्य निःसर्गतः लग्न का कारक होता है तथा शेष दोनों अधिकारी गुरू और शुक्र लग्न को देख रहे हैं। अतः लग्न अपने राशी और नक्षत्रेश दोनों से दृष्ट होने के कारण बहुत बलवान हो गया है और इनका व्यक्तित्व अत्यधिक शक्तिशाली बन गया है। इस प्रकार बड़ी से बड़ी शक्ति को भी ये अपने व्यक्तित्व से प्रभावित करने में समर्थ हो जाते हैं।

दूसरे दशम भाव तुला राशी के ०° - ३६ कला पर उदित हुआ है। इसका स्वामी शुक्र बन जाता है। नक्षत्र पति मंगल है और Sub Lord या अन्तर्पति (कलापति) बुध है। यहां भी दशमेश लग्नेश शुक्र और दशम भाव का नक्षत्र पति मंगल दोनों ही लग्न को देख रहे हैं।

भाव चन्द्र में भावों की स्थिति बदली हुई है। सामान्यतः धनु लग्न का दशमेश बुध माना जाता है। मगर इस भाव कुण्डली के अनुसार कर्म और लाभ स्थान का स्वामी शुक्र है। शुक्र इसमें षष्ठेश भी है। अतः शुक्र को ६–१०–११ भावों का आधिपत्य प्राप्त हो गया है। इसी प्रकार मंगल चतुर्थ पंचम और व्यय भाव का स्वामी बन गया है। गुरू के अधिकार में केवल लग्न और बुध के अधिकार में सप्तम भाव रह जाता है। शेष ग्रह अपने अपने भावों के यथा पूर्व अधिकारी बने रहते हैं। अतः जब बुध दशम भाव का स्वामी ही नहीं है तो वह सूर्य के सम्बन्धित होकर राजयोग बना ही कैसे सकता है। बुध केवल सप्तम केन्द्र का स्वामी है और सप्तम भाव मारक स्थान भी है तथा द्विस्वभाव लग्न में बाधक स्थान भी बन जाता है। अतः बुध पक्का मारक बना हुआ है और यह अपनी दशा युक्ति में किसी समय मारक फल भी निश्चय देगा।

तीसरे ग्रहों का भावाधिपत्य तो परिवर्तित हुआ ही है साथ साथ ग्रह भी परिवर्तित हो गये हैं। इस विषय में दो मत प्रचलित हैं। प्राचीन मतानुसार भाव स्पष्ट बिन्दु से १५° अंश पीछे और १५° अंश आगे तक भाव परिधि मानी जाती है। और यहीं भाव सन्धि का उद्भव भी मान लिया जाता है एवं सन्धिगत ग्रह निर्बल माने जाते हैं।

नवीन मतानुसार भाव स्पष्ट बिन्दु को इसका आरंभ माना जाता है और अगले भाव के स्पष्ट बिन्दु तक भाव परिधि मानी जाती है। भाव २३° २४° अंश तक के भी हो सकते हैं और उपर में ३६° ४०° अंश तक के भी हो सकते हैं। राशियां ३० अंश की होती हैं। व एक कला कम न एक कला अधिक, किन्तु भावों के सम्बन्ध में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। इनका आकार duration कम या अधिक हो सकता है। मेरा तात्पर्य यह है कि प्राचीन मत भ्रान्ति पूर्ण है। और नवीन मत सत्य है एवं ग्राह्य है । तथा मेरे Prediction का आधार भी यही नवीन मत है अर्थात् भाव स्पष्ट बिन्दु भाव का आरंभ Starting point है। और इसका विस्तार अगले भाव के स्पष्ट बिन्दु तक रहेगा । तदनुसार लग्न में राहु, चतुर्थ में गुरु, छठे भाव के शुक्र, सप्तम भाव में शनि, सूर्य, बुध, केतु है। अष्टम भाव में चन्द्रमा और नवम भाव में मंगल हैं। इस प्रकार ग्रहों की स्थिति में काफी परिवर्तन हो जाता है। उनकी स्थिति occuption बदल जाती है एवं उनकी Lordship आधिपत्य भी बदल जाता है।

१. अब मैं फिर मुख्य प्रसंग पर आता हूं। लग्न और दशम भाव के विषय में लिखा गया है कि उनके सर्वाङ्गाधिकारी ग्रह लग्न को देख रहे हैं।

२. लग्न पर ४ ग्रहों की दृष्टि है। इसका फल प्रथम दिया जा चुका है।

३. इस कुण्डली में तीसरा प्रधान तथ्य यह है कि राहु केतु इसमें अधिक बलवान बन गये हैं। कारण राहु मकर राशि में है। यह शनि की राशि है। शनि शुक्र से संयुक्त है अतः राहु इन दोनों शनि शुक्र का अधिकार स्वयं ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार राहु के अधिकार में २–३–६–१०–११ भाव आ जाते हैं। क्योंकि राहु केतु हमेशा ग्रहों से बलवान् होते हैं।

इन्हें इस प्रकार समझना चाहिये कि शुक्र शनि अपने अपने भावों के कठ पुतली सरकार हैं। इनका वास्तविक अधिकारी राहु है। राहु चलित होकर लग्न में आगया है अतः यह जातक को सदैव **favour** मदद करता रहेगा, अनुकूल बना रहेगा।

इसके अलावा राहु पर सूर्य और बुध की दृष्टि है फलतः राहु में इनकी शक्तियों की सम्पन्नता भी विद्यमान है। सर्वोपरि राहु उतराषाढ़ा नक्षत्र में स्थित है जो सूर्य का नक्षत्र है अतः नवम भाव का फल देने में बजाय सूर्य के राहु अधिक सक्षम है।

केतु कर्क राशि में सूर्य और बुध के साथ है अतः केतु एक साथ सूर्य, चन्द्र, बुध को मात्र कठ-पुतली बनाकर वास्तविक शक्ति का अधिकारी स्वयं बन गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राहू में वह सब कुछ करने की शक्ति है जो शुक्र, शनि, सूर्य, बुध कर सकते हैं। एवं केतु में वह शक्ति है जो सूर्य चन्द्र बुध में करने की है। विशेषता यह है कि राहू इन चारों ग्रहों की समवेत शक्ति का प्रतिनिधि बन गया है। तात्पर्य यह है कि शुक्र, शनि, सूर्य, बुध अपनी २ दशाओं युक्तियों आदि में अपने अपने स्वतन्त्र रूप में जो कुछ कर सकते हैं व सब फल राहू अपनी दशा में प्रदान करने की सामर्थ्य रखता है। यह और भी उत्तम है कि वर्तमान समय में राहू की महादशा चल रही है।

इसी प्रकार केतु के विषय में भी समझना चाहिये। यह भी एक साथ सूर्य, चन्द्र, बुध, की समवेत शक्तियों का प्रतिनिधि बन गया है।

गुरू और मंगल ये दोनों अप्रभावित हैं। अर्थात् ये अपने २ कार्य इच्छा पूर्वक सम्पन्न करने में सर्वथा स्वतन्त्र हैं। इस प्रकार इस कुण्डली में ९ ग्रहों की जगह मात्र चार ग्रह मंगल, गुरु, राहू, केतु ही ऐसे हैं जो जातक को उन्नति प्रदान करने में अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुंचने में, उद्देश्य पूर्ति में एवं इच्छित मनोभिलाषाओं को भली प्रकार परिपूर्ण करने में समर्थ हो सकते हैं। यह एक तथ्य है।

वैसे भी ग्रहों की नाक्षत्रिक शक्ति बुध, गुरु, शनि, केतु में केन्द्रीभूत हो गई है। इनमें शनि का प्रतिनिधित्व राहू को मिल जाने से वास्तविक सत्ता राहू में आ गई है।

इसी प्रकार बुध की शक्ति केतु में संन्निहित हो गई है इसलिए इस कुण्डली में मात्र गुरु राहू केतु ही सर्वोपरि एव सर्व प्रधान ग्रह बन गये हैं। जब २ इनकी दशा अन्तर्दशा आवेगी जातक सर्वोत्तम फल भोग करने में सक्षम होगा।

इस समय राहू की दशा चल रही है। यह श्रेष्ठ है और इसके बाद बृहस्पति की दशा आवेगी वह भी श्रेष्ठ है। इस प्रकार भविष्य के संकेत परमोज्वल मिल रहे हैं। अब इतनी लम्बी अवधि में कब कैसे फल मिलेंगे, क्या क्या चढ़ाव उतार आवेंगे एवं किन किन परिस्थितियों में से गुजरना पड़ेगा ये सब बातें सूक्ष्म अध्ययन के विषयान्तर्गत आती हैं।

फिलहाल इतना निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि संघर्षों के बावजूद भी भविष्य उज्वल है। इन्हें मुख्यमन्त्री पद सन् १९५४ में प्राप्त हुआ है। उस समय मंगल की दशा आरम्भ होती है मंगल यदि देखा जाय तो कन्या लग्न में मारक होता है।

प्राचीन मतानुसार कन्या दशम भाव गत है अतः कर्म राज्य भाव के लिये मंगल मारक फल प्रदायक होना चाहिये था । मगर हुआ इसके विपरीत । इसमें प्रधान कारण यही है कि मंगल से प्रभावित नहीं है । दूसरे यह लग्न व लग्नेश दोनों को देख रहा है । तीसरे यह ४वें ५वें भाव का स्वामी होने के नाते केन्द्र त्रिकोण का स्वामी भी बन गया है एवं केन्द्रपति होकर त्रिकोण भाग्य स्थान में स्थित है । सर्वोपरि यह राहू के Sub. में है अर्थात् यह कन्या के शुभ में है अर्थात् यह कन्या में १२°–१४ कला पर है । यह क्षेत्र चन्द्रमा का है किन्तु इसमें (हस्त नक्षत्र में) ११°–५३' २०" कला से १३°–५३'२० तक के क्षेत्र का स्वामी राहू है । अतः यह मंगल शत्रु क्षेत्री और अष्टमेश के नक्षत्र में होते हुए भी राहू के अधिकार क्षेत्र में होने के कारण राजयोग प्रदान करने में समर्थ हो सका है । मंगल को राहू के बाद वृहस्पति का भी अनुमोदन मिल गया है कारण मंगल, बृहस्पति के Sub. में है । अर्थात् मंगल का प्रत्यन्तर पति गुरु है जो लग्नेश है और मंगल की ही राशी में स्थित होकर ४ थे स्थान सिंहासन भाव में गया है ।

अब राहू की दशा चल रही है । राहू के विषय में ऊपर लिखा जा चुका है । ता. ७-१२-६८ को राहू में गुरु की अन्तर्दशा चल रही है । जो १–५–१९७१ तक रहेगी ।

वर्तमान में दशापति राहू अन्तर्दशा पति वृहस्पति के नक्षत्र में भ्रमण कर रहा है और गुरु १७–१२–६९ को राहू के नक्षत्र में प्रवेश करेंगे इस प्रकार ५–२–१९७० तक राहू बृहस्पति का परस्पर नक्षत्र परिवर्तन योग बनेगा ।

इस समय मंगल १५–१२–६९ को शतभिषा में जायगा और ता० २-१–७० पूर्वा भाद्र पद में प्रवेश करेगा और २०-१-७० तक रहेगा । अतः १५-१२-६९ से २०-१-७० का समय इनका विशेष महत्वपूर्ण और घटनाओं से परिपूर्ण होगा उस समय इन्हें और उच्च अधिकार प्राप्त होंगे और सम्भवतः ये उस समय केन्द्रीय शक्ति संचालन में प्रमुख भाग ग्रहण करलें । इनके लिए ता० २३-१०-६९ से और भी श्रेष्ठ समय आ रहा है । सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल ये चार ग्रह ता० २३-१०-६९ से लेकर ता० २०-१ –७० का समय अत्युतम रहेगा ।

इस समय भारतीय राजनीति में अनेक प्रकार की घटनाएं घटित होंगी और इन्हें उनमें भाग होगा लेना वह भी प्रमुख रूपसे और फलस्वरूप इनका महत्व और भी बढ़ जायगा एवं प्रतिष्ठा मर्यादा अधिकार, नेतृत्व एवं प्रभाव विस्तार होगा । इसमें कोई सन्देह नहीं है । और यह ध्रव सत्य है ।

यह वर्ष

मेश शनि, वृषभ मुं, मिथुन शु. कर्क सू. बु., लग्न सिंह, कन्या वृ. के., वृश्चिक मं. कुम्भ च, मीन राहू ।

वर्ष लग्न में सिंह राशि उदति हुई है । जो जन्म लग्न से भाग्य राशि है । अतः वर्ष भाग्योदय सूचक है । भाग्येश मंगल बलवान है और केन्द्र में स्थित है । लग्नेश भाग्येश का त्रिकोण योग है जो भाग्य वृद्धि कारक है । नवमेश मंगल और पंचमेश गुरु का त्रिरेकादश सम्बन्ध बना हुआ है जो मंत्रित्व योग की प्रबलता का परिचायक है । मुंथा दशम भाव में हैं । मुंथा का स्वामी शुक्र लाभ स्थान में स्पष्ट बिन्दु के बहुत नजदीक है । अतः पद प्रतिष्ठादि सम्बन्धी मनोकामनाएं पूर्ण होगी । लग्नेश और मुंथा का समान अंशों में त्रिरेकादश योग अत्युतम बना हुआ है । बुध और वृहस्पति परस्पर एक दूसरे की उच्च राशि में गये हुए हैं । सप्तमेश नीच होने से निर्बल हो गया है अतः प्रतिद्वन्दियों पर निश्चत विजय प्राप्त होगी । दूसरे शनि दशमेश शुक्र के नक्षत्र में गया है जो लाभ भाव में स्थित है । फलतः शत्रु पक्ष के सब प्रयास विफल हो जावेंगे । जन्म लग्नेश गुरु वर्ष में धन स्थान में है अतः धन परिवारादि के लिये गुरु श्रेष्ट फल प्रदायक है ।

मुंथा वृष राशि में है। वृष जन्म लग्न से ६ ठी राशि है। छठा स्थान रोग आदि भी होता है अतः वर्ष में स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ हो सकती हैं। छठा भाव शत्रुओं पर विजय प्रदायक भी है अतः वाद विवाद में विजय सुनिश्चित है। वर्ष लग्नेश और धनेश सूर्य बुध व्यय स्थान में गये हुए है, फलतः यात्राएं अधिक होवें। व्ययाधिक्य रहे संघर्ष भी इस वर्ष में आवेंगे। विरोधी पक्ष द्वारा परेशानियां बढ़ाई जाने के प्रयास चालू रहेंगे जिससे चिन्ता रहेगी कारण वर्ष लग्नेश कर्क राशी में है यह राशि जन्म लग्न से ८ वीं राशि है। जन्म लग्न के भाग्येश और वर्ष लग्नेश वर्ष लग्न से व्यय स्थान में संघर्ष चिन्ता, आदि के संकेत प्रदान कर रहे हैं।

सप्तम भाव में चन्द्रमा है और इसे मंगल पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। तथा राहु चलित होकर सप्तम भाव में आ गया है। अतः policy में कुछ परिवर्तन होंगे और आकस्मिक रूप से कुछ कठोर कदम उठाने पड़ेंगे।

वर्ष के आरंभ से ता० २७–८–६९ तक गुरु दशा है गुरु जन्म कुण्डली में लग्नेश है और मेष राशि में है, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। हर प्रकार के निर्णय अपने विवेक और इच्छानुसार स्वतंत्र रूप में करेंगे। यात्राएं प्रायः अधिक होगी। किसी भी प्रकार के विरोध की संभावनाएं बहुत कम हैं।

ता० २७–८–६९ रात में १०॥ बजे से शनि की दशा आरंभ होगी जो १ मास २७ दिन की है तथा २४–१०–६९ तक रहेगी। शनि वर्ष लग्न में ९ वें स्थान में नीच राशि गत है। और यह ही ७ वें स्थान का स्वामी है। फलतः छोटी मोटी यात्राएं बराबर चालू रहेंगी। तथा विरोधी पक्षों द्वारा कुछ समस्याएं उठाने का प्रयत्न किया जायगा। संभव है कि यह प्रतिष्ठा प्रश्न बन जावे मगर इस सम्बन्ध में शत्रु पक्ष को मुंह की खानी पड़ेगी कारण शनि षष्ठेश और सप्तमेश है अर्थात प्रतिद्वंद्वी पक्ष का व्ययेश लग्नेश है। व्ययेश लग्नेश का संयुक्त फल विरोधी पार्टी के लिये स्वंय हानि प्रदायक हो जाता है।

शनि जन्म कुण्डली में २ रे, ३ रे भाव का स्वामी है और ७ वें स्थान में शुक्र के साथ है। फलतः आर्थिक दृष्टि से ठीक है। छोटी २ यात्राओं का प्रदर्शक है और कूटनीतिक चालों को वढावा देने वाला है। कारण शनि जन्म में शुक्र के साथ में है और वर्ष कुण्डली में शनि शुक्र के नक्षत्र में है। शुक्र राजनीति में कूटनीतिक पक्ष का प्रभावशाली ग्रह है और यह वर्ष में मुंथेश है। मिथुन duel राशी में है लाभ स्थान में गया है। फलतः इस समय नीति निपुणता के कारण अपने लक्ष में सिद्धि प्राप्त करेंगे। सवाल यह है कि शनि अपने दशा काल में वक्री रहेगा अतः कोई भी कार्य सावधानी पूर्वक करना ही उचित होगा। वैसे "कालामृत" में नीच शनि का फल वक्री होने पर उच्च के समान भी बताया गया है।

ता० २४-१०-६९ रात में १०॥ बजे बाद से बुध की दशा १ मास २१ दिन की आवेगी जो १५-१२-६९ तक रहेगी। बुध जन्म और वर्ष कुण्डली से अपने ही नक्षत्र गत होने के कारण वलवान है। बुध जन्म कुण्डली में ७वें भाव का स्वामी है और वर्ष कुण्डली में रहे ११वें स्थान का स्वामी है। यह लग्नेश के साथ व्यय स्थान में गया हुआ है। बुध की दशा के समय ता० २-१२-६९ से १५-१२-६९ तक सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में भ्रमण करेंगे। ता० २९-११-६९ से ५-१२-६९ तक स्वयं बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में रहेंगे। अतः यह समय अधिक महत्वपूर्ण रहेगा। दूसरे वर्ष में बुध की राशियों में २ शुभ ग्रह गुरु शुक्र भी स्थित हैं तीसरे जन्म कुण्डली में राहु दशा गुरु भक्ति में बुध का प्रत्यन्तर ता० १९-८-६९ से ता० २२-१२-६९ तक रहेगा। इस प्रकार जन्म और वर्ष में दशाओं की समानता रहेगी अर्थात् बुध दोनों जगह देशाधिकारी बन जाता है। बुध का सम्बन्ध जन्म में भाग्येश सूर्य है और वर्ष में लग्नेश

सूर्य से बना हुआ है। इनकी स्थिति व्यय भाव में है और व्ययेश चन्द्रमा ७वें भाव में गया है जो लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है साथ-साथ चन्द्रमा भाग्येश मंगल से भी देखा जाता है। अतः यह समय परिवर्तन का सूचक है। साथ-साथ बुध लाभेश होने के कारण इच्छा पूर्ति का सूचक भी है अतः इस समय जो परिवर्तन होंगे तो वे मनोभिलाषा पूर्ति के द्योतक होने चाहिये। विशेषकर ता० २६-११-६६ से १५-१२-६६ तक का समय महत्वपूर्ण होना चाहिये।

शुक्र दशा—६-१-७० से ६-२-७० तक। स्वास्थ्य में निर्बलता, शत्रुओं पर विजय, मित्रों से सहयोग, अधिकार वृद्धि, इच्छा पूर्ति, एवं निर्णायक नीतियों का इच्छानुसार सफलता पूर्वक प्रयोग और उनका कार्य रूप में परिवर्तन। शुभम्॥

पाठक अपनी रुचि बतावें

हम भरसक प्रयास करते हैं कि ज्योतिष मार्तण्ड का प्रत्येक अंक पाठकों की रुचि का बने। फिर भी हम चाहते हैं कि पाठक अपनी रुचि से हमें अवगत करें ताकि हम उसकी पूर्ति कर सकें और इसके स्तम्भों में परिवर्तन कर सकें।

—सम्पादक

श्रीमान् मोहनलालजी सुखाड़िया की जन्म कुण्डली

—पं० लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी
राज्य ज्योतिषी ज्योतिषाचार्य सामुद्रिक शास्त्री

श्रीमान् मुख्य मंत्री राजस्थान श्री मोहनलालजी सुखाडिया वर्ष दिनांक ३१-७-१९६९=९ वर्ष प्रवेशांक ५४=९ है :

प्रथम वर्ष गांठ के उपलक्ष में नं. ९ स्वामी मंगल की शुभकामना लेकर भाग्यशाली वर्ष का आर्शीर्वाद और अभिनन्दन स्वीकृत कर आगे भविष्य के योगायोग लिख रहा हूं।

१. मघा नक्षत्र के प्रथम चरण पर जन्म आध्यात्मिक नवमभाव में सिंह राशि स्वामी सूर्य "ओ" स्वर आकाश तत्व विशुद्ध चक्र ब्रह्मनाडी का मोहनलालजी का नामांकन हुआ । और सायं अमृत वेला सोमवार को धनु लग्न पर जन्म ग्रहण किया। इस योग द्वारा जीव. शरीर का ग्रह बुध स्वनक्षत्री बनकर सूर्यवंशीय राजस्थान उदयपुर में पूर्वजन्म कर्मानुसार सूर्यचन्द्र नाडी के राशि सम्बन्ध योग द्वारा, राजयोगी होकर इस संसार चक्र में प्रविष्ट हुवे। जो अपना प्रभाव चिरंजीवी, नीरोग, काव्यरचना में समर्थ, ज्ञानवान, बुद्धिमान, राजमान, उत्तम वक्ता, शान्त प्रिय, सर्वहितकारी, तेजस्वी होकर श्रेष्ठ नेता पद प्राप्त करने के योग बनते हैं। मघा नक्षत्र स्वामी केतु की महादशा में जन्म भोग्य ६ वर्ष ५ मास ७ दिन, चंचल स्वभाव, पिता को गुप्त रीति से लाभ तथा अकस्मात कोई मानसिक चिन्ता व व्यय होना दूसरों की बातें समझने की बुद्धि, और खेल कूद में चित्त रहना, विद्याभ्यास का प्रारंभ होना, साथियों से आपस में झगडना और उन्हीं से प्रेम करने का योग बनता है।

१. धनुलग्न रेखाष्टक योग ३० स्वामी गुरु त्रिकोण, नवमांश उच्चस्थगुरु दशम भाव में होने से पूर्ण राजयोग बन रहा है। शुक्र पूर्णदृष्टि से लग्न भाव को देख रहे हैं और नवमांश में, शुक्र दिग्वली योग बनाकर पूर्ण दृष्टि से दशमभाव में मंत्री पदाधिकारी, राजमान नेता और सुन्दर विलास भवन निवास, वाहनादि सुख योग और जनता प्रिय शुक्र महादशा ता—८$\frac{१}{२३}$ से ८$\frac{१}{४३}$ के मध्य ही संसार राजयोग, विद्या प्राप्ति की ओर अग्रसर जनता के प्रिय इन योगों द्वारा ही प्रारंभ होती है।

३. ग्रहों की राशि अंशों द्वारा नक्षत्र स्वामी के योग और प्रभाव का निर्णय—

सूर्य—३।१४।५६।४४ पुष्य नक्षत्र स्वामी शानि का
प्रभाव रेखाष्टक सूर्य ३—

चन्द्र-४।१।०।५ मघा नक्षत्र स्वामी केतु का प्रभाव
रेखाष्टक चन्द्र २—

मंगल-५।११।२४।१३ हस्त ,, ,, चन्द्र ,, ,, ,,
रेखाष्टक मंगल ५-

बुध-३।१८।११।४४ अश्लेषा ,, ,, बुध स्वनक्षत्री
प्रभाव बुध ५—

गुरु-०।१२।१०।४४ अश्वनी ,, ,, केतु ,, ,,
रेखाष्टक गुरु ७—

शुक्र-२।१०।३०।३१ आर्द्रा ,, ,, राहु रेखाष्टक
शुक्र ३—

शनि-३।१।३१।५० पुनर्वसु ,, ,, गुरु ,, ,, शनि ३

राहु–६।५।५१।३१ उतराषाढा स्वामी सूर्य स्वनक्षत्री राशि रेखाष्टक ३०—

केतु–३।५।५१।३१ पुष्य स्वामी शनि स्वनक्षत्री रेखाष्टक २६—

परिवर्तनयोग–सूर्य कर्क राशि स्वामी चन्द्र, और चन्द्रसिंहराशि का स्वामी सूर्य–इन दोनों ग्रह सूर्य चन्द्र द्वारा परिवर्तन योग राजपक्ष का बनाता है। जो सूर्य महादशा ८$\frac{१}{४३}$ से ८$\frac{१}{४६}$ के मध्य में वर्ष ३२–३३ में परिवर्तन योग राजपक्ष में मान्यता संघर्ष, जनता में प्रवेश कार्यक्रम, उन्नति के योगों में वृद्धि, शनै–२ होने के साधन बनना। सूर्य पिता के लिये वर्ष ८।२०। रेखांश ३ के अनुसार रोगी व कष्ट होने का योग–तथा सूर्य अष्टमस्थ होने से पराये कार्य को करने वाले हों पिता की आज्ञा का उल्लघन करें। देश विदेश में भ्रमण करने के साधन बनें। और नेता पद प्राप्ति के साधन राहू रेखा ३० के योग से बनना प्रारम्भ हो, क्योंकि राहू जो सूर्य नक्षत्र पर होने और पूर्ण दृष्टि से सूर्य को देखने से भी परिवर्तन योग भाग्य वृद्धि राजयोग को बनाता है। सूर्य महादशा में संघर्ष के साथ जीवन में महत्व पूर्ण परिवर्तन योग बनता है।

४ चन्द्रांश परिवर्तन योग––चन्द्र भाग्य भाव में पिता के स्थान पर माता का भाग्योदय होना और पूर्व जन्म कर्मानुसार दोनों के सम्बन्ध योग से पुत्र का बुध शनि युक्त द्वारा भाग्यशाली योग बनना चन्द्राष्टक में वृषभ और तुला राशि पर ६ रेखाएं पड़ने से इस राशि वाले मनुष्यों से विशेष लाभ और सम्बन्ध व्यवसाय करने पर होता है। चन्द्र महादशा ता–८-१-४६ से ८-१-५६ तक चन्द्र सूर्य के सम्बन्ध योग द्वारा नेता पद, भाग्य वृद्धि, राजमान्य और जनता में स्त्री पुरुषों के प्रिय, मधुर भाषी और परोपकारी हों। शत्रुओं से विजयी, मित्रों और प्रजा के सहयोगी बनने का योग और उत्तरोत्तर उन्नति के साधन बनते जावें।

५ मंगल दशमस्थ भाव पर चन्द्र हस्त नक्षत्र पर स्थित होने से भाग्य वृद्धि, सेनाधिपति, कुल दीपकयोग बनता है। जनता के सहयोगी, वचन-बद्ध, मधुर भाषण से प्रजा का मुग्ध होना नवमांश में मेष राशि से स्वगृही केन्द्र सप्तमभाव में गृह पत्नी से कभी कभी मत भेद होना। मंगल महादशा ता–८-१-५६ से ८-१-६६ के मध्य तक जो मंगल रेखाष्टक ३६ द्वारा पूर्ण तीन योग बनते हैं।

१ मत्स्ययोग लग्न से पंचम गुरु और नवम चन्द्र से मत्स्य योग बना है इस योग द्वारा करुणा के समुद्र, धार्मिक, अत्यन्त ही मेधावी, बली, यशस्वी, विद्वान, और सुन्दर होते हैं।

२ राजपद योग–लग्नेश गुरु नवमांश कर्क दशमभाव में उच्चस्थ, शुभग्रह शुक्र की दृष्टि पूर्ण है। इस योग द्वारा राजस्थान के मुख्यमंत्री और प्रान्तीय शासक योग बनना।

३ श्री योग-द्वितीयेश शनि, नवमेश-सूर्य-दोनों की युति अष्टमभाव में होती है। इस योग द्वारा, प्रान्त की अध्यक्षता और मान्यता होना। आयु पर्यन्त धन का सुख और वाहनादि सुख रहेगा। परन्तु अष्टम भाव के योग से जीवन में संघर्ष और बिना कारण की मानसिक चिन्ताएं भी होती रहेगी। इस योग द्वारा सुख-दुःख समान भाव से रहेगा। मंगल की महादशा के योग श्रेष्ठ और वर्ष ५० वें तक अच्छा प्रभाव पड़ता रहा।

५ बुधग्रह–अष्टम भाव में अश्लेशा नक्षत्र का स्वामी बुध ही स्वनक्षत्री होने से बुद्धि तीव्र होने से सब कार्यो में सफलता मिल जाती है। परन्तु राजपक्ष में शत्रुओं द्वारा संघर्ष ज्यादा होना और उन्हीं से विजय प्राप्ति करने के साधन बन जाया करते हैं। अपना प्रभाव वर्ष १३, २५, ३७ तथा ४६ में श्रेष्ठ फल और ८।२०।३२ में मध्यम

६ गुरुग्रह–पंचम भाव में अश्वनी नक्षत्र स्वामी केतू के प्रभाव में जाने से सन्तान सुख का योग साधारण बनता है। और नवमांश में उच्च का होने से राज वैभव और मंत्रीत्व योग बनाता है। इस गृह के वर्ष १६।२२।२८।३४।४०।४६।५२।५८ श्रेष्ठ हैं।

७ शुक्रग्रह–सप्तम भाव में राहु नक्षत्र का जिससे षष्टास्टक योग बनता है। इस योग द्वारा स्त्री पक्ष का सुख विलासिता आदि का सुख नवमांश से ४ भाव द्वारा प्राप्त होता है परन्तु मत भेद आदि बना रहे। स्त्रियों से प्रेम व्यवहार आदि का श्रेष्ठ योग बनते रहेगे। इसकी महादशा ता –२८-१-४३ तक उपरोक्त धनु लग्न के फलादेश लिखा चुका हूं।

८ शनिग्रह–पुनर्वसु नक्षत्र के स्वामी गुरु ग्रह में अष्टम भाव पर स्थित है और मंगल को पूर्ण दृष्टि से दशमभाव को देख रहा है। इस योग द्वारा भी राजयोगी दीर्घायुषी बनाता है।

६ राहू ग्रह–उत्तराषाढा नक्षत्र में जिसका स्वामी सूर्य के प्रभाव में है और दोनों ही आपस में पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। धन भाव का रेखाष्टक योग ३० है। इस योग द्वारा धन का संग्रह होना और दीन दुःखी तथा परोपकारी कार्य में व्यय अकस्मात होने का योग बनता है। राहू महादशा में राहू की अन्तर्दशा ताः- ८-१-६६ से २०-६-६८ तक रही इस के मध्य में काफी संघर्ष, वाद विवाद, धन व्यय, मान अपमान और शत्रुओं का सामना करना पड़ा परन्तु सूर्य की आत्मीय शक्ति से विजयी, राजपक्ष मुख्य मंत्री का योग बना।

१० राहु में गुरु अन्तर्दशा ताः–२०-६-६८ से १४-२-७१ तक रहेगी इससे राजपक्ष श्रेष्ठ रोग एवं शत्रु नष्ट होना, द्रव्य की प्राप्ति के श्रेष्ठ साधन, गृह में मंगल कार्य व उत्सव, धार्मिक कार्यों में रुचि और उन्नति कार्य के योग बनना।

११ राहु में शनि अन्तर्दशा के योग ता-१४-२-७१ से २०-१२-७३-इस दशा के मध्य विदेश भ्रमण यात्रा योग बनेगा मंत्रीत्व पद पर शत्रुओं का विरोध उत्पात प्रपंचो कार्य चलेंगे। परन्तु बड़ी शक्ति के साथ कार्य में सफलता मिलेगी। द्रव्य का खर्च विशेष होगा।

उस समय सुदर्शन कवच के पाठ १००८ व हवन कार्य से विघ्न दूर होकर कार्य में सिद्धि होगी।

१२ राहु महादशा का योग ता २०-१२-७३- से ८।१।८४ तक रहेगी जो वर्ष ५७ से ६५ श्रेष्ट और वर्ष ६६-६८ मध्यम रहेगे, बाद में गुरु महादशा में पुत्र पौत्रादि सुख शान्ति रहेगी।

★ **वर्ष प्रवेश**

वर्ष प्रवेश-५४=६ अंक स्वामी मंगल प्रवेश- वर्ष ता३१+७+१९६६=३६=९ अंक स्वामी मंगल इस वर्ष में नं० ९ पूर्णांक सर्व व्यापी स्वगृही मंगल पराक्रम स्थान पर सर्व श्रेष्ठ योग बना रहा है।

गुरु लग्न में सर्व कार्य सिद्धि, व अरिष्ट को दूर करता है।

शुक्र राजस्थान पर होने से मंत्री पद पर इस वर्ष में स्त्री पक्ष द्वारा सब कार्यो में सिद्धि होगी।

मुंथा नवम भाव में भाग्य वृद्धि और राजपक्ष में शान्ति प्रद रूप रहेगा।

★ **वर्ष लग्न**—कन्या-गुरु, बृश्चिक मंगल, कुम्भ चन्द्र-राहु, मेष शनि, बृषभ मुंथा, मिथुन शुक्र, कर्क सूर्य बुध, सिंह केतु,

जन्म लग्न-—धनु, मकर राहु, मेष गुरु, मिथुन शुक्र, कर्क शनि सूर्य बुध केतु, सिंह चन्द्र,-कन्या मंगल,

नवमांश लग्न—तुला, बृश्चिक सूर्य, धनु बुध, मकर शुक्र, कुम्भ राहु, मेष चन्द्र मंगल, कर्क गुरु शनि, सिंह केतु,

चन्द्र-राहू छटे भाग में शत्रु वृद्धि कर, नष्ट करते रहेंगे।

शनि नीच राशि का अष्टम भाव में कुछ उपद्रव और अशान्ति, तारीख १-१२-६९-३१-१२-६९ १-३-७०-३१-३-७० में उपद्रव उत्पात शत्रु चौरादि भय, अशान्ति का वातावरण व्याप्त होगा।

इस वर्ष के मास १।२।३।४।७।९।१०।११ अच्छे रहेंगे और मास ६।८।१२ मध्यम तथा ५।११ साधारण होंगे। वर्ष में मंगल का प्रभाव विशेष रूप से खराव वातावरण को दवाये रहेगा। सेना की आवश्यकता रखेगा और पराक्रम द्वारा सब कार्य सिद्ध होते रहेंगे। शुभ कामना—

पुण्येन हन्यते व्याधि=पुण्येन हन्यन्ते ग्रहा=।
पुण्येन हन्यते शत्रु=यतो धर्मस्ततो जय=॥



श्री मोहनलालजी सुखाड़िया का अध्ययन

(सामुद्रिक विज्ञान के आधार पर)

— घासीलाल 'मानव'
बी० ए०

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया भारत के चोटी के नेताओं में से एक है। राजस्थान को उनका स्थायी प्रतिनिधित्व काफी समय से मिल रहा है। उनके नेतृत्व में राजस्थान प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी आपने धैर्य और साहस का परिचय दिया है। इन सब बातों से ज्ञात होता है कि उनके भाग्य की रेखायें अति प्रबल हैं और उनको प्रगति की ओर ले जा रही है।

श्री मोहनलालजी सुखाड़िया की जन्म कुण्डली सामुद्रिक विज्ञान के आधार पर (ग्रीस पद्धति)

१ वृ०	३ शु० श०	५ च०	७	९	११
मच्छ रेखा की गति △	भाग्य रेखा की गति △ □	हृदय रेखा की गति ▷	शुक्र की मुद्रिका की गति ∠	नाक, कान व भाल के लक्षण △	अंगुलियों के लक्षण △
२	४ सू० के० बु०	६ मं०	८	१० श०	१२
मणिबंध की गति □ L	आयु रेखा की गति △	मस्तिष्क रेखा की गति △	दोनों हाथों का आकार L	यव व पर्वतों की गति △ □	शरीर के अन्य अंगों के लक्षण ◁△□

श्री सुखाड़ियाजी के मणिबंध अधिक गहरे हैं और स्पष्ट हैं। इससे आपका राजनैतिक जीवन अधिक पेचिदा होते हुये भी सरल बन गया हैं। मणिबंध में त्रिभुज और सामानान्तर चतुर्भुज अधिक है। इससे जो भी उनके विरोध करने वाले या तो प्रकृति की गोद में समा गए हैं या उन्होने राजनैतिक जीवन से सन्यास ले लिया है।

मच्छरेखा से ज्ञात होता है कि आपके भाग्य का उदय श्री इन्दुबालाजी के पाणि ग्रहण के पश्चात् होता है। श्री सुखाड़ियाजी के भाग्य के उदय में इन्दुबालाजी के ग्रहों का अपूर्व योग है।

श्री सुखाड़ियाजी की भाग्य रेखा मच्छ रेखा से आरम्भ नहीं होती है बल्कि जीवनरेखा से ६०° अंश का कोण बनाती हुई बनती है। इससे ज्ञात होता है कि आपके जीवन में संघर्ष अधिक रहे हैं। और आगे भी रहने की सम्भावना हैं। ऐसे ही चिन्ह श्री

लोकमान्य तिलक तथा अर्जुनलाल जी सेठी के थे। भाग्य रेखा से ज्ञात होता है कि अर्थ का संचय जिस प्रकार का होना चाहिए उस प्रकार का न होकर आय से व्यय अधिक बना है। अर्थ का अपव्यय भी रहेगा। चल और अचल सम्पति से जिस प्रकार का लाभ आपको मिलना चाहिए उस प्रकार का न मिल पावेगा। **आयु के ५८ वर्ष ७ माह** में इस विषय में अकल्पित विवाद भी बढ़ने की सम्भावना हो सकती है। भाग्यरेखा के साथ समानान्तर चतुर्भुज आपके अच्छे फल के द्योतक हैं। जिस किसी भी व्यक्ति के ऐसे चिन्ह होते हैं ऐसा पाया गया है कि उसके प्रतिपक्षी अति प्रबल होते हुए भी उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते ऐसे ही चिन्ह मुगल सम्राट अकबर तथा सिकन्दर के थे। हिटलर के इसके साथ समलम्ब त्रिभुज था इसलिए उसके उत्थान में उसका पतन निहित था।

लेकिन श्री सुखाड़ियाजी के ऐसा योग नहीं है अत: इनका राजनैतिक पतन नहीं है। भाग्य रेखा के सामने ८०° अंश का कोण बनाता हुआ त्रिभुज भी है। यह इस बात की सूचना देता है कि इनके भाग्य में स्त्री जाति का विशेष सहयोग रहेगा। स्त्री समाज में इनकी मान प्रतिष्ठा बढे अथवा इनके कल्याण के लिए विशेष साधन जुटावे। लेकिन प्राय: देखा गया है कि जीवन के अंतिम दिनों में ऐसे चिन्ह वालों को स्त्री जाति से धोखा भी हो सकता है। भाग्य रेखा के अनुसार आपके जीवन की रेखायें आपको ख्याति तथा समाजिक प्रतिष्ठा अवश्य देगी। लेकिन ऐसे चिन्ह वालों का देखा गया है कि जीवन के अंतिम दिनों में वे लोग मोह, माया, मत्सर से अधिक दूर होकर जीवन के मोड़ को विरक्ति की ओर ले जाते हैं। भाग्यरेखा से हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि राजनैतिक क्षेत्र में इस पहलवान को पछाड़ने वाला कोई भी नहीं रहेगा। यह हो सकता है कि आप स्वयं राजनैतिक जीवन से सन्यास लेकर एकान्तवास करें। जीवन की रेखायें अब आपका विस्तृत क्षेत्र बनाने जा रही है। अब तक तो राजस्थानी आपको राजस्थान के सीमित क्षेत्र में ही रहने के लिए मजबूर करते रहे। लेकिन अब भाग्य की रेखायें हमको यह सूचना दे रही है कि आप अब सम्पूर्ण भारत का नेतृत्व करने जा रहे हैं।

हृदय रेखा के साथ में ३५° अंश का कोण बनाती हुई दो या इससे अधिक रेखायें इस बात को भी सूचना दे रही है कि सन्तान पक्ष में आपको अधिक फल की सम्भावना नहीं है। सन्तान आपके अधिक ख्याति वाली न होगी। हो सकता है कि सन्तान की ओर से आपके जीवन के अंतिम दिनों में मानसिक चिन्ता भी रहे। किसी सन्तान को शारीरिक व्याधि व पारिवारिक कष्ट भी होना सम्भव हो सकता है।

आयुरेखा आपकी अधिक गहरी है तथा उसके पास त्रिभुज व समानान्तर चतुर्भुज भी है। जिस भी व्यक्ति के इस प्रकार के चिन्ह हो तथा जीवन रेखा से ४५° अंश के कोण बनाती हुई रेखायें हों उनकी प्राय: देखा गया है कि मृत्यु हृदय रोग से होती है।

आपके मंगल व अमानिका के जोड़ में समलम्ब त्रिभुज है। अक्सर ऐसा पाया गया है कि जिस भी व्यक्ति के ऐसे चिन्ह हों उसकी स्त्री की मृत्यु उससे पहले होती है।

लौह पुरुष श्री सुखाड़ियाजी के शरीर के अन्य अंगों के फलों का विवरण विषय विस्तार से न करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आपकी रेखाओं व शरीर के अन्य अंगों में राष्ट्र के हित का संचार हो रहा है जो राष्ट्र को प्रगति की ओर ले जावेगा।

ज्यौतिष की स्वर-विज्ञान शाखा के आधार पर प्रस्तुत

श्री "मोहनलालजी सुखाड़िया" का भूत और भविष्य फलादेश

—श्री केदारदत्त जोशी
ज्योतिषशास्त्राचार्य

राजस्थान ज्यौतिष अनुसन्धान केन्द्र जयपुर के प्रमुख पत्र, "ज्यौतिष मार्तण्ड" में प्रकाशनार्थ मांगे गये इस लेख में श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया, मुख्य मन्त्री, राजस्थान की कुण्डली का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। दशा विचार के लिए केतु का भोग्य ६।६।१० भी दिया गया है, जिसका गणित एवं फलित ज्यौतिष के अनुसार फलादेश इस लेख के अन्त में दिया गया है।

ज्यौतिष का ग्रह गणित सिद्धान्त नितान्त वैज्ञानिक है, और यह भी उसी का फल है कि मानव का प्रथम चरण चन्द्र मण्डल के धरातल पर पड़ चुका है, फलित ज्यौतिष में फलादेश के अनेक विकल्पों तथा विचित्र विभिन्नताओं को देखकर फलित ज्यौतिष के प्रति मेरी आस्था उत्तरोत्तर शिथिल होती जा रही है। मेरे विचार से आचार्य वराहमिहिर के पश्चात् आज तक जितने भी फलित ज्यौतिष विषयक ग्रन्थ लिखे गये हैं वे सब एक ही ढांचे के हैं। उनमें नयी शोध का समावेश रत्तीभर भी नहीं हुआ है। उन ग्रन्थों में लेखकों के स्वकल्पित मनगढ़न्त और अनेक विध वाग्जाल के कारण आज फलित ज्यौतिष की वैज्ञानिकता निरस्त हो चुकी है। जिस तरह वैज्ञानिक उपकरणों और गणितीय आधारों से किये गये मौसम आदि विषयक भविष्य फल अधिकांशतः सही उतरते हैं, इस तरह फलित ज्यौतिष के आधार पर किये गये फलादेश उतनी मात्रा में सही सिद्ध नहीं हो पाते।

अतः शास्त्रों में कहीं पर, "जलदे ज्यौतिषं मिथ्या" (बादल बरसने के विषय में ज्यौतिष शास्त्र का फलादेश झूठा है) कहकर फलित ज्यौतिष के फलादेश के सही न होने की ओर संकेत किया है।

इस प्रकार अन्त में, मैं बहुत शोध के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि इस विषय में समय और बुद्धि का अधिक व्यय उचित नहीं है। किन्तु फलित ज्यौतिष की एक वैज्ञानिक शाखा स्वर विज्ञान है। भारतीय ज्यौतिष की इस शाखा में केवल व्यक्ति विशेष के नाम के आधार पर स्वर ज्ञात करके एवं उन स्वरों का काल से समन्वय करके उस व्यक्ति के शुभाशुभ भविष्य विषयक विचार के लिए कुछ मौलिक सिद्धान्त उपस्थित किये गये हैं। यद्यपि इस प्रक्रिया में भी यथार्थ फलादेश कुछ संशयास्पद ही रहता है तथापि मैंने अपने एक लघु निबन्ध ग्रन्थ में (जिसकी पाण्डुलिपि "गायकवाड़ ग्रन्थालय" काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में सुरक्षित है) सन् १९४० में स्व० ब्रह्मर्षि पं० महामनामदन-मोहन जी मालवीय के भविष्य-विषयक जो कतिपय फलादेश किये थे उनमें से प्रायः ३।४ फलादेश यथार्थ सिद्ध हुए थे और विशेषतया उनकी आयु के

विषय में किया गया गणित सम्मत फलादेश तो पूर्णत: सही निकला था।

उसी तरह इस लेख में भी स्वर विज्ञान की प्रक्रिया से श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया के स्वरों उनके भूत और भविष्य जीवन की घटनाओं पर संक्षेप में प्रकाश डालने की चेष्टा कर रहा हूं, यद्यपि संपादक मण्डल ने श्री सुखाड़ियाजी की जन्म कुण्डली का अध्ययन इस स्वर विज्ञान की पद्धति से करने का कोई संकेत नहीं दिया है, तथापि मेरे विचार से उक्त प्रयोजन के लिए भारतीय ज्योतिष की स्वर विज्ञान शाखा के आधार पर किया गया अध्ययन और फलादेश भी सम्पादक मण्डल के आशय के पूर्णतया अनुकूल ही पड़ेगा। मैं विद्वान ज्यौतिर्विदों और पाठकों से यह भी अनुरोध करुंगा कि वे ज्यौतिष शास्त्र की इस शाखा की ओर भी ध्यान दें। और इसमें दिलचस्पी लें। अस्तु स्वर शास्त्रानुसार फलादेश के लिए श्री सुखाड़ियाजी का नाम केवल मोहनलाल ही पर्याप्त हैं।

''प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दित'':
(नरपति जयचर्या)

''नामाखिलस्य व्यवहार हेतु: शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः।
नाम्नैव कीर्त्तिं लभते मनुष्यः ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म ॥''
(पीयूष धारा)

(१) **तत्काल में**—तत्काल प्रश्नकर्त्ता की जिसासा के लिये, ''मोहनलाल'' नाम के व्यक्ति का मात्रा स्वर ओ होता है इसके आधार से ''ओ'' वालस्वर, ''अ'' कुमारस्वर, ''इ'' युवास्वर, ''उ'' वृद्धस्वर और ए मृतस्वर होगा। मोहनलालजी की जिज्ञासा वश किसी समय के उदित स्वर की वाल कुमार आदिक अवस्था से उस समय पर ही उनके प्रश्न या उनकी जिज्ञासा का उत्तर या फलादेश उस समय दिया जा सकेगा।

(२) **तिथि में**—म्+ओ+ह्+अ+न+अ+ल्+आ+ल+अ--इस प्रकार मोहनलाल नाम का वर्णस्वर ''इ'' होता है। अत: मोहनलाल नाम के व्यक्ति की वर्षभर की द्वितीया सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां वाल्य जीवन की सी सदा शुभावह रहेंगी। तथा वर्षभर की तृतीया अष्टमी त्रयोदशी तिथियां कुमार संज्ञक होंगी। ये तिथियां सुखाड़िया जी के लिये सुखमय रहेंगी। चतुर्थी-नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां (वर्षभर की) युवा स्वरोदय की होती हैं, जो विशेष लाभ, हर्ष सम्मान और विशेष विजय की सूचिका आज तक रही होंगी आगे भी रहेंगी।

पञ्चमी दशमी तथा पूर्णिमा या अमावस्या तिथियां कुमार संज्ञक कार्यों में निरुत्साह जनक अवनति कारक तथा मानसिक अशान्ति प्रद भी रहेंगी।

प्रतिपदा षष्ठी तथा एकादशी तिथियां तो सुखाड़ियाजी को विशेष दुख शोक हानि और उद्वेग जनक हैं। सम्भवतः इन्हीं तिथियों में कोई तिथि आयु पूर्ति पर निधनप्रद भी हो सकती हैं। (वर्ष भर की तिथियों से मतलव समझिये)

(३) **प्रत्येक पक्ष में**—सुखाड़िया जी का इह स्वर ''इ'' सिद्ध होता है कृष्णपक्ष में ''उ'' स्वर का उदय इनके पक्ष स्वर से पञ्चम होता है अतः वर्षभर के कृष्ण पक्ष इनके अनुकूल न होकर कार्य वाधक, प्रतिकूल होते हैं।

वर्षभर के—शुल्क पक्ष इनके लिये शुभ सूचक सम्मानवर्द्धक तेज औ धी-धन वर्द्धक होते हैं।

(४) **वर्ष के प्रत्येक मास में**-जीवस्वर साधनिका से—

म्+ओ+ह+अ+न्+अ+ल्+आ+ल+अ

५+१३+४+१+५+१+३+१+३+१=३७÷५ शेष=२=इ-

इ वाल स्वर से—आषाढ़ श्रावण आश्विन, प्रत्येक वर्ष के मास साधारण शुभ सूचक होते हैं।

उ कुमार स्वर से—वर्षभर के चैत्र और पौष मास ½ मात्रा में अनुकूल होंगे।

ए-युवा स्वर—ज्येष्ठ कार्तिक पूर्ण अनुकूल तथा यश लाभ और सम्मान वर्द्धक रहेंगे।

ओ-वृद्ध स्वर—के माघ और फाल्गुन मास निराशा जनक तथा मानसिक सन्तुलन अव्यवस्थित रखेंगे।

अमृत स्वर के भाद्रपद मार्गशीर्ष और वैशाख महीने सभी वर्षों में नेष्ट, भय भीति और हानि प्रद होंगे।

(५) वर्ष की प्रत्येक ऋतु जिसे स्वरज्ञों ने ७२ दिन की कहा है उसमें नाम के मोहनलाल से राशयंश स्वर "इ" स—

इ-वाल स्वर—२७ जून से ६ सितम्बर तक—प्राकृतिक स्थिति।

उ-कुमार स्वर—१० सितम्बर से २१ नवम्बर तक अभ्युदय के अनेक शुभ द्वारों से शुभोदय का मार्ग प्रशस्त।

ए-युवा स्वर—२२ नवम्बर से ३१ जनवरी तक—प्रत्येक दिशा से ईप्सित पूर्ति और अभ्युदय, पूर्ण सफलता, विजय।

ओ-बृद्ध स्वर—१ फरवरी १२ अप्रेल तक—उत्साह में ह्रास, एवं कार्य में विफलता का संकेत।

अ-मृत स्वर—१३ अप्रेल से २६ जून तक—अनेक प्रकार के अनिष्ट और संघर्षो से परेशानी।

(६) नक्षत्र स्वर जो प्रत्येक वर्ष के प्रत्येक उत्तरायण (निरयण) १४ जनवरी से १६ जुलाई तक अ स्तर चलता है, मोहनलाल नाम के 'इ' नक्षत्र स्वर से पाचवां अनुकूल न होने से ये ६ महीने जीवन चर्या में कठिन परिस्थितियां पैदा करते हैं। परिणाम सुखाय और शुभाय भी होता है। तथा १७ जुलाई से १३ जनवरी तक "इ" स्वर से ये समय अनेक प्रकार से सुख ऐश्वर्य और सम्मान लाभ के साथ साथ विजय प्रद भी रहेगा।

(७) पिण्ड स्वर—म् + ओ + ह् + अ + न् + अ + ल् + आ + ल् + अ—

२ + ५ + ४ + १ + २ + १ + ५ + १ + ५ + १ = २७ ÷ ५ शेष २ = इ से सन १९६८ के अवसान सन ७० की समाप्ति तक जीवन में विभिन्न और विचित्र प्रकार के अनेक नवीन काल्पनिक कठिन से कठिन सङ्घर्षों का सामना करते हुये भी ये समय पूर्ण सम्मान वर्द्धक एवं विजय श्री प्राप्ति में सफल होगा।

(८) योग स्वर—५ + २ + २ + २ + २ + २ + २ = १७ ÷ ५ = शेष २ = इ योग स्वर से ता. १० दिसम्बर सन १९६१ से ताः १० अक्टूवर सन १९७३ तक द्वादश सम्वत्सर की स्वर दशा में—ओ युवा स्वर की समाप्ति तथा वृद्ध स्वर के प्रारम्भ की है, ज्ञान वृद्धि, अनुभव वृद्धि, बुद्धि में विशेष गाम्भीर्य, सम्मान आदि शुभ ऐश्वर्य-प्रद राजयोग के साथ साथ विशेष उदार हृदय के परिचय से समाज में स्तुत्य आदर और दीक्षा-दान-मन्त्रणा में विशेष कौशल से ख्याति प्राप्ति का शुभ योग है।

प्रायः १०-१०-७३ से १०-८-८५ तक उक्त प्रगतियों में अवरोध नैराश्य तथा वीतराग भाव की मनोवृत्ति के साथ-१०.८-८५ से एक प्रकार का सही अर्थ का सन्यास या वीतराग की भावना या अनेक बन्धनों से मुक्ति के साथ ही शान्ति का अनुभव होगा, जन्मकुण्डली की दशा से ११-१२-६६ से ११-२-८४ तक राहु दशा में २३-४-६८ तक राहु में राहु की अन्तर्दशा अत्यन्त संघर्षमय बीती होगी २४-४-६८ से १७-९-७० तक राहु में गुरु की

अन्तर्दशा में सम्मान लाभ, गृह स्त्री का सुख शारीरिक सुख और मानसिक सुख के लिए विशेष शुभोदय कारिका होती है और होगी।

इसी प्रसंग में मैं उपर्युक्तज्यौतिःशास्त्र की दोनों शाखाओं के फलादेश के अतिरिक्त अपनी अन्तरात्मा की अनुभूति के आधार पर यह उल्लेख करना चाहता हूं कि श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया के कुल की उन्नति में किसी ईश्वरीय शक्ति का हाथ रहा होगा, जिसका कोई प्रतीक देव-प्रतिमा या मणि या किसी शुभ चिन्ह के रूप में, उनके घर में होना चाहिये। उनके पितामह या पिता में से किसी एक का जीवन अत्यन्त तपोमय रहा होगा तथा उनमें से किसी एक को किसी महान् सन्त का दर्शन और उपदेश लाभ हुआ होगा। सुखाड़िया जी के अभ्युदय में उनके पिता पितामह की साधना और पुण्य का भी योगदान रहा होगा। माता या पिता में से किसी एक का वियोग भी सुखाड़िया जी को प्रायःबाल्य जीवन में सहना पड़ा होगा। इनकी बाल्य अवस्था में प्रायः एकबार ऐसी विषम अवस्था आचुकी थी जिसमें कि इनकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी होती और शायद उन्हें कुछ समय के लिये परमुखापेक्षी भी बनना पड़ा होता किन्तु सुदैव से यह सम्भावना नाममात्र ही घटित हुई और वहीं से सुखाड़िया जी स्वावलम्बी और कर्मठ बन कर जीवन के संघर्षों से जूझते हुए उच्च आदर्शों के पथ पर सफलता और कीर्ति लाभ के साथ अग्रसर होते रहे। इति।

इस प्रकार अगाध स्वर विज्ञान को सहायता से सागर तट की बालू तक हुई पहुंच (Approach) की तरह ही मोहनलालजी सुखाड़िया का यह फलादेश किया गया है। आशा है यह फलादेश यथार्थ के निकट होगा। और सम्पादक मण्डल से इस बात के लिए विशेष अनुरोध है कि वे श्री मोहनलालजी सुखाड़िया, मुख्यमंत्री राजस्थान से इस फलादेश को सत्यता की परख कराकर मुझे अवगत करावें।



आवश्यक:—जिन महानुभावों ने अभी तक वार्षिक शुल्क आठ रुपये नहीं भेजे हैं कृपया शुल्क भेजने की शीघ्र अनुकम्पा करें—

व्यवस्थापक

ज्यौतिष मार्तण्ड

के ग्राहक बनकर तथा बनाकर इसके प्रचार कार्य में सहयोग दें।

—सम्पादिका

सुखाड़ियाजी की कुण्डली के ग्रह

—श्याम सुन्दर ज्यौतिषी

राजस्थान के मुख्य मंत्री महोदय की कुण्डली को अवलोकन करके एक बात का पता विशेष रूप से लगता है कि केतु ग्रह के लिये ज्योतिष शास्त्र में जो उत्तेजक शब्द कई स्थलों पर प्रयोग किया गया है वह सत्य है। एक दूसरे महत्व पूर्ण सिद्धांत की सत्यता का भी प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है जिसका परिचय यह है कि लग्न तथा लग्नेश की शक्ति ही कुण्डली की वास्तविक क्षमता का ज्ञान कराती है। केन्द्र त्रिकोणेश की युति चाहे वह दु:स्थान में ही क्यों न हो कुछ न कुछ चमत्कार करती है तथा विशेषतः यदि युति नवमेश एवं दशमेश की हो तो वह सर्व श्रेष्ठ केन्द्र त्रिकोणेश युति (राजयोग कारक) मानी जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में तीन प्रमुख विधान हैं। प्रथम है पाराशरी सिद्धांत अनुसार किसी ग्रह का शुभाशुभ स्थानेश अनुसार शुभ-अशुभ। दूसरा है ग्रह का बल, जो विशेषतः नवांश एवं षष्ठयांश के द्वारा निर्णय करने मात्र से भी अपनी शक्ति का अनुमान करा देता है एव तीसरा विधान है ग्रहों की परस्पर युति तथा दृष्टि।

ज्योतिष एक गोरख धंधा है तथा इसका सर्वज्ञ होने का दावा हम नहीं कर सकते किन्तु उपरोक्त विधि विधान को छोड़ कर यदि एक बात का भी ध्यान रख लिया जावे तो पर्याप्त सफलता प्राप्त हो सकती है। वह विधान है किसी ग्रह का नवांश बल। शायद आप मेरी बात से सहमत नहीं होंगे किन्तु ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ इस बात को जानते हैं कि ज्योतिष शास्त्र के आचार्यों ने नवांश को प्रमुखता दी है। ग्रह चाहे दुष्ट स्थान का स्वामी भी क्यों न हो वह यदि नवांश बली है तो अनिष्ट की संभावना नगण्य समझें। यदि नवांश वली ग्रह शुभ अशुभ दोनों प्रकार के भावों का स्वामी हो तो वह निश्चय पूर्वक कुछ न कुछ श्रेष्ठ फल ही करेगा।

एक सिद्धांत और भी है जो प्रमुख माना जाता है वह यह है कि जो भाव अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो अथवा सौम्य से युक्त दृष्ट हो वह श्रेष्ठ फल कारक होता है। यह सिद्धांत बहुत उपयोगी एवं चमत्कारी तथा सर्व मान्य है। अब इन प्रमुख सिद्धांतों के प्रकाश में यदि सुखाड़ियाजी की कुण्डली पर विचार करें तो इस कुण्डली में गुरु (उच्चनवांशी) प्रमुख कारक ग्रह है। द्वितीय कारक ग्रह भौम (मंगल) है जो स्व नवांशी है। वैसे बुध-सूर्य भी मित्र क्षेत्री हैं। शुक्र भी मित्र क्षेत्री है। चन्द्रमा सम नवांश में है।

गुरु की लग्न तथा भाग्य पर दृष्टि एक श्रेष्ठ भाग्योदय एवं सर्वांगीण उन्नति कारक योग है तथा इस योग को तीव्र फल दायी बनाया है गुरु के उच्च नवांशी बल ने। यदि गुरु उक्च नवांश में न होता तो इतनी प्रमुखता प्राप्त होनी कठिन थी।

उधर दशमस्थ भोमे ने पञ्चमेश होकर कर्म, राज्य स्थान को पुष्ट किया है। इसकी पुष्टि भी मंगल के मेष नवांशी होने से ही हुई है। यदि मंगल निर्बल होता तो राज्य सत्ता की प्राप्ति कठिन थी।

साथ ही नवमेशदशमेश की युति (प्रबल राजयोग) भी उच्च स्थिति की परिचायक है। यदि नवमेश या दशमेश नीच या शत्रु नवांश में होते तो राजयोग भंग हो जाता परन्तु वे दोनों भी स्वस्थ स्थिति में है तथा विशेषतम बात यह है कि केतु के सहयोग ने इस को उत्तेजना दी है तथा श्री सुखाड़िया को उनके भाग्य ने इस गौरव शाली पद पर बैठा दिया है।

मैंने इस लेख के आरम्भ में तीन विधानों की चर्चा की थी उन के आधार पर ही मैंने संक्षेप में अपने विचार प्रकट किये हैं। ज्यौतिष में ऋषियों के सिद्धांतों में भिन्नता है किन्तु नवांश के बल को प्रमुखता देने में सब एक मत हैं अत आप केवल नवांश बल पर विचार करते रहें तो आपका ज्योतिष पर विश्वास दृढ होता जावेगा।

●

वार्षिक ग्राहकों के लिये सूचना

दिसम्बर तक बने हुये वार्षिक ग्राहकों को प्रथम एवं द्वितीय अंक उनकी सेवा में भेज दिया गया है। उनसे नम्र निवेदन है कि अंकों की प्राप्ति की सूचना देने का कष्ट करें।

व्यवस्थापक

सहयोगियों से अपील

मान्यवर

ज्यौतिष मार्तण्ड के तीनों अंक आपने देख लिये हैं यदि ये अंक आपको पसन्द आये हों तो निश्चय ही ज्यौतिष विज्ञान के प्रचार- में आपके सहयोग की हम आकांक्षा करते है आप अपने क्षेत्र के पुस्तक विक्रेताओं, न्यूज पेपर एजेन्टों को इस पत्रिका की जानकारी दें और इसे मंगाने के लिये कहें, हम २५ प्रतिशत कमीशन काट कर उनको वी. पी. पी. द्वारा भेज देंगे। वी. पी. पी. का खर्च भी हम वहन करेंगे—अब हम अवलोकनार्थ ज्यौतिष मार्तण्ड को प्रतियां भेजने में असमर्थ है।

व्यवस्थापक

Hon. Shri Mohanlal Sukhadia
Chief Minister of Rajasthan

—Daivagna Ratna, Vidya Visarada
Divakaruni Venkata Subba Rao

I am happy to note that Jyotish Martand of Jaipur is bringing out a special number devoting to the horoscope of Shri Mohanlal Sukhadia, the Honourable Chief Minister of Rajasthan. I consider it an honour to be addressed to contribute an article for the purpose. Vide this article I propose to bring out the highlights of the chart of the popular leader who has been devoting his life for uplift of the backward state and its people.

	Jupiter		Venus Saturn
			Sun Mercury Ketu
Rahu	RASI		Moon
Lagna			Mars

Details of Birth :—

Shri Mohanlal Sukhadia was born on Monday the 31st July 1916 at 5.22 P. M. at Udaipur (date furnished by Shri D. D Pande General Secretary of Rajasthan Astrological Research Study Circle. D. 19 Ganesh Marg Bapu Nager Juipur)

On verification with Nadi rectification of birth it is found that time of birth was 5. 34 P. M. (I. S. T.).

A perusal of Bhava chart erected for the time of birth reveals Rahu in Lagna, Jupiter in the fourth Bhava, Venus, Saturn, & Ketu in the fifth Bhava, Sun, Mercury and Moon in the eighth Bhava and Mars in the ninth Bhava. Thus it would be

	Moon Mars		Saturn
Rahu			Jupiter
Venus	NAVAMSA		Ketu
Mercury	Sun		Lagna

seen that as many as five planets are positioned in different Bhavas as compared to Rasi chart.

Lagna at the time of birth is in Amrutha Shastyamsa while Dasama Bhava is

located in kinneramsa. Both are highly auspicious. Lord of Lagna Jupiter occupies Maheswaramsa, while Lord of the tenth Bhava occupies Vishnvamsa. The Native is running Rahu dasa at present. This planet having secured six auspicious vargas had attained Paravatamsa. All the planets with the exception of Saturn and Rahu are placed in favourable Taras.

The native was born in Akash Tatwa. This is considered according to Upanishads as the primary origin of all other Tatwas being the seat of Electricity in Man governing the brain and nervous system. Jupiter governs the tatwa and the qualities governed by him being optimism cheer, generosity, expansion, fullness, abundance and the magnetic 'aura' that surrounds every living creature. The electro magnetic waves of light generated by the sparks of the Sun sent back to earth from Jupiter, the lord of Lagna on to the earth (the native) impart recreative energy resulting in expansion and vibration. Generally natives born under the influence of this tatwa exhibit variations in their temper, mind and aptitudes. when the environmental conditions are congenial and promising, they reveal great traits of character, manifesting intellect and imagination of a high order, unusual grit, zeal, energy, interest, broadmindedness, liberality etc. when negative forces prevail the above, qualities naturally are clouded. When both the positive and negative forces are at work the natives are assertive and optimistic as yielding and pessimistic. They possess good constitution and vitality. They take interest in philosophy, finance law, education, book-writing. They are capable of rising to great heights of glory and renown lasting long after them. According to Brihat Samhita they are open mouthed, charitable and devoted to friends.

Above defined qualities that are in general found with persons born in Akash Tatwa coupled with Lagna being placed in Amruthamsa and the Dasama Bhava in kinneramsa (both of Divine nature), it is no wonder that the native helped the state and its people progress in various fields viz., education, social welfare, industry etc., proving himself to be a worthy administrator and foresighted leader with unassuming behaviour, magnetic personality and winning qualities.

The native is running Rahu dasa at present as stated earlier. Rahu in Capricorn is considered to be a Royal Planet. He occupies the constellation of sun, lord of the ninth Bhava, a Yoga karaka and benefic to natives of Dhanus as Lagna. This period of Rahu dasa is to confer-promotion of status, reputation, and fame. He would be devoid of inimical trouble and would be inclined to charitable deeds. This Royal Rahu positioned in Lagna Bhava makes one obliging, sympathetic, a leader, with a high degree of perseverance, independent, revolutionary, strives for equality, vigorous in the cause of oppressed. Rahu in Makara confers public recognition and all round prosperity etc. Rahu in this chart occupies the constellation of Sun Lord of 9 and is posited in the amsa of Mercury, Lord of 10 Relation of Rahu to the lords of 9 & 10. both being the lords of Uttama Kendra and Kona is sure to confer the full benifits of the

Maha Raja Yoga due to relation of these two highest benefics of this Lagna. It is equally to the advantage of the native that he is at present in Rahu Mahadasa. Hence his rise to eminence is certain, right from the advent of the Mahadasa which is obvious. The native belongs to the group of medium longevity and it is worth to note that Rahu Dasa is detrimental to this aspect. As longevity is not the aspect I propose to consider at present, it can be taken up at a later date. Coming to aspect of Raja Yoga and Maha Yoga under consideration, it is significant to note that Rahu had attained Paravatamsa which indicates elevation of a high order. Rahu in 6 to Moon with Jupiter in a kendra (Bhava chart refers) to Lagna constitutes Astalaxmi Yoga, a Yoga rarely found in charts. This speaks for itself and prononuces the inherent strength of the horoscope. Lagna posited in Amruthamsa indicates 'Vignani' while the Lord of Lagna Jupiter occupying Maheswaramsa indicates Adhikara kruta persons in power. Rahu is posited in 'Sabhagata Avastha' indicating fine qualities, reputation, good financial position and high learning etc. According to Bhrigu 'Dayavan' Bhogi'-Subha Driste Mukha Lanchane, He would, in addition, be obliging, sympathetic, courageous, fond of freedom, optimistic, versatile, ingenious, affectionate, but suffers from nervous troubles.

Following are the Yogas formed:—

1. Lagna Adhiyoga caused by Venus, Saturn in 7 to Lagna and Sun, Moon and Mercury in 8 to Lagna 'Lagnadhiyogo Bhavati-Pasiddha'—Parasara. The only condition stipulated for complete success of this yoga being 'papaih Sukha Sthana Vivarjita' is satisfied since Jupiter a full benefic and Lord of Lagna is found in the 4th Bhava Sukha Sthana and this Bhava is devoid of any Malefic occupation. Thus the native is to be a famous persoality.

2. Dhura Dhura Yoga caused by Mars and Mercury is indicative of taking freely to the joys of life as they crop up and blessed with abundance of wealth and vehicles, the native is bountiful and waited upon by faithful attendants. This yoga is not free from blemish as noticed in this chart. However, effects of the Yoga are to be experienced partly.

3. Vasi Yoga-caused by Venus and Saturn in 12 to Sun. The native becomes famous, will be liked by all, exceedingly prosperous, liberal and be the favourite of the sovereign.

4. Gaja Kesari Yoga is formed by Jupiter free from debilitation or Asthanagatwa aspecting Moon indicating 'Medhavi Guna Sampanno, Raja Priyakaro, Tejaswi, Dhanavan' according to Parasara.

5. Sankha Yoga-caused by Mars as Lord of 5 and Venus as lord of 6 being posited in kendra position to each other while Lord of Lagna is strong in 4th Bhava and is posited in a chara Rasi (Mesha) (This is according to Parasara). 'Bhoga Silo,Dayalu, Sthree Putrardha Kshetravan, Punya Karma Sastra Gnana Chara, Sadhu Kriyavan'.

6. Parijata Yoga caused by Mars as lord of the house where Lord of Lagna is posited and Mars being the Lord of the Navamsa position of Sun in whose Rasi Moon is posited in Rasi chart, (Mars being the planet identical from both the positions) is placed in a kona to Lagna in Bhava chart confers 'Madhyanta Soukhya. kshitipala Vandya, Swakarma Dharmabhirata, Dayalu, Nrupasyat yadi' etc. This yoga alone is capable of elevating the native to the position of a Chief Minister. Added is Budha Aditya Yoga which assures the present position.

7. Narapati Yoga caused by Jupiter aspecting Moon,(Trecidile aspect), assures power and position.

8. Budha Aditya Yoga-for this Lagna Sun is the lord of 9 and Mercury is the lord of 10. Their conjunction is not considered to be auspicious when occurs in kendras and Konas. In this chart the combination is found in 8th Bhava which is auspicious only for Dhanus as Lagna. Considering the position of Moon the Planets are placed at a distance of 12 and 15 degrees which reveals kendra situation, that is higly auspicious and at the same time enviable. Rahu in the constellation of Sun and Sookshmamsa of Mercury is to confer the highest benefic results due to this conjunction and position. Hence Rahu dasa is bound to be the best of all the periods the native had so far enjoyed and is sure to lift him to exalted heights. I have indicated in the foregoing paragraphs the salient features of Rahu.

I conclude this article at this stage to limit the same with a humble prayer that Shri Mohanlal Sukhadia be bestowed with a long illustrious life and prosperity. A thorough probe would reveal many more interesting features and this can be done at a later date.



Some Salient Points in the Horoscope of MR. Mohanlal Sukhadia

—K. Lakshmanau, M. A. B. L.,

Mr. Mohan Lal Sukhadia, according to data, furnished by Mr. D. D. pande, General Secretary of the Rajasthan Astrological Research Study circle, Jaipur, was born on 31.7.1916 at Udaipur in Dhanu Lagna.

	Jupiter		Venus Saturn
Rahu			Sun Mercury Kethu Moon
Lagan			Mars

Lord of Lagna (and 4) Jupiter is in 5, a Trikone, and that lord, Mars is in the Meridian (10). The sloka says :

"लग्ने शुक्रो बुधो यस्य,
यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमाङ्गार वने यस्य
सः जातः कुल दीपकः ॥

Lord of Lagna in 5 aspecting Lagna shows a good man. But he is not of the category "good means good for nothing" but he is a good and sufficienly assertive and strong, as Jupitor is in Aris, a Martian Sign and that lord, Mars is in 10, with Dhighbala, as lrod of 5 (and 12).

"उर्जस्वी जनवल्लभो दशमगे सूर्ये कुजेवास्थिते ।
महत्कार्यं साधयति प्रताप बहलं खेराश्च सुस्थो यदि ॥

It means that if the Sun or Mars is in 10, the native is one with Drive and Energy, Popular with the public, and achieves great things or performs great acts, provided the lord of 10 is also well placed.

Of course, in this case, 'readers may feel and ask, Is not the lord of 10, Mercury. in 8 ?" True the lords of 9 & 10, fairly close together , as the Sun is in Scorpio Navamsa and Mercury is in the next (Sagittarius) Navamsa, are only in 8·, and Dharmkarmadhiayoga is, generally, not commended, when it occurs in dusthasthan (6 or 8 or 12). If Mercury and the Sun combine in 1 or 4 or 8 the native becomes a King or ruler and Sun and Mercury are the Lord of 9 and 10 for Sagittarius. Jupiter aspecting crescent Moon is a Gajkesriyoga, according to a Karla Text:-(Even if Moon and Jupiter are not in mutual kendras) if Moon is aspected by Venus or Mercury or Jupiter (not in debility or combustion) there is a Gajkesriyoga, giving long life, victory over enemies and proved eloquence, in an assembly.

His Moon's Dasha (10 years), Mars Dasha (7 years) and Rahu Dasha First half $9\frac{1}{2}$ years) will keep him on the saddle, Booted and Spurreond to ride on the horse of Governmental administration, for good.



Horoscope Of MR. Mohanlal Sukhadia

—B. K. Lakshminarasimhaiah,

	Jupiter		Venus
Rahu	Rasi Kundali		Sun, Ketu Mercury Saturn Moon
Lagna			Mars

	Moon Ravi Mars		
Rahu	Navamsa Kundali		Jupiter Saturn Kethu
Venus	Mercury	Lagna	

Planetary influences at the time : तात्कालिक ग्रह सम्पत्ति :

Planets	Sun	Moon Weak	Mars	Mercury	Jupiter	Venus	Saturn	Rahu	Ketu
पादः	4th	1st	1st	4th	4th	1st	4th	3rd	1st
Stars	Pushya	Magha	Hastha	Pushyam	Asvini	Aridra	Punar Vasu	uttara Shada	Pushya

The dignitary's Life sketch:
Longevity—87 to 90 years of age
Age past : on 15.8.1969, = 53 years 0 month and 14 days.

I. Accidental Indication—On 12-9-1969 53 years 1 month 11 days (awaited)

Further indications may be given as below:—at these ages of the person.

		Age			
		Years		Months	Days
II	One	At	68	10	5
III	,,	,,	70	4	7
IV	,,	,,	71	4	2
V	,,	,,	74	5	15

Countracted by:–A free gift of a Golden–Image of MahaVishnu and by Siva-Pooja done, constantly and intensively:—(vide:–"Vriddha Parasaryam")

As for the present:—

(A) Guru-Bhukti (in Rahu Maha Dasa): (Balance) 1–year–9 months,-and 26 days: i. e. **Jupiter**, in Major period of Dragon's head (राहु,:) in various Yogas:—**shows:**—acquisition of Honour from Superiors, Great comforts and happiness; Defeat of enemies, comforts from conveyance, wealth, land and House property, Travel to S.W. or Western Direction and making friends of important personalities, success in undertakings, and visit to one's native–place.

Also, pilgrimages, workship of Duties, Marriage of son enjoyment of daily-feasts.

It also indicates, a responsible and Administrative important work. to be done, Patronage of Government and of persons in High Positions.

Date of birth=31–7–1916=(Age 55)= Ten (=one) + 1969=1970=Indicative of **No. 17 (by adding horizentally).** Its symbol is the 8–pointed star of **Venus** (or the **Star of Magie) This No.** is illustrative of success attained over Life's trials, thtough **'Spiritual force'.**

It is symbolic of Love and Peace and proves Lucky for **one** to make a Name. It includes:– 'Wide–Renown and Public Admiration. This number (17) is of a Lucky one, when obtained for knowing 'the future in a year.'

(B) Mars in the Horoscope–is most powerful·, and so, the person can defy all kinds of diseases, debts & opposition form enemies which appear in periods of evil Dasa–Bhukti.

(b) Argala–yoga and **'Gaja–Kesari–Yoga** are indicated from this powerful **Mars.**

(c) Makha–Star at birth:–Indicates:- notable personalities born in this star such as (1) Aryuna (2) His Holiness Chandrasekhara. Bharati–Swamiji and W. H. Taft (once President of the U. S. A.)

(d) Influences working at time of birth

1. Kethu Maha Dasa=7 Years

Past time in it=4 months and 27 days.

Balance—6 years 7 months and 3 days



An Apologia For Astrology

—By : Gomathi--Annapoorni.

In these days of space-flight when man flies in a Rocket to the Moon, many persons, including highly placed gentle men and ladies some of whom, at any rate·, consult astrologers, in private, at scoff and ridicule astrology in public. So even though Astrology is a Veda-Anga we are obliged to write in vindication of it as a Science. True, Astrology is not an exact science, like methematics, physics and chemistry, but it is, atleast, a Social science, like economics, law and medicine. Judgments of a High Court are, at times, reversed by the Supreme Court, sometimes by a majority of judges, with the dissnting judgments of a minority of one or two judges. But people donot pooh pooh law or dismiss the over ruled judgements, as those of inefficient judges. We attribute it to honest difference of opinion, Doctors differ·, and, operations fail, but, we do not condemn Medical Seience or the doctors, except, perhaps in cases of proved grave negligence. However, we damn Astrology as a pseudo-science if not Quackery if a prediction goes wrong.

It, therefore, behoves me to cite some instances which tell their own tale and will convince even a "Doubting Thomas' or a "Sceptic" and make him think, that there is, really, much more in Astrology, than "Rationalism" may dream of.

Several years ago, a local Malayalee subjudge consulted the Author regarding a girl's horoscope, without disclosing it was his daughter's. I predicted, she will be well-married, and her husband may be a doctor, and, casually, added, the father of the girl would get a promotion in about a month. Then the gentleman gave me the following male horoscope, saying the girl was his daughter, and he was the father and the chart was his. I studied the chart, given below and, calculation showed he was to commence his saturn dasa Venus Bhukhti, in about a month. I told the gentlmen, 'You will become a District and Sessions Judege and wield the sentence of Death to be passed on a murderer. on the adverse of Sakra Bruthi,

	Saturn Kethu	Moon	Jupiter
Lagna			
Mercury	Sun Mars Venus	Rahu	

He refused to believe in my prediction and even said 'You are flattering me'. For, he added that according to the printed list of Gazetted Judicial officers (with him and shown to me) there were 5 sub-judges senior to him, so that, even if, at all, one was passed over, and there was any casualty, it was impossible, for him, to get the grade of a District and Sessions Judge in one month. I too felt the force of his difference due to the Rule of Seniority. But, somehow, I Swore:—

"True, your list makes me nervous."

But, if this science is anything the miracle must happen. Your lord of 9 and 10 are in 10 and Sun, and Swakshetra Mars are in 10. to give full (cruel) powers क्रूराज्ञा

The lords of 9 &10 are in 8 from lords lagna, who is in 6 from them'', I repled "As the lord of Lagna, and the Yogakarakas (9 and 10 lords) are in षष्टाष्टम (Shashtashthtama), you never become a High Court Judge, in this Janma. But, the lord of Lagn, Saturn, is in Neecha Bhangha Rajayoga, and as Royal Sun, lord of 7 and lord of 9 Venus are with the lord of 10, Mars, in Mars's own house, a District and Sessions Judgeship is certain, and Venus Bhuthi should give it. "To be frank, I was praying to God Sri Ramabradra, my Family-Tutelary Deity, to fulfile my prediction·, for the list caused in me "common-Sense-fear"if he would get a chance as pred'cted. Actually, the then District and Sessions Judge of the place had an operation for piles and applied for 2 weeks' leave. And, then the law Minister, a Malayali in a Congress Cabinent, persuaded the High Court to agree to the temporary promotion of the local principal subjudge, "Without prejudice to the seniority of others", of course. And, he got orders of promotion in a month, as predicted. Mr. Menon's Joy knew no bounds. The former incumbent went on extending his leave by two weeks every time as he was unwilling to give up the station and the bangalow in healthy and airy highgrounds, And, Mr. Menon acted as a District and Sess'ons Judge, for two months. Such was the power cf Mars in 10 in own house being with Venus, lord of 4 and 9, in 10 I banked on the astrological dictum, that Sani and Sukra are mutual karakas and so Sani dasa Sukra Bakthis or Sukra dasa Sani Bukthi should and will give maximum results good or evil as thc case may be.

I shall give another instance. A gentleman's wife and child were in Rangoon, where his father-in-law was highly employed. He got a letter that his child was very ill and had 106 F. temperature, and ice in rubber bag was being applied to the head of the child. He showed me the child's chart. It was a case of Capricon (Makara) Ascendent, with Venus and Saturn in Lagna. I told him that though the tale of the child's high fever was harrowing, yet, the child would tide over the illness, as it had good lovgenity, thanks to the Lord of Lagna, and Venus a mighty benefct for the Lagna in the Ascendant. Some days later, he came to me and gladly said the child was quite safe and normal.

In another case, a young man, was seriously down with typhiod

fever, at the age of 28. the Doctor had said. the next 48 hours were very critical. At that stage, the young man's father-in-law came to me and showed the horcscope of the native:

Saturn	Lagna		Mercury Venus Rahu
	RASI		Sun Mars Jupiter
Moon			
Kethu			

The young man of 28 was, then, running Budha Bukthi in Jupiter's Dasa. I said his was a case of Cheergayus (long life-above 60 and about 75, if not upto 83), as lord of lagna, Mars had clear *Neechahanga Rajayoga* due to Jupiter in cancer and in 7 from full-moon, conjoining him, *in 4*, and aspecting Saturn, and as there was chandradhiyoga, thanks to Mercury and Venus in 6 and gone in 7 from Chandra. He had to become a judicial officer and to be a District and Sessions Judge, ultimately, and produce a number of children. So, he could not and would not die. Thank God. He survived the critical illness and became a Munsif and retirэd only after six years since, as a full-fledged District and Sessions Judge, with a number of children. How could I predict ? I relied on following :

(१) स्वोच्चास्थितेन केनाचि खेचरेण समन्वित :
शनिर्का रन्ध्रनाथो वा दीर्घमायुर्विनिर्दिशेत ॥

(२) नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहस्यति ।
तद्राशि नाथोऽपि; तदुच्चनाथ : ॥
स चन्द्र लग्ना यदि केन्द्र वर्ती ।
राजा भवेत् धार्मिक चक्रवर्ती ॥

(३) सौम्यैः स्मरारि निधनेषु अधियोग इन्दो : ।
तस्मिश्चमृप सचिव क्षिति पाल जन्म ॥
सम्पन्न सौख्य विभवा हत शत्रवश्च ।
दीर्घायुषो विगत रोग भयाश्च जाताः ॥

An old Retired Deputy Collector, in those days, asked me regarding the horoscope of his only son's only daughter as to girl's marriage prospects. She was born in Sagittarius-ascendent, with Jupiter therein, Mercury and Rahu in 4th Pisces, Moon in 3 and the sun and venus in Aris inter alia Saturn being in 6 in Taurus. I said, on the whole, it was a fairly good horoscope. but she had to marry a poor but bright boy in a poor family, who would, however, come up in life, fairly high. He did not relish the prediction, as he said he could afford to spend on the only girl, then in the family, to give her a well to do family as her husband's home. He did not succeed', for some horoscopes of rich boys showed chronic illness', and he would not ignore astrology, either some rich boys were in Rangoon and the parents would not agree to give away their only daughter to a husband, whose home was so far away. I told the old gentleman, when asked again, that her lord of 7 was in Neecha नीच and hence, she could not enter a rich family', but, as there was नीच भङ्गराज योग thanks to Jupiter, the lord of pisces in Lagna in own house and as Jupiter aspected her lord of 9 Sun, in

exaltation Rasi, her husband, though born in a poor family, would come up to a very decent position, especially as the Sun, lord of 7 from her Moon, was in 3 from Moon, in exaltation. The girl was relunctantly given in marriage to a poor but bright student, who became a Mabl, with academic distinctions and then, a Munsif who rose to be eventually a District and Sessions Judge. But, her Budha dasa killed her, even when her husband was about to retire and in the midst of prosperity. That is why, I prefer, generally, Jupiter with *Mercury in pisces,* to Mercury in Pisces, with Jupiter in Sagitarius for a Sambhandha with Swakshetra Guru is better for Mercury, Lord of 7 in debility, who, otherwise, becomes a yoga-Maraka.

Similarly, girls born even in an ordinary family with the lord of 7 exalted go, on marriage, to rich husband's home For instance a girl born in Taurus, had Mars lord of 7 exalted in 9. They considered her, for a youngman in intermedite. I said, the girl could not get married to that boy, who might become only a veterinery assistant surgeon, on the ground that the boy's speech was, a bit, *Stammering,* they dropped him. That boy failed in parts I & II of Inter and passed part III and joined the Veterinary College, for the then GMVC Course. But, the girl was married to the some of a rich family studying in MBBS, who was selected for Direct Recruitment as a Deputy Supdt. of Police, whereupon he discontinued his Medical Studies.

I can go multiplying instances, to demonstrate the truth of the Astrological principles, enunciated by our Ancient Rishis. But, as the article is becoming long, I shall close. And, with the Kind leave of the learned Editor, I write my next article, for the next issue of 'Jyotish Marthand" on Adhigoga, ignored by many astrologers.



My Views Regarding Astrology

—Deo Dhar Pande
General Secreatry

Astrology or Jothisha is a body of knowledge handed down to us from ancient times, seeking to reveal our past, present and future. The common man in India knows it to be an art of predicting events. He probably thinks it is to forewarn him of unfavourable events or cheer him up if a good turn is in store. He has seen the astrologer working over some chakra, writing the names of nine planets or more and then, according to some rules of timings relating to the transits of these planets, interpret the coming events with the aid of the almanac and other tables etc· There are many who sincerely think that astrology is all a bundle of superstition, played on the credulity of the ignorant and that it has no scientific base in the sense in which western thinkers think of sciences like physics or chemistry. Many established religions in the world are positively against encouraging astrology, palmistry, soothe/saying and fortunetelling as attempts to spoil the real stream of pure devotion to God. There are many who, under the influence of rational thinking that has so much influenced European achievements and way of life in recent centuries have considered astrology as a relic of old day ignorance, based on a fear of the unknown, playing havocd on Indian thought and living and inducing fatalistic tendencies in Hindu fabric of life, with the result that our people lack the forward-looking dash of the American, etc. According to this view, free will is very much discouraged by astrology and Hindu philosphy and that, as a result the spirit of enterprise (Materialistic) is lacking in India. Still, we see everyone, high or low, educated or otherwise, Hindu or one in any other religious fold, rich or poor, trying to go to fortune tellers, as a matter of curiosity or for fun, or for getting some type of excitement, let us say.

Side by side with these various shades of thought, sceptics, rationalists and others, are also pandits who are seeking to have a new look at Hindu astrology, to condition research, collect data from individual lives, make new rules of prediction and thus endeavour to reconstruct the "science" of astrology, give it a modern touch, proably to influence the West. Abroad in U. S. A., U. K., France, Germany and other countries scholars are trying to "develop" the science of astrology on the basis of data in respect of individual lives, on the basis of astronomical findings movements of known planets and discovery of new planets but all on the original basis of Hindu ancient astrology. To them astrology is like other physical sciences, that is, not part of

religious or other beliefs but could be built on the basis of facts and figures carefully collected, sifted and codified. It is not for me to say which view is correct and which wrong. But let me explain my views on astrology and what it is, as I see it,

"Jothisha" part of Vedas.

Jothisha or astrology is part of the Hindu Scriptures, the Vedas. And the Vedas, according to the Hindu belief, are not composed by human beings but are embodiments of knowledge revealed to the truth seeking sages (Rishis) who were in communion with God. The four vedas are Rigveda, Yajurveda, Ramaveda and Atharavaved. The Six angas of the vedas are Phonetics (Shiksha),Rituals(Kavyom), Grammar (Vyakaran), Entymology (Nirukth), Prosody (Chhandom) and Astrology (Astronomy)—(Jyothish).

Jothisha or Astrology, revealed to the Rishis, is a system of knowledge which revealed to the pious the working of Kalapurusha—the Time Spirit. God has created the Universe which covers various worlds, besides the human world. The individual souls (as different from the Parabrahman) are found in all beings–from the ameba–plants, animals, birds and human beings to spirits or sentient beings existing in the metaphysical worlds or lokas. The jivas (individual souls) are subjected to the operation of Kala, the Time. They appear, grow and disappear, passing through various bodies. Jothisha reveals the pattern of this change ordained in Nature.

This change in the human world and in the world of spirits or devathas is governed by the Law of Karma. This Law of Karma, which is an exclusive contribution on of Hinduism to human thought, relates to transmigration of souls on the basis of the activity of the soul–a sort of life--principle or soul-force which evades physical, biological or biochemical laws. In creation according to the Hindu faith, there is a range of existence, the Karmic range, where the jivas exist develop and perish on the basis of the accummulated load of the consequences of their own activity in previous births. There are, above this Karmic range, worlds where highly evolved souls, or devathas, or Gods, exist. (The details about these spirit worlds are mentioned in Vedas.)

These evolved souls have great powers of interfering with the working of individual karma. The Vedas indicated to the Hindu the law of Karma and also the way to get out of Karma or give a redirection of the working of Karma by securing the effective intervention of the great evolved souls or devathas.

Jothisha reveals to the human being (who is in the Karmic range of creation) the pattern of the driving force governing his life and its various facts. Here the nine planets, their movements, inter.relations, etc., are believed to indicate what would happen every moment of his or her existence. The Karmakanda part of the Vedas dealing with various devatas, the rituals, manthras and other offerings to please them, indicated to the indivdual as to how to change the Karma already accumulated.

What is the main purpose of Jothisha ?

1. Is it to reveal the working of the Brahman (Creation) just to infrom us ?

2. Is it to predict future events for us, just to excite or satisfy our curiosity ? or

3. Is it to help us ?

There is no doubt that the main objectives of this Brahmavidya are (1) and (3). By giving an interpretation to life, by giving a meaning and a reason to various important events in individal human lives, this branch of knowledge, no doubt, reminds us of fate, what God has ordained and why.

But the outstanding achievement of the ancient Rishis to whom Jothisha was revealed, was that they indicated appropiate methods of giving a redirection to life as indicated by the planets posited in the jathaka or horoscope. How was it done ?

A person approaches an astrologer with his horoscope. The astrologer, let us presume, examines the horoscope and, through the planetary positions therein, has found out the working of Law of Karma in his case that due to particular type of sin committed in previous birth the person was destined to suffer some serious ailment, or setback in prosperity, or accident or grief of a particular nature The astrologer is not supposed to tell the person about this coming calamity and stop at that. He will predict the event, he should tell him the Karmic reason for it and guide him to get out of the calamity or at least to mitigate the evtl in store. This he does by drawing upon the knowledge of the Vedas again. The devatas who are capable of actively assisting human beings caught in the whirlpool of Karma are pleased by manthras, japas, offerings and other techniques elaborated in the Karmakanda of the Vedas. The astrologer tells the jathaka to do such and such appropriate prayers, or chant a particular manthra or do a japa, so that a particular God or devatha will be pleased and help him to get out of the impending crisis. All the Nadi granthas are based on this approach. Astrology was utilised in India mainly in this way. It was considered a secret science and was entrusted to the pious men only because the edifice of this branch of knowledge dealt with the planets considered as devatas and the technique of fighting Fate though Freewill endeavour was also based on the grace or Karuna of the Gods which could be drawn upon only though well clarified techniques. Jothisha was meant to assist individuals to fight Karma and give a redirection to life. It seeks to utilise Freewill in man and the truths revealed in the Vedas to overcome Fatality.

How Jyotisha or Astrological knowledge was used ?

Broadly speaking, jothisha or the knowledge of astrology was used in different ways for the benefit of individuals and for the benefit of the country as a whole. It was used in four ways:—

(1) Jataka reading and suggesting to individuals appropriate shantis to reduce the effects of bad Karma.

(2) Prashna or answering specific, spontaneous queries from the individuals who have no horoscopes. Here also shantis were prescribed, besides prediction.

(3) To study the effects of the planets (gocharas) on the general economic and other conditions in our country (Bharatvarsha) in general or the different kingdoms which constituted Bharatvarsha and organise prescribed rites (yogas, yagyas, etc.) to avert evil.

(4) There was also another way in which the knowledge of astrology was utilised, i. e., to fix appropriate moments (Muhurtha) for starting various important activities to ensure success or secure the desired effects.

Coming to the first, Jataka reading, the astrologer has to examine the horoscope, reveal the Karmic load carried by the individual, explain the major consequences that will arise from it and suggest methods, as indicated in the Vedas, to ward off the indicated evil and increase prosperity. In the Vedas, particularly in the Purvakanda, rituals, mantras, japas, vrathas, pilgrimages and several charities (dhan) are mentioned to propitiate individual Gods. Particular type of sins are related to the favours from specific Gods and so, appropriately, the technique of pleasing the concerned god was indicated by the astrologer to the jataka (native). If the native follows these rules with faith, it has been our experience in the past. he succeeded in getting out of the evil in store for him.

Another way of giving the benefit of this great science based on Vedas to the common man was through Prashna. This consists of predicting the :futurc on the basis of planetary positions at the moment of question from some body· For example, let us suppose that an old ignorant and very poor lady approaches the astrologer and tell that her grand-son had run away from house and so her family is in distress. She wants to know what happened with the boy. The astrcloger then works out the planetary positions at the time of her question. The planets help him to find out where the boy has gone, whether he is safe or dead, whether he will come back or not and if he would come back, the time by which he would come back to the family. Several such questions concering family matters were dealt by the astrologers.

In the villages it is common for peasants to rush to the astrologer to find out the whereabouts of missing cattle, missing jewels, missing gold or silver vessels and also regarding rain and answers were given on the basis of Prashna. About marriage of sons or daughters about return of merchants who had gone abroad in ships, return of people who had gone on pilgrimage, about employment prospects and about patients suffering from diseases questions were put and answered by astrolgers. As in Jataka reading, the Prashna reading was also accomypnied by suitable advice relating to propitiating some gods or doing soue Pujas or Archana and other things like that.

Several times when famine was expected on astrological forecast in a particular area of the country, the astrologer, it is believed, made use of his knowledge of the shastras and, through the technique of propitiating the gods, averted the famine.

Jotisha was used not merely to anticipate events and to avert calamities. Actually it was also used to create events which man wanted. In other words, according to Jotisha, ceratin planetary combinations will certainly lead to certain effects. As a real scientist, the astrologer worked out the time and situations which would definitely lead to certain events. If somsone wants to win in the battlefield or succeed in some journey or whatever he wishes, the astrologer fixed the time of starting of the work concerned. That time was popularly known as Muhurtha. Different muhurthas have been worked out for different purposes like marriage, for putting a boy to school or accepting an employment or laying the foundation of a new house, or digging wells or entering into a newly built house and so on and so forth.

It has been the experience of the Hindu people throughout the centuries that by and large, this technique of Muhurtha has helped them to get the best of life.

To sum up, Astrology, therefore, is a science inextricably based on the Vedas and has been put into use in the day-to-day life of the Hindu. It is intended to help the faithful and the pious people to understand the working of Brahman and enable him to know his Karma, to take steps to avert evils ordained by Karma and thus lead a fuller life and eventually seek moksha or emancipation. This has been the orthodox Hindu view of Jothisha in India through the ages.



उल्लेखनीय जन्म-कुण्डलियाँ

अधोलिखित जन्मकुण्डलियों पर फलित ज्योतिष में अभिरुचि रखने वाले सज्जन जन्मकुण्डली के विशेष योगायोग का निरूपण अपने विचार प्रकट करने की कृपा करें। जो सज्जन इन जन्मकुण्डलियों के विषय में विशेष जानकारी की आकांक्षा रखते हों वे लिखें। इस पत्रिका के अग्रिम अङ्कों में इन्हीं जन्म-कुण्डलियों का विषद् विवेचन किया जायगा। निम्नलिखित जन्मपत्रियां हमें श्री देवधर पाण्डेय से प्राप्त हुई हैं। हम उनके इस सहयोग के लिये आभारी हैं।

… पास महापुरुषों, … तो हमें भेजकर

… विशेष अध्ययन

—सम्पादक

आवश्यक सूचना

ज्योतिष मार्तण्ड का प्रकाशन वर्ष में चार अंकों के स्थान पर ६ अंक कर दिया गया है, अतः वार्षिक शुल्क ८)०० रुपए वार्षिक किया गया है।

जिन महानुभावों ने अभी तक वार्षिक शुल्क आठ रुपए नहीं भेजे हैं, कृपया शुल्क शीघ्र भेजनें की अनुकम्पा करें।

—व्यवस्थापक

								नि	राहू	केतु
								म	मिथुन	धनु
								म	कुम्भ	सिंह
३ श्री रामचन्द्रजी	कर्क	मेष	कर्क	मकर	वृषभ	कर्क	मीन	तुला	कन्या	मीन
४ श्री कृष्णजी	वृषभ	सिंह	वृषभ	मकर	कन्या	कर्क	तुला	तुला	मीन	कन्या
५ श्री युधिष्ठिरजी	कर्क	मेष	कर्क	मकर	वृषभ	मीन	मीन	मकर	धनु	मिथुत
६ श्री शुक्रजी	वृषभ	सिंह	वृषभ	मकर	कन्या	वृषम	कन्या	तुला	कर्क	मकर
७ लंकेश्वर रावण	कुम्भ	मेष	तुला	वृश्चिक	वृषभ	धनु	मीन	तुला	मिथुन	धनु
८ महात्मा मौतम	कर्क	मेष	तुला	मेष	वृषम	मेष	मेष	मेष	मिथुन	धनु
९ महात्मा ईसा	तुला	धनु	वृषभ	मीन	धनु	तुला	मकर	मिथुन	धनु	मिथुन
१० श्री गुरू नानकजी	सिंह	वृश्चि.	वृषभ	बृश्चि	वृश्चि.	कन्या	तुला	वृषभ	धनु	मिथुत
११ भगवान महावीर	मकर	मेष	कन्या	मकर	मेष	कर्क	वृषम	तुला	कर्क	मकर
१२ महात्मा कबीर	वृषम	मीन	वृषभ	कुम्भ	मीन	कर्क	मीन	तुला	कन्या	मीन

Several times when famine was expected on astrological forecast in a particular area of the country, the astrologer, it is believed, made use of his knowledge of the shastras and, through the technique of propitiating the gods, averted the famine.

Jotisha was used not merely to anticipate events and to avert calamities. Actually it was also used to create events which man wanted. In other words, according to Jotisha, ceratin planetary combinations will certainly lead to certain effects. As a rea
worked out th
which would d
events. If soms
battlefield or su
or whatever he
fixed the time o
concerned. That t
wn as Muhurtha
have been worked

poses like marriage, for putting a boy to school or accepting an employment or laying the foundation of a new house, or digging wells or entering into a newly built house and so on and so forth.

It has been the experience of the Hindu people throughout the centuries that by and large, this technique of Muhurtha has helped them to get the best of life.

To sum up, Astrology, therefore, is a

उल्लेखनीय जन्म–कुण्डलियाँ

अधोलिखित जन्मकुण्डलियों पर फलित ज्योतिष में अभिरुचि रखने वाले सज्जन जन्मकुण्डली के विशेष योगायोग का निरूपण अपने विचार प्रकट करने की कृपा करें। जो सज्जन इन जन्मकुण्डलियों के विषय में विशेष जानकारो की आकांक्षा रखते हों वे लिखें। इस पत्रिका के अग्रिम अङ्कों में इन्हीं जन्म-कुण्डलियों का विषद् विवेचन किया जायगा। निम्नलिखित जन्मपत्रियां हमें श्री देवधर पाण्डेय से प्राप्त हुई हैं। हम उनके इस सहयोग के लिये आभारी हैं।

ज्योतिष मार्तण्ड के प्रिय पाठकों से हमारा विनम्र निवेदन है कि यदि उनके पास महापुरुषों, विद्वानों, राजनीतिज्ञों, साधु संतों तथा कुछ विशेषता लिये हुए पुरुषों की जन्मपत्रियां हो तो हमें भेजकर सहयोगी बनें ताकि उन्हें विचारशील विद्वानों को अध्ययनार्थ प्रेषित कर सकें।

इस अंक में भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी की जन्मकुण्डली का विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया जारहा है।

—सम्पादक

भारत के प्रमुख व्यक्तियों की जन्मकुंडलियां

नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृ०	शु०	शनि	राहू	केतु
१ शिव शंकर	मेष	मेष	मेष	कन्या	मीन	सिह	मीन	वृषम	मिथुन	धनु
२ श्री गणेशजी	कन्या	सिंह	वृषम	मकर	कन्या	कर्क	तुला	वृषम	कुम्भ	सिंह
३ श्री रामचन्द्रजी	कर्क	मेष	कर्क	मकर	वृषभ	कर्क	मीन	तुला	कन्या	मीन
४ श्री कृष्णजी	वृषभ	सिंह	वृषभ	मकर	कन्या	कर्क	तुला	तुला	मीन	कन्या
५ श्री युघिष्ठिरजी	कर्क	मेष	कर्क	मकर	वृषभ	मीन	मीन	मकर	धनु	मिथुत
६ श्री शुक्रजी	वृषभ	सिह	वृषभ	मकर	कन्या	वृषम	कन्या	तुला	कर्क	मकर
७ लंकेश्वर रावण	कुम्भ	मेष	तुला	वृश्चिक	वृषभ	धनु	मीन	तुला	मिथुन	धनु
८ महात्मा मौतम	कर्क	मेष	तुला	मेष	वृषम	मेष	मेष	मेष	मिथुन	धनु
९ महात्मा ईसा	तुला	धनु	वृषभ	मीन	धनु	तुला	मकर	मिथुन	धनु	मिथुन
१० श्री गुरू नानकजी	सिंह	वृश्चि.	वृषभ	बृश्चि	वृश्चि.	कन्या	तुला	वृषभ	धनु	मिथुत
११ भगवान महावीर	मकर	मेष	कन्या	मकर	मेष	कर्क	वृषम	तुला	कर्क	मकर
१२ महात्मा कबीर	वृषम	मीन	वृषभ	कुम्भ	मीन	कर्क	मीन	तुला	कन्या	मीन

नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृ०	शु०	शनि	राहू	केतु
१३ सन्त तुलसीदास	तुला	सिंह	तुला	कर्क	सिंह	कुम्भ	सिंह	कन्या	वृश्चि.	वृषभ
१४ स्वामी रामतीर्थ	मीन	तुला	तुला	धनु	तुला	कन्या	कन्या	मकर	मेष	तुला
१५ राजा विक्रम उज्जैन	कर्क	मेष	कन्या	कन्या	वृषभ	कर्क	वृषम	मिथुन	धनु	मिथुन
१६ बाबा रामदेव भक्त	वृश्चि.	वृश्चि.	मीन	कन्या	वृश्चि.	वृश्चि.	वृश्चि.	कन्या	तुला	मेष
१७ श्री रामकृष्ण परमहंस	कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ	कुम्भ	मिथुन	मीन	तुला	वृश्चि.	वृषभ
१८ स्वामी विवेकानन्द	मकर	मकर	कन्या	मेष	मकर	तुला	मकर	कन्या	वृश्चि.	वृषभ
१९ श्री चैतन्य महाप्रभु	तुला	कुम्भ	सिंह	मकर	मीन	धनु	मेष	वृश्चि.	कुम्भ	सिंह
२० योगीराज अरविंद घोष	कर्क	सिंह	धनु	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	धनु	वृषभ	वृश्चि.
२१ श्री रामनुजाचार्य	कर्क	मेष	मिथुन	सिंह	मेष	मिथुन	मेष	धनु	वृषभ	वृश्चि.
२२ श्री पृथ्वीराज चौहान	मेष	मीन	कन्या	तुला	मकर	मकर	मकर	सिंह	मिथुन	धनु
२३ महाराणा प्रताप	मकर	वृषभ	मिथुन	कन्या	मिथुन	कर्क	मिथुन	कन्या	कुम्भ	सिंह
२४ छत्रपति शिवाजी	सिंह	कुम्भ	कन्या	मिथुन	कुम्भ	मकर	मीन	तुला	मिथुन	धनु
२५ राणा रणजीतसिंह	कर्क	वृश्चि.	वृषभ	कन्या	वृश्चि.	तुला	कन्या	वृश्चि.	मेष	तुला
२६ टीपू सुल्तान	धनु	वृश्चि,	मेष	कुम्भ	वृश्चि.	वृषभ	तुला	वृश्चि.	वृश्चि.	वृषभ
२७ हैदर अली	तुला	वृश्चि.	वृश्चि.	वृश्चि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मकर	वृश्चि.	मिथुन	धनु
२८ चगेज खां	कर्क	कन्या	तुला	कन्या	कन्या	कन्या	कन्या	कन्या	मेष	तुला
२९ सिकन्दर महान	मेष	सिंह	मिथुन	तुला	कर्क	तुला	सिंह	वृषम	कुम्भ	सिंह
३० लोक. बाल गंगाधर तिलक	कर्क	कर्क	मीन	वृश्चि.	मिथुन	मीन	कर्क	मिथुन	मीन	कन्या
३१ बलवन्त रामचन्द्र गोठवले	कन्या	कन्या	वृषम	धनु	कन्या	मकर	वृश्चि.	सिंह	वृषम	वृश्चि.
३२ महात्मा गांधी	तुला	कन्या	सिंह	तुला	तुला	मेष	तुला	वृश्चि.	कर्क	मकर
३३ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	मेष	मकर	कन्या	वृषभ	मकर	सिंह	कुम्भ	वृश्चि.	मकर	कर्क
३४ झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	तुला	वृश्चि.	तुला	कर्क	तुला	वृषभ	धनु	तुला	वृषभ	वृश्चि
३५ पंडित मोतीलाल नेहरू	कर्क	मेष	मीन	वृषभ	मेष	कर्क	मेष	सिंह	धनु	मिथुन
३६ पंडित जवाहरलाल नेहरू	कर्क	वृश्चि.	कर्क	कन्या	तुला	धनु	तुला	सिंह	मिथुन	धनु
३७ श्री चक्र. राजगोपालाचार्य	वृश्चि.	वृश्चि.	वृषभ	तुला	धनु	मकर	वृश्चि.	मीन	मकर	कर्क
३८ देशरत्न डा. राजेन्द्रप्रसाद	धनु	वृश्चि.	वृषभ	धनु	धनु	सिंह	तुला	मिथुन	कन्या	मीन
३९ सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन्	कन्या	सिंह	सिंह	वृश्चि.	कन्या	वृश्चि,	कन्या	कर्क	कर्क	मकर
४० डा० जाकिर हुसैन	मिथुन	मकर	मेष	वृषभ	मकर	सिंह	मीन	वृश्चि.	मकर	कर्क
४१ सरदार बल्लभभाई पटेल	मेष	तुला	वृषभ	मकर	तुला	तुला	तुला	मकर	मीन	कन्या
४२ श्री लालबहादुर शास्त्री	वृश्चि.	कन्या	कन्या	सिंह	कन्या	मेष	तुला	मकर	सिंह	कुम्भ
४३ श्रीमती इन्दिरा गांधी	कर्क	वृश्चि.	मकर	सिंह	वृश्चि.	वृषभ	धनु	कर्क	धनु	मिथुन
४४ श्रीमती इन्दिरा गांधी के निर्वाचन के समय की जन्मपत्री 11.15 A.M. 19-1-66	मीन	मकर	धनु	मकर	धनु	वृषभ	मकर	कुम्भ	वृषभ	वृश्चि

नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृ०	शु०	शनि	राहू	केतु
४५ श्रीमती इन्दिरा गांधी के प्रधानमंत्री पद की शपथ के समय की जन्म-पत्री 24-1-66, 2.15 P.M.	वृषभ	मकर	कुम्भ	कुम्भ	मकर	वृषभ	मकर	कुम्भ	वृषभ	वृश्चि
४६ डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी	वृषभ	मिथुन	कुम्भ	कन्या	कर्क	धनु	कर्क	धनु	तुला	मेष
४७ डा० सम्पूर्णानन्द	मेष	धनु	मेष	तुला	मकर	धनु	धनु	सिंह	मिथुन	धनु
४८ राज्यपाल निहार श्री रंगराव रामचन्द दिबाकर	मिथुन	कन्या	तुला	मेष	तुला	मिथुन	तुला	तुला	मीन	कन्या
४९ श्री रविन्द्र नाथ टैगौर	मीन	मेष	मीन	मिथुन	मेष	कर्क	मेष	सिंह	धनु	केतु
५० डा. एन वी खरे	मीन	मीन	मकर	मिथुन	कुम्भ	वृषभ	मीन	मेष	वृश्चि.	वृषभ
५१ सर. सी. पी. रमन्	तुला	तुला	तुला	मेष	वृश्चि.	कुम्भ	कन्या	मीन	धनु	मिथुन
५२ श्री मदनमोहन मालवीय	कर्क	धनु	कन्या	तुला	धनु	कन्या	मकर	कन्या	धनु	मिथुन
५३ श्री०के०कामराज	कर्क	मिथुन	कुम्भ	कन्या	मिथुन	मीन	सिंह	मकर	कन्या	मीन
५४ श्री मुरारजी देसाई	मिथुन	कुम्भ	सिंह	कुम्भ	मकर	मकर	मकर	तुला	तुला	मेष
५५ श्री यशवन्त राव वलवन्त राव चव्हाण	कुम्भ	कुम्भ	कन्या	मिथुन	कुम्भ	मकर	मीन	वृषभ	कुम्भ	सिंह
५६ श्री गुलजारी लाल नन्दा	मेष	मिथुन	धनु	मेष	मिथुन	कन्या	कर्क	वृश्चि.	धनु	मिथुन
५७ श्री. सी. डी. देशमुख	कन्या	मकर	मकर	धनु	मकर	कर्क	वृश्चि.	तुला	कुम्भ	सिंह
५८ श्री जय प्रकाश नारायन	कर्क	कन्या	मकर	कर्क	तुला	मकर	कन्या	धनु	मेष	तुला
५९ श्री के. के. शाह	वृश्चि,	तुला	मिथुन	मकर	वृश्चि.	कर्क	तुला	कुम्भ	मिथुन	धनु
६० श्री वी. के मैनन	धनु	मेष	मकर	कुम्भ	वृषभ	कर्क	मेष	तुला	कुम्भ	सिंह
६१ मिर्जा इस्माइल दीवान जयपुर	कर्क	तुला	कर्क	कर्क	कन्या	कर्क	तुला	वृषभ	तुला	मेष
६२ श्री दीनदयाल उपाध्याय	धनु	कन्या	सिंह	तुला	कन्या	मेष	कर्क	कर्क	मकर	कर्क
६३ श्री मोहनलाल सुखाड़िया	धनु	कर्क	सिंह	कन्या	कर्क	मेष	मिथुन	मिथुन	मकर	कर्क
६४ श्री दामोदरलाल व्यास	कर्क	वृश्चि.	मेष	मीन	वृश्चि.	कन्या	धनु	मीन	वृषभ	वृश्चि.
६५ श्री रामकिशोर व्यास	धनु	वृषभ	कुंभ	मिथुन	वृषभ	कर्क	मिथुन	मीन	मिथुन	धनु
६६ श्री टीकाराम पालीवाल	वृषभ	मेष	सिंह	धनु	मीन	मिथुन	मीन	कुम्भ	कर्क	मकर
६७ श्री मथुरादास माथुर	सिंह	सिंह	वृश्चि.	तुला	कन्या	मेष	कर्क	कर्क	मकर	कर्क
६८ श्री विशम्बरनाथ जोशी	वृषभ	सिंह	मकर	कर्क	सिह	कर्क	सिंह	सिंह	वृश्चि.	वृषभ
६९ सुश्री सूरजवाला	कन्या	तुला	कन्या	कुम्भ	कन्या	कन्या	कन्या	वृश्चि.	वृश्चि.	वृषभ
७० बादशाह अकबर	सिंह	तुला	मकर	धनु	तुला	कन्या	कन्या	तुला	कुम्भ	सिंह
७१ बादशाह जहांगीर	तुला	सिंह	मेष	मिथुन	कर्क	कुम्भ	कर्क	तुला	कुम्भ	मीन
७२ बादशाह शाहजहाँ	कर्क	मकर	मकर	मीन	धनु	वृश्चि.	धनु	कर्क	मिथुन	धनु
७३ बादशाह औरंगजेब	कन्या	तुला	वृषभ	वृश्चि.	तुला	कुम्भ	धनु	वृश्चि.	मकर	कर्क
७४ श्री जगदीशचन्द्र बसु	वृषभ	वृश्चि.	कन्या	मकर	धनु	वृषभ	धनु	कर्क	कुम्भ	सिंह

नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृ०	शु०	शनि	राहू	केतु
७५ श्री आसुतोष मुकर्जी	वृषभ	मिथुन	मेष	मेष	वृषभ	तुला	मिथुन	कन्या	तुला	मेष
७६ सर तेजबहादुर सप्रु	वृषभ	वृश्चि.	मीन	कुम्भ	वृश्चि.	वृश्चि.	धनु	मकर	मीन	कन्या
७७ जनरल साम मानेकशां	सिंह	मीन	मिथुन	मिथुन	कुम्भ	मकर	मेष	वृषभ	कुम्भ	सिंह
७८ महाराजा माधोसिंह	तुला	कन्या	मिथुन	कन्या	कन्या	कन्या	तुला	कन्या	मकर	कर्क
७९ महारावल डूंगरपुर	कर्क	कुम्भ	मेष	मेष	कुम्भ	कर्क	मेष	मीन	मिथुन	धनु
८० महारानी बडौदा	मिथुन	सिंह	मिथुन	मिथुन	कर्क	वृश्चि.	वृषभ	कन्या	वृषभ	वृश्चि.
८१ सुश्री लता मंगेशकर	वृषभ	कन्या	कर्क	कन्या	कन्या	वृषभ	सिंह	वृश्चि.	मेष	तुला
८२ गायक बाल गन्धर्व	धनु	मिथुन	मकर	कन्या	मिथुन	वृश्चि.	मिथुन	कर्क	कर्क	मकर
८३ अभिनेता शिवाजी गनेशन	कुम्भ	कन्या	मकर	मिथुन	तुला	मेष	तुला	वृश्चि.	वृषभ	वृश्चि.
८४ अभिनेता अशोक कुमार	मकर	कन्या	मिथुन	वृषभ	कन्या	तुला	सिंह	मेष	मेष	तुला
८५ अभिनेता राजकपूर	कर्क	वृश्चि.	कर्क	मीन	धनु	धनु	तुला	तुला	कर्क	मकर
८६ अभिनेता सुरेन्द्रनाथ	धनु	तुला	तुला	मीन	तुला	कन्या	धनु	मीन	वृषभ	वृश्चि.
८७ निजाम हैदराबाद	तुला	मीन	मेष	सिंह	मेष	कन्या	कुम्भ	मिथुन	सिंह	कुम्भ
८८ सर जमसेद जो टाटा.	कर्क	कुंभ	कन्या	कन्या	कुंभ	कन्या	मीन	वृश्चि.	मीन	कन्या
८९ सेठ श्री जुगलकिशोर बिड़ला	मिथुन	वृषभ	धनु	मेष	वृषभ	मिथुन	मेष	वृषभ	तुला	मेष
९० सेठ श्री रामकृष्ण डालमिया	मिथुन	मीन	धनु	वृषभ	मीन	मेष	मीन	कन्या	मेष	तुला
९१ कमाण्डर नानावटी	कर्क	मेष	मिथुन	धनु	मेष	कन्या	वृषभ	कन्या	कन्या	मीन
९२ नाथुराम गोड से	मिथुन	वृषभ	कन्या	मिथुन	वृषभ	कन्या	मीन	मेष	वृषभ	वृश्चि,
९३ डाकू मानसिंह	वृश्चि.	तुला	कर्क	मिथुन	कन्या	वृश्चि.	कन्या	कुंभ	मेष	तुला
९४ काका हाथरसी	मिथुन	कन्या	कन्या	सिंह	सिंह	मिथुन	तुला	कुंभ	कर्क	मकर

देश विदेश की विशेष उल्लेखनीय जन्म कुंडलियां

नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृ०	शु०	शनि	राहू	केतु
९५ भारत में विद्रोह	कन्या	मेष	वृश्चि.	वृषभ	वृषभ	मेष	मेष	मिथुन	मीन	कन्या
९६ भारत 15-8-1947	वृषभ	कर्क	कर्क	मिथुन	कर्क	तुला	कर्क	कर्क	वृषभ	वृश्चि.
९७ गणतन्त्र दिवस भारत	मीन	मकर	मेष	कन्या	धनु	मकर	मकर	सिंह	मीन	कन्या
९८ संयुक्त राष्ट्संघ	मिथुन	धनु	कन्या	कन्या	धनु	कर्क	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	वृषभ
९९ पाकिस्तान	मेष	कर्क	कर्क	मिथुन	कर्क	तुला	कर्क	कर्क	वृषभ	वृश्चि
१०० चीन	मकर	कन्या	मकर	कर्क	कन्या	मकर	तुला	सिंह	मीन	कन्या
१०१ इजराइल	तुला	वृषभ	कर्क	सिंह	वृषभ	धनु	मिथुन	कर्क	मेष	तुला
१०२ ईरान	धनु	सिंह	मीन	कर्क	कन्या	सिह	कन्या	मेष	वृषभ	वृश्चि.
१०३ रूस	सिंह	तुला	सिंह	सिंह	तुला	वृषभ	धनु	कर्क	धनु	मिथुन
१०४ नेपाल	कर्क	मिथुन	वृषभ	मिथुन	मिथुन	कर्क	सिंह	मीन	वृश्चि.	वृषभ
१०५ श्री मुहम्मदअली जिन्ना,	कुंभ	धनु	मीन	तुला	धनु	वृश्चि.	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	सिंह
१०६ श्री अयूब खां, पाकि०	वृश्चि.	तुला	धनु	वृश्चि.	तुला	धनु	वृश्चि.	धनु	तुला	मेष
१०७ श्री दलाई लामा, तिब्बत	मिथुन	वृषभ	कर्क	कन्या	मिथुन	तुला	कर्क	कुम्भ	मकर	कर्क

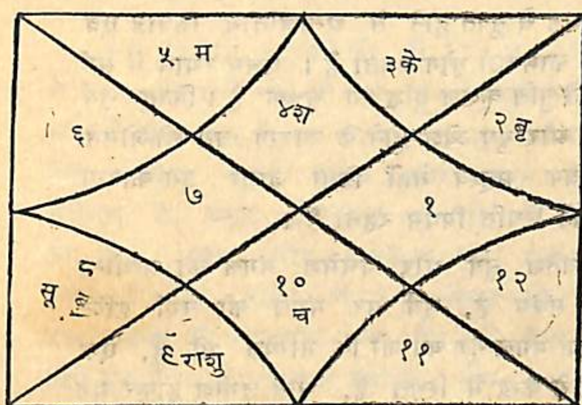
नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृ०	शु०	शनि	राहू	केतु
१०८ जोजफ स्टालिन, रूस	तुला	धनु	मीन	मेष	वृश्चि,	कुम्भ	तुला	मीन	धनु	मिथुन
१०९ ख्रुश्चेव रूस	तुला	मेष	कन्या	मकर	मीन	वृषभ	कुम्भ	तुला	मीन	कन्या
११० श्री कोसीगिन, रूस	वृश्चि.	धनु	कर्क	वृश्चि.	वृश्चि.	वृषभ	मकर	तुला	मीन	कन्या
१११ श्री नासर, अरब	वृश्चि.	मकर	कुम्भ	धनु	मकर	वृषभ	कुम्भ	कर्क	धनु	मिथुन
११२ श्री फारूक, अरब	तुला	कुम्भ	वृश्चि.	तुला	कुम्भ	कर्क	धनु	मिथुन	तुला	मेष
११३ श्री कृष्णबहादुर थापानेपा.	वृषभ	मेष	धनु	वृषभ	तुला	सिंह	तुला	सिंह	मेष	तुला
११४ मुसोलिनी, इटली	तुला	मेष	धनु	मेष	मेष	धनु	मेष	कर्क	मिथुन	धनु
११५ Adolf हिटलर, जर्मनी	तुला	मेष	धनु	मेष	मेष	धनु	मेष	कर्क	मिथुन	धनु
११६ काल मार्क्स	कुम्भ	मेष	मेष	कर्क	वृषभ	धनु	मीन	कुम्भ	मेष	तुला
११७ रोम का सम्राट नीटो	धनु	धनु	सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मकर	तुला	मकर	कर्क
११८ अरिस्टोटल ओनासिस	मेष	कर्क	मेष	कर्क	कर्क	वृषभ	कन्या	मकर	मिथुन	धनु
११९ अबीसीनिया का बादशाह	सिंह	कर्क	कन्या	वृश्चि.	कर्क	मकर	सिंह	सिंह	वृषभ	वृश्चि
१२० जनरल दिगाल फ्रान्स	मेष	वृश्चि.	मीन	मकर	वृश्चि.	मकर	वृश्चि.	सिंह	वृषभ	वृश्चि.
१२१ परशिया के शाह	कर्क	तुला	वृश्चि.	सिंह	तुला	कर्क	सिंह	सिंह	वृश्चि·	वृषभ
१२२ सम्राट कैसर जर्मनी	मिथुन	मकर	वृश्चि.	मीन	धनु	वृषभ	धनु	कर्क	कुम्भ	सिंह
१२३ विलियम मार्कोनी टोन	धनु	मेष	सिंह	वृषभ	कर्क	धनु	मेष	मकर	मेष	तुला
१२४ राजकुमारी मारग्रेट	मीन	सिंह	कर्क	मिथुन	कन्या	मिथुन	कन्या	धनु	मेष	तुला
१२५ डयूक ऑफ यॉक	तुला	धनु	वृश्चि.	वृश्चि.	वृश्चि·	कर्क	तुला	तुला	कुम्भ	सिंह
१२६ सम्राट एडवर्ड सप्तम	धनु	तुला	कन्या	धनु	वृश्चि.	धनु	कन्या	धनु	मकर	कर्क
१२७ सम्राट एडवर्ड अष्टम	कुम्भ	मिथुन	कुम्भ	मीन	कर्क	वृष.	मेष	कन्या	मीन	कन्या
१२८ महारानी विक्टोरिया	वृषभ	वृषभ	वृषभ	मीन	मेष	कर्क	मेष	मीन	मीन	कन्या
१२९ सम्राट जार्ज पंचम	मीन	वृषभ	कन्या	कर्क	मेष	धनु	मीन	तुला	तुला	मेष
१३० सम्राट जार्ज षष्टम	तुला	वृश्चि.	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि	कर्क	वृश्चि	वृश्चि	कुम्भ	सिंह
१३१ जार्ज पंचम का पुत्र	मकर	मिथुन	मकर	मीन	कुम्भ	वृषभ	वृषभ	कन्या	मीन	कन्या
१३२ महारानी ऐलीजाबेथ	धनु	मेष	कर्क	मकर	मीन	मकर	कुम्भ	वृश्चि.	मिथुन	धनु
१३३ विन्सटन चर्चिल	तुला	वृश्चि.	सिंह	कन्या	तुला	तुला	धनु	मकर	मेष	तुला
१३४ हैरोल्ड विल्सन	सिंह	कुम्भ	वृषभ	कर्क	कुम्भ	मीन	मेष	मिथुन	मकर	कर्क
१३५ श्रीबर्नार्ड शा	वृषभ	कर्क	वृषभ	तुला	मिथुन	मीन	कर्क	मिथुन	मीन	कन्या
१३६ शेक्सपीयर	धनु	मेष	मेष	मिथुन	मीन	कर्क	वृषभ	कर्क	वृषभ	वृश्चि.
१३७ सुश्री क्रिस्टाइन किलर	मिथुन	कुम्भ	वृषभ	वृषभ	मकर	वृषभ	मकर	मकर	सिंह	कुम्भ
१३८ राष्ट्रपति जार्ज वाशिं.	मिथुन	कुम्भ	धनु	वृश्चि.	मकर	कन्या	मीन	मीन	धनु	मिथुन
१३९ श्री आइजन हावर	तुला	तुला	तुला	धनु	कन्या	मकर	वृश्चि.	सिंह	वृषभ	वृश्च.
१४० रूजवेल्ट	सिंह	मकर	मिथुन	मिथुन	कुम्भ	मेष	मकर	मेष	वृश्चि.	वृषभ
१४१ श्री जोसफ केनेडी	कन्या	वृषभ	सिंह	मेष	मेष	वृषभ	वृषभ	कर्क	धनु	मिथुन

नाम	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृ०	शु०	शनि	राहू	केतु
१४२ श्रीमती जोसफ केनेडी	वृषभ	कर्क	मेष	सिंह	कर्क	वृषभ	वृषभ	धनु	मेष	तुला
१४३ श्रीजौनसन	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	मिथुन	मीन	मिथुन	धनु
१४४ Richard N- निक्सन	सिंह	धनु	मकर	धनु	धनु	धनु	कुम्भ	वृषभ	मीन	कन्या
१४५ श्री हैनरी फोर्ड	वृश्चि,	कर्क	मकर	सिंह	कर्क	कन्या	कन्या	कन्या	वृश्चि.	वृषभ
१४६ राजस्थान ज्यौतिष अनुसंधान एवं अध्ययन केन्द्र की जन्मकुण्डली	वृश्चि.	कन्या	कुम्भ	धनु	तुला	सिंह	सिंह	मीन	मेष	तुला
१४७ श्रीदेवघर पाण्डेय महामंत्री	धनु	कन्या	मीन	कन्या	कन्या	धनु	तुला	तुला	कर्क	मकर
१४८ सिन्डीकेट काग्रेस	मीन	धनु	कन्या	सिंह	वृश्चि.	कन्या	मकर	मिथुन	सिंह	कुम्भा
१४९ इन्डीकेट काग्रेस	धनु	वृश्चि.	मेष	मकर	वृश्चि.	तुला	तुला	मेष	कुम्भ	सिंह
१५० राजस्थान	वृषभ	कुम्भ	वनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मीन	मीन	मेष	तुला

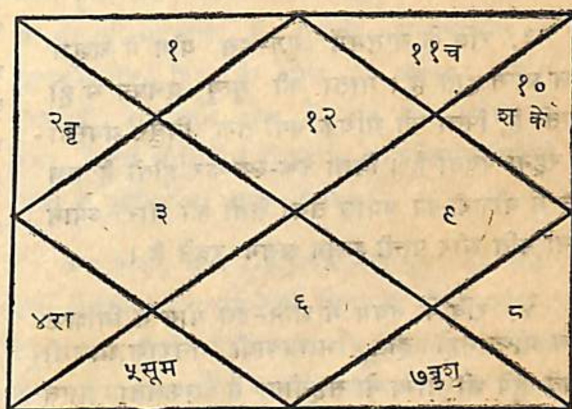


श्रीमती इन्दिरा गांधी की जन्म कुण्डली का अध्ययन

—देवधर पाण्डेय—
महामंत्री



जन्म कुण्डली



नवमांश चक्र

श्रीमती इन्दिरा गांधी का जन्म १९ नवम्बर को रात्रि स्टेन्डर्ड समय ११ घन्टे ११ मिनिट २४ सैकिन्ड पर इलाहबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। तदनुसार कर्क लग्न और मीन राशि का नवमांश था।

जन्म काल में विशोंतरी दशा की गणना के अनुसार सूर्य १ वर्ष ५ माह ११ दिन भोग्य थे। कर्क लग्न के लिये शुक्र और बुध अशुभ ग्रह है, मंगल और गुरु शुभ ग्रह है, मंगल पंचमेश और दशमेश होने के कारण राजयोग बनाता हैं, शनि मारक नहीं होता, गुरु भाग्येश और षष्ठेश तथा सूर्य धनेश होने से शुभ है। रवि के स्थान पर मंगल और मंगल के स्थान पर रवि की गणना महाराज योग कारक बताई गयी है।

इस जन्म चक्र में रवि पंचम में शुभ है, चन्द्र सप्तम में अशुभ है, मंगल धन स्थान में शुभ है, बुध पंचम में अशुभ है, गुरु लाभ में शुभ है. शुक्र षष्ठम में राहू से युक्त होने के कारण अशुभ है, शनि लग्न में अशुभ है। मंगल और गुरु की दृष्टि पंचम स्थान में शुभ है, क्योंकि मंगल राजयोग कारक है, और गुरु भाग्येश है। चन्द्र पर गुरुकी दृष्टि सप्तम स्थान पर शुभ है। सूर्य पर मंगल की पंचम स्थान पर दृष्टि अत्यन्त शुभ है, गुरु शनि की दृष्टि तृतीय स्थान पर अशुभ व विफल होती है, बुध पर गुरु की दृष्टि पंचम स्थान में कुछ दूषित है, क्योकि बुध तृतीयेश एवं व्ययेश है और गुरु षष्ठेश भी है।

१. चन्द्र के लाभ में रवि-इस योग में शुभाशुभ

का मेल नहीं रहता, मानसिक तथा आर्थिक संकट रहने के पश्चात् शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

२. रवि के दशम में मंगल--इस योग में जन्म साधारण परिस्थिति में भी हो तो दैवयोग से उच्च स्थान प्राप्त हो। प्रारम्भ में कुछ कष्ट तथा वृद्धावस्था में सुख व उन्नति प्राप्त होती हैं। आपत्ति विपत्ति में धैर्य से काम लेकर आगे यश प्राप्त होता है।

३, रवि के सप्तममें गुरु-इस योग में अशुभ फल प्राप्त होते हैं। माता की मृत्यु बचपन में हो जाती है, पिता को अधिक वर्षों तक विधुर अवस्था में रहना पड़ता है। विद्या रुक-रुक कर होती है बच पन में बौकरी का प्रयास तथा खेती की ओर ध्यान तथा पति और पत्नी अलग अलग रहते हैं।

४. रवि के नवम में शनि-इस योग में विशिष्ट फल प्राप्त नहीं होते, भाग्यवादी, निराश,आलसी होते हुये भी भाग्य के सहयोग से सफलता प्राप्त करते है, तथा मां बहनों व भाईयों का अभाव रहता है।

५. चन्द्र से पांचवे स्थान पर गुरु-इस योग ऐहिक सुख उत्तम मिलता हैं, संतान अपने पास रखने से उनकी शिक्षा में बाधा तथा गलत शिक्षा होती है।

६. चन्द्र से सप्तम स्थान में शनि-यह योग अति उत्तम है, यह ऊंचे शिखर तक पहुंचाने में जातक की सहायता करता है, माता पिता की मृत्यु के वाद भाग्य का उदय होता है, मित्र बड़े बड़े व्यक्ति बनते है, बहुत से अनुयायी होते है, मृत्यु के बाद कीर्ति, यश छोड़ जाते है।

इस जन्म कुन्डली में शनि आत्मकारक ग्रह है। गुरु भाग्येश और वर्गोत्तम है, नवमांश चक्र, में चंद्र सूर्य और मंगल से दृष्ट है, अत: संघर्ष शील जीवन विदेशी व्यवहार में कुशल तथा विदेशी सभ्यता को प्राथमिकता देने आदि योग बनते है। जन्म चक्र में शनि, सप्तमेश तथा अष्टमेश होकर चर राशि लग्न में स्थित है, एवं सप्तम भाव में चर राशिगत लग्नेश, चन्द्र को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, तथा लग्नेश चन्द्र भी लग्न स्थित शनि को भी पूर्ण दृष्टि से देख रहा है इन दोनों का आपस में दृष्टि संबंध होने से वैदेशिक जनों के मध्य में जीवन यापन का योग बनता है। शुक्र, विवाह और प्रेम का कारक ग्रह है। षष्ठम में शुक्र राहू से युक्त होने से अन्तर्जातीय विवाह एवं अति कामेच्छा योग बनता हैं। पंचम् स्थान में सूर्य बुध की युति कुशल बुद्धि का सूचक है। किन्तु सूर्य धनेश और बुध व्येश होने के कारण, धन को जीवन में अधिक महत्व नहीं दिया जाता इस कारण अर्थ की स्थिति विषम रहती है।

धनेश सूर्य और पंचमेश मंगल का अन्योन्य राशि संबंध है, सूर्य पर मंगल की पूर्ण दृष्टि पंचमेश मंगल गुरु को जो कि भाग्येश भी है, एक दूसरे से केन्द्र में स्थित हैं, चन्द्र लग्नेश होकर गुरु से दृष्ट है, शुक्र और गुरु का आपस में अन्योन्य राशि संबंध तथा गुरु पर बुध की पूर्ण दृष्टि, इन महा योगों के कारण अच्छा स्वभाव, राजाओं से मान प्राप्त करने वाला, हर प्रकार के वाहनो का सुख प्राप्त तथा उच्च स्थान की प्राप्ति मान, सम्मान, यश कीर्ति आदि प्राप्त होती हैं।

श्रीमती इंदिरा गांधी के बचपन में चन्द्रमा की दशा ३०-४-१९१९ से ३०-४-१९२९ तक (१० वर्ष) थी। चन्द्र लग्नेश है, जो छठे और सातवे भाव की संधि में स्थित है, तथा सूर्य के नक्षत्र में है, जो चन्द्र से अष्टम स्थान का मालिक है, चन्द्र से माता के लिये विचार किया जाता है। इससे मा को बीमारी तथा पिता के जेल जाने के कारण जातक को कष्ट आदि घटनाये घटित होती है।

मंगल की दशा सात वर्ष की थी। ३०-४-१९२९ से ३०-४-१९३६) कर्क लग्न के लिये मंगल

पंचमेश और दशमेश बनता है, जो मातृभाव से द्वितीय व सप्तम का अधिपति हो जाने से माता के लिये मारक बन जाता है, शुक्र चतुर्थेश है, जो राहू से युक्त है, तथा चन्द्रमा मंगल से छठा है, इस कारण माता के लिये मारक बना, लेकिन यह मंगल जातक स्वयं के लिये योग कारक है, क्योकि मंगल सिंह राशि गत स्थित होने से तथा सूर्य और मंगल का अन्योन्य राशि संबंध होने से बलवान हो गया है।

राहू की दशा १८ वर्ष की थी (३०-४-१९३६ से ३०-४-१९५४) राहू जो छटे घर में शुक्र असुर मंत्री के साथ युक्त है, इस कारण राहू शुक्र का फल देगा। शुक्र चतुर्थ स्थान और लाभ का मालिक है, अगर हम चन्द्र कुण्डली से देखे तो शुक्र पंचम और दशमेश का मालिक होता है, धनु राशि में राहू स्थित हो तो दीन दुखियों की सेवा और तथा देश की सेवा के लिये हर प्रकार का उत्साह तथा येन केन प्रकारेण से सफलता प्राप्त करना। यहां शुक्र राजनिति के लिये कारक हैं, अतः राजनीति में दिलचस्पी दिनों दिन राहू दशा में बढ़ती गई तथा इसी दशा में आप जनता के नजदीक आई, खासकर स्त्रियों के। १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और शनि की अन्तर दशा में आप जेल गई, राहू और शुक्र एक राशि गत होने से भाग्येश गुरु शुक्र क्षेत्री होने के कारण तथा शनि सातवे घर का मालिक है, और सातवे घर को देखता भी है, जहां लग्नेश चंद्रमा स्थित है, यह अन्तंजतीय विवाह के लिये एक प्रवल योग बना मंगल लग्न से दूसरे घर में होने के कारण धन की कमी, बुध शनि के नक्षत्र में है, शनि आठवे घर का मालिक भी है, जो लग्न में स्थित है, तथा लग्नेश चन्द्र को पूर्ण दृष्टि से सप्तम स्थान में देखता है, तथा अष्टम स्थान पर जो शनि का स्थान है, मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता है, इस कारण ववाह विच्छेद योग वना। गुरु की दशा १६ वर्ष की है। ३०-४-१९५४ से ३०-४-१९७० तक)।

चन्द्र जो लग्नेश है, तथा गुरु के त्रिकोणस्थ है, चन्द्रमा पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है। गुरु वर्गोत्तम होकर नवमांश में भाग्य को देख रहा हैं, अर्थात् जन्म लग्न का भाग्येश नवमांश में भी वर्गोत्तम होकर भाग्य को देख रहा है। भाग्य का स्थान पिता का स्थान भी है। भाग्येश लाभ के स्थान पर स्थित है। इस कारण आपको पिता के साथ रहने से ज्यादा लाभ हुआ अत: ३०-४-१९५४ से १८-६-१९५६ तक जो गुरु की महादशा में गुरु के अन्र्तकालीन में आपका जीवन पिता के साथ ही अधिक व्यतीत हुआ और राजनीति क्षेत्र में शनै शनै प्रगति की तथा विदेश नीति एवं राजनीति का प्रशिक्षण आपने पिता से पूर्ण रूपेण प्राप्त किया।

१२-२-६२ से १२-११-६४ तक गुरु की महा दशा में शुक्र का अन्तर काल पिता के लिये अनिष्ट कारी था। कर्क लग्न में शुक्र पितृभाव से द्वितीयेश व सप्तमेश बनता है। ये दोनों स्थान पिता के लिये मारक होते है, शुक्र स्वयं ही द्वितीयेश व सप्तमेश दोनों होकर गुरु से षडाष्टक स्थिति में स्थिर हो गया है। अतः १९६४ मई मास में आपके पिता की मृत्यु हुई।

अगर हम श्रीमती इन्दिरा गांधी की जन्म कुण्डली पर दशवर्गीय बल पर विचार करे तो गुरु तीन स्थानों पर स्वराशीगत ४ स्थानों पर मित्रराशीगत, तीन स्थानों पर समराशीगत एवं दो स्थानों पर शत्रु राशि गत प्राप्त होता है। समराशिगत की साम्यावस्था रहती है, अर्थात् शुभ और अशुभ फलो में तटस्थ वृत्ति रहती है। तीन स्वराशी गत और चार मित्रराशिगत अर्थात सात स्थानों को पूर्ण बली व शुभ फलकारक बनता है, केवल दो स्थानों पर शत्रु राशिगत होने से अल्पसंख्यक मत बहुसंख्यक मत को कदापि नही दबा सकते, अत: सभी ग्रहों से अधिक शुभ फलदायक गुरु ही बनता है। पाठक कहेंगे कि कर्क लग्न

होने से गुरु अगर भाग्येश है, तो यह षष्ठेश भी हैं, जिसे शत्रु स्थान कहते है, ठीक है, पर यह नहीं भूल जाना चाहिये कि द्वादशवर्गीय वल में बहु संख्यकमत शुभ फल ही देगा एवं अशुभ फल-कारक षष्ठेश उसमे अल्पसंख्यक रह जाने से विपक्ष दल को जब तक गुरु की महादशा रहेगी तब तक पनपने नहीं देगा। यह निश्चित है। विपक्ष दल का यहां स्पष्ट अभिप्राय यह है कि वे लोग जो इनके विचारों के अनुकूल कार्य करने वाले न हों।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि गुरु वर्गोतम होकर नवमांश चक्र में भाग्य स्थान को देख रहा है, अर्थात् जन्म लग्न का भाग्येश नवमांश में भो वर्गोत्तम होकर भाग्य को देख रहा है, अतः गुरु की महादशा को स्वर्ण अवसर कह दिया जाय तो अत्युचित नहीं होगी इस दशा में आपके विचार राष्ट्र के भाग्य को बढ़ावा देगें, इसका मुख्य कारण भाग्येश का लाभ स्थित होना है एवं लाभ स्थित गुरू उद्योग भवन को भी देखता है, अत; स्वराष्ट्र निर्मित वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग होगा, एवं लाभस्थ गुरु पंचमस्थ सूर्य और बुद्ध पर दृष्टिपात कर रहे हैं सूर्य धनेश है। बुद्ध उद्योगेश एवं व्ययेश है अतः बुध वर्गीय समाज (पूंजीपतियों) एवं सूर्य वर्गीय समाज (राजाओं नवाबों) को राष्ट्र हित में त्याग भावना उत्पन्न करायेगा। इससे शायद बहुसंख्यक प्रजावर्ग की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा शोषण वृत्ति का नाश हो सके।

सारावली नामक ग्रंथ में बताया है कि वृषभ राशो का गुरु अगर सूर्य से दृष्ट हो तो नृप तुल्य योग बनता है, आगे इसी ग्रन्थ में यह भी बताया है कि वृषभ राशि का गुरु बुध से दृष्ट हो तो भूपति तुल्य योग बनता है। ये दोनों योग आपकी जन्म कुण्डली में है। योग कारक ग्रहो का फल उनकी महादशा व अन्तंदशा में ही प्राप्त हुआ करता है। यह ज्योतिष का प्रचलित सिद्धान्त है।

अत; ३०-८-१९६५ से ३०-१२-६६ तक के गुरु की महादशा में चन्द्र की अन्तरदशा भी शुभ फल कारक रही जैसे पहले बताया जा चुका है कि चन्द्र लग्नेश होकर वर्गोतम गुरु जो भाग्येश होकर लाभ के स्थान में बैठा है से पूर्ण दृष्ट है, अत: गुरु की महादशा में चन्द्र की अन्तरदशा में आप कांग्रेस सस्था की नेता चुनी गई यही नहीं २४-१-१९६६ को आप भारत की प्रधान मंत्री भी बनी भविष्य में गुरु में राहू का अन्तर ३०-४-७० तक रहेगा इसमें अपनी कूटनीति से शत्रुओं को पराजित कर (क्योंकि राहू शत्रु स्थान में स्थित है) जनहित के कार्य करती रहेगी। इसके उपरान्त शनि की दशा ३०-४-१९७० से ३०-४-१९८९ तक आवेगी जो गुरु की महादशा से उत्तम नहीं है। खासकर शनि में शनि का अन्तर जो कि ३०-४-७० से ३-५-७३ तक है। यह समय विशेष अरिष्ट कारक होने से दैविक आराधना आदि करनी चाहिये और इसमें प्रकाण्ड विद्वानों का सहयोग अनिवार्य है जिससे अरिष्ट निवृत्ति अवश्य हो जायगो। क्यों कि लग्नेश चंद्र छटे और सातवे घर की संधि में है, जो शनि राशि में है तथा शनि आठवे घर का भी मालिक है जो लग्न में बैठा है। शनि सूर्य के नक्षत्र में है, और सूर्य का घर चन्द्र लग्न से आठवा पड़ता है। शनि ६-८-१२ घर का Significator है जो षष्ठम से अष्टम कर्क राशि गत स्थित है, तथा अष्टम से जो शनि का ही घर है, षष्ठम स्थित है. तथा बारह में घर से दूसरे स्थान स्थित है। अत: सुरक्षा की काफी व्यवस्था करनी पड़ेगी।

May God bless her long life and prosperity.



जातक विचार से लग्न निर्णय

—केदारदत्त जोशी
ज्योतिश्शास्त्राचार्य

ज्यौतिष अनुसंधान केन्द्र राजस्थान, जयपुर परिवार के एक सम्भ्रांत सदस्य के घर में पौत्री (पुत्र की लड़की) ने इन्डियन टाईम रात्रि ८.१७ जयपुर में ही जन्म लिया है उदाहरण स्वरूप उक्त जातक की कुण्डली का निर्माण किया है, तदनुसार उसका शास्त्रीय-फलित विचार पाठकों के समक्ष रखा जा रहा है।

जन्म पत्रिका में लग्न स्पष्ट से ल०।११।सू०५।४। १ चं०८।२४।६मं० ८।६।० बु० ५।२०।३० वृ०५।१८ ४१ शु०४।३।२१ श०।१४।४५ और राहु स्पष्ट तक १०।२७।१७ राश्यादिक ये स्पष्ट आंकड़े है। यह निर्णय गणितीय पचागों के आधार से भी प्रायः स्वल्पान्तरित उक्त भांति की ही बनेगी। प्राचीन फलित में यदि, हर्षल, नेंपच्यून, अरूण, वरूण नामक ग्रहों को फलादेश दिया गया है तो क्रमश; इन दोनों का राश्यादिक स्पष्ट भी ५।१०।२६ तथा ७।३।० आता है।

आचार्य वाराह के अनुसारः—

१. लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि है, पितृ सामप्य का जन्म होता है।

२. उदयस्थेऽपिवामन्दे,""शनि लग्न में है, इसलिये पितृ परोक्ष का जन्म होना चाहिये।

प्रथम, द्वितीय, दोनों ग्रहस्थितियों के बलाबल से पिता बहुत दूर तो नही है, तो अत्यन्त समीप भीं नही मालूम पड़ते है। समीप में रहते हुये भी कन्या के जन्म समय पिता परोक्ष ही थे, ऐसा प्रतीत होता है।

३. शनि मेष लग्न के कर्कांश में है। अंश की प्रधानता से हृदय के समीप (उदर वक्षः स्थल आदि) में नाल वेष्टित लक्षण घटित होना चाहिए। लग्न पक्ष गौण मानने से शिर के किसी भाग में नाल लिपटी रहनी चाहिए थी।

४. वंश परम्परा की विशुद्ध आकृति (पिता की आकृति से अधिक मेल) की कन्या होनी चाहिए। अतः चन्द्रमा मित्र के विभाग में गुरू से दृष्ट है।

५. जलचर राशि तो लग्न में नही है, नवांश से कुछ जल संभव होने से प्रसूति घर के समीप जल की स्थिति होनी चाहिए।

६. पितृ पितामह का मकान या आत्मीय जनवास या स्वाधिकार सम्पन्न राज्य संबंधित घर में जन्म होना चाहिए।

७. भ्रातृ कष्ट (हल्का) के साथ कन्या की दीर्घायुस्य शुभ लक्षण सूचक ग्रह स्थिति है।

८. "वलवति सूर्यो कुजदृष्टे" सुन्दर प्रकाश स्थल का जन्म होना चाहिए।

९. चद्रमा पूर्ण है, नवम में है, सुन्दरतम दर्शनीय स्थान में जन्म होना चाहिए।

१०. "भृगुंज शुक्रे सुरम्यं रमणीयं, मनोरभं च परं नवं नूतनं चित्रयुतम्" चित्र कला आदि से दर्श-नीय घर में जन्म होना चाहिए।

११. जिस मकान या भवन में जन्म हुआ है, उसके पूर्व विभागीय कमरे में, जन्म, या जिस कमरे में जन्म हुआ है, उस कमरे में प्रसूतिका की खटिया (बैड) पूर्व पश्चिमाभिमुख होनी चाहिए।

१२. प्रसव समय में ६ या ७ स्त्रियां प्रसव घर में उपस्थित थी। निश्चयेन कम से कम एक तो विधवा भी थी। तीन महिलाएं घर के बाहर थी या ६ या और अधिक भी बाहर हो सकती है। (३ × इष्ट संख्या)

१३. कन्या का सुन्दरतम गौरवर्ण होना चाहिए।

१४. गले में नाभि तक प्राय: गले के आसपास प्राकृतिक कोई शुभ चिन्ह (तिल....आदि) होना चाहिए।

१५. कन्योत्पत्ति के १,६ दिनों मासों, वर्षों में पिता को सुख, आनन्द उन्नति, भिष्टान्न भोजनादि की प्राप्ति के साथ द्रव्य की स्थिति भी अच्छी रहनी चाहिए।

"वराह मिहिर" से आज तक की जातक विद्या की पद्धतियों से जातक के निकटवर्ती भूत और भविष्य फलों के कुछ संकेत इस लेख में दिये जा रहे है। इस आधार से शोध कार्यों में सहयोग की अच्छी दिशा मिल सकती है।

मेष लग्न के कर्क नवांश की स्थितिवश उक्त फलादेश की संगति कहां तक ठीक बैठती है; इसका निर्णय कन्या के माता पिता व निकट संबंधियों से ही होगा।

यदि उक्त फलादेश सही नही है, तो ज्यौति-विदों के लिये यह विचारणीय प्रश्न हो जाता है, और इस अनुसंधान पत्रिका के माध्यम से इस विषय में शोध कार्य का एक अध्याय प्रारंभ होता है। जैसे ऐसी स्थिति में—

१. सायन लग्न और ग्रह स्थिति से फलादेश करना उचित होगा क्या ?

२. अथवा बृहज्जातक जन्म विधि नामाध्याय ५ श्लोक २२ भट्टोत्पल—

"इहास्मिन्नाधान कालयोग वशाद्यथा हीनाधि-कांगानां गर्भसंभवो भवति तथा प्रसूतिकालेऽपि तादृग्योगवशात्तथा विधानमिव जन्म वक्तव्यम्........ पितृ मातृ........वक्तव्यम् यन्न संभवति तन्न वक्त-व्यम्। यथा गर्भ प्रसव काल निर्देशादि च एवमाधा-नकालात्प्रसवकाल्लाच्च यथैकोद्देशः कृतस्तथा प्रश्न कालादपि व्यक्तव्यः........"

चूंकि मुहुर्त ज्यौतिष के अनुसार गर्भाधान संस्-कार की परम्परा लुप्त हो चुकी है, जो मनुष्य की जीवन की उत्पत्ति और उसके भविष्य ज्ञान की कुण्डली का एक वैज्ञानिक आधार गर्भाधानकालीन इष्ट और उससे ज्ञात लग्न और ग्रहस्थिति से बनता था। तथापि आज भी त्रिस्कन्धज्ञ ज्यौतिर्विद प्रसव कालीन ग्रहस्थिति से, अथवा प्रश्न, शकुन आदि अनेक उपकरणों से गर्भाधान काल के ज्ञान में सक्षम हो सकते है।

अंत; जन्कालीन उक्त ग्रहकुण्डली आदि आधारों सेविलोम गणितादि क्रिया द्वारा गर्भाधान समय और उस इष्ट वश ग्रहकुण्डली का निर्माण ही सही फलादेश की एक कसौटी होगी, क्या ज्यौतिर्विद इस ओर प्रयास कर सकते है ?

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य फलादेश की वास्त-विकता का अन्वेषण ही है। उक्त जन्मपत्रिका एक उदाहरण के रूप में दिया गया है।

अतः ज्यौतिर्विदों से मेरा आग्रह है कि वे अपने सन्निकटवर्ती या सुलभ किसी भी प्रसव की ग्रह-स्थिति को दृष्टान्त मानकर उस पर फलादेश मीमांसा करेगें ताकि फलित ज्यौतिष पुनः अपने गौरव को अक्षुण्ण बनाये रख सके।

रहस्यमय अंक

—द्रोणाचार्य

विद्वानों ने अपने अनुभवों और अन्वेषणों का सार अत्यन्त संक्षेप में प्रकट किया है कि 'काल बड़ा बलवान होता है।' उदाहरण के तौर पर महाभारत के विजयी पांडवों को ही ले लें। एक समय था जब धनुर्धारी अर्जुन के गांडीव की टंकार से बड़े-बड़े योद्धाओं के दिल दहल जाते थे। महाबली भीमसेन की गदा शत्रु पर सदा विजय प्राप्त करती थी। युद्धोपरान्त वही अर्जुन था, वही भीम था, वे ही धनुषबाण थे और वही गदा थी मगर इन सबके होते हुए भी पांडवों की स्त्रियों के गहने साधारण डाकुओं ने लूट लिये और वे कुछ नहीं कर सके।

स्थूल रूप से काल तीन मुख्य भागों में विभाजित है। भूत, वर्तमान और भविष्य। भूत-जो बीत गया। बीते हुए समय की घटनाओं में मनुष्य की कोई रूचि नहीं होती। वह युग और भूतकाल की घटनाऐं ऐतिहासिक सामग्री बन कर रह जाती है। इतिहास प्रेमी उनकी छानबीन भले ही करते रहें मगर सर्व साधारण सर्वथा उदासीन हो जाता है। वर्तमान में व्यक्ति या समाज स्वयं ही उपस्थित रहता है अतः वर्तमान को देखता है, अनुभव करता है और भोगता है। अन्त में रह जाता है भविष्य। अनेकों रहस्यों में लिपटा यह भविष्य वास्तव में आकर्षण की वस्तु होता है। छोटे से लेकर बड़े तक हर व्यक्ति यह जानने के लिये प्रयत्नशील रहता है कि कल क्या होगा? उसका भविष्य अपने गर्भ में उसके लिये क्या क्या छिपाये हुए है?

इस रहस्यमय भविष्य की जानकारी कराने वाली विद्या ही ज्योतिष कहलाती है। इस अद्भुत व आकर्षक विद्या के कई आधार हैं। कोई कुंडली द्वारा भविष्य के रहस्य को जानने का प्रयत्न करता है तो कोई पांसों की सहायता से। कई विद्वानों ने इस रहस्य को जानने की भिन्न भिन्न प्रणालियां निकाली और सर्व साधारण के लाभार्थ उसे लिपि बद्ध भी कर दिया। ब्राह्मणों ने कुंडली द्वारा, जैनियों ने पाशाकेवली द्वारा तो यवनों ने रमल द्वारा भविष्य को जानने का प्रयत्न किया, और किसी सीमा तक सफल भी हुए मगर उन सब का आधार,–मूलभूत आधार रहे अंक। एक से लेकर नौ तक के अंक और शून्य–इनकी सहायता से ही बड़ी बड़ी संख्याऐं बनीं संख्याओं को ग्रह आदि से संबंधित करके भविष्य का रहस्य भेदन करने का प्रयत्न किया गया।

ये अंक–(एक से लेकर नौ तक) स्वयं अपने आप में इतने रहस्य पूर्ण हैं कि इनकी जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। इन रहस्यमय अंकों से मनुष्य किस प्रकार लाभ उठा सकता है–यह भी इस जानकारी के बिना संभव नहीं है। ज्यों ही इन अंकों की जानकारी का सवाल हमारे सामने आता है तो प्रश्न उठता है कि पूर्वजों ने ये अंक सिर्फ नौ ही क्यों बनाये? ग्यारह, पन्द्रह या बीस क्यों नहीं बनाये? ऐसा प्रश्न मस्तिष्क में उठना स्वाभाविक भी है। उत्तर भी इसका अत्यन्त सीधा और सरल है कि भारतीय ज्योतिष में ग्रह भी नौ ही हैं अतः अंक भी नौ ही बनाये गये और यूं स्वतः ही स्पष्ट है कि नौ अंक नौ ग्रहों से संबंधित हैं।

अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि विद्वानों ने कौन से ग्रह को कौन सा अंक प्रदान किया या कौन से अंक का अधिष्ठाता किस ग्रह को नियुक्त किया ? इस से पहले हम यह जान लें कि भारतीय ज्योतिष में ये ग्रह किस किस राशी से संबंधित हैं और ये संबंध कैसे बने ?

किसी भी एटलस को उठाकर आरम्भ के पृष्ठों में सौर मंडल के चित्र को देखिये जिसमें कि सूर्य से अन्य ग्रहों की दूरी दिखाई जाती है। मध्य में सूर्य मिलेगा, उसके सबसे निकट बुध मिलेगा। बुध के बाद शुक्र। शुक्र के बाद क्रमशः मंगल-गुरु और शनि आदि मिलेंगे। ये ही नौ ग्रह-बारह राशियों के अधिपति माने गये हैं। यह आधिपत्य ग्रहों को किस प्रकार प्राप्त हुआ इसे एक रोचक कहानी के रूप में सरलता से याद रखा जा सकता है।

कहानी यह है—सर्व प्रथम सूर्य और चन्द्र सिर्फ दो ही ग्रह थे। सूर्य दिन के स्वामी थे चन्द्रमा रात्री के। सूर्य ने बारह राशियों में से पांचवीं कोठरी (पांचवीं राशी-सिंह) को अपना स्थाई निवास बनाया और चन्द्र उसके पड़ोस की चौथी कोठरी (चौथी राशि-कर्क) में रहते थे। एक दिन बुध उनके पास आये और प्रार्थना की कि महाभाग, मुझे भी स्थान दीजिये। चन्द्रमा ने कृपा करके कहा-मेरे पड़ोस में बस जाओ। चन्द्रमा के पड़ोस में थी मिथुन राशी सो बुध उसके स्वामी बन गये। रात्री के समय जब चन्द्रमा संसार भ्रमण पर चले गये और सूर्य घर लौटे तो यही बात बुध ने उनसे भी कही कि महाराज, मुझे भी चरणों में स्थान दीजिये। सूर्य ने अपने पड़ोस की कोठरी कन्या राशी उसे प्रदान कर दी। बुध मिथुन और कन्या राशियों के स्वामी बने। उनके बाद आये शुक्र। चन्द्रमा ने उसे वृष राशी दी और सूर्य ने तुला। फिर आये मंगल। चन्द्रमा से मेष राशी और सूर्य से वृश्चिक राशी उन्हें मिली। उनके बाद पधारे गुरु बृहस्पति जिन्हें चन्द्रमा से मीन और सूर्य से धनु र हुई। सब से अन्त में आये महाकाय शनि। उन्हें चन्द्रमा से कुंभ राशी मिली और दिवाकर से मकर। यूं हर अतिथि ग्रह को दो दो राशियों का स्वामित्व मिला और सूर्य व चन्द्र के पास एक एक राशी ही रही।

अब हम अंकों और ग्रहों के संबंध पर विचार करेंगे।

भारत में किसी समय में यह अंकशास्त्र अत्यन्त उन्नत अवस्था में थी मगर जितनी यह लोक प्रिय थी उतनी ही जल्दी यह लोप भी होगई। जब विदेशियों का भारत में आना जाना शुरू हुआ तो भारतीय ज्योतिष का यह प्रमुख अंग संख्या शास्त्र यहां से विदेशों में पहुंच गया और विशेष रूप से अरब वालों में यह काफी लोकप्रिय हुआ। वहां से (अरब से) यह ज्ञान यूरोप पहुंचा और फिर इंगलैंड तक इसका प्रसार हुआ।

यूरोपीय विद्वानों ने इसे अंग्रेजी में परिवर्तित किया और अंग्रेजी के प्रत्येक वर्ण से इन अंकों का संबंध स्थापित किया जो निम्न प्रकार है।

A-1, B-2, C-3, D-4, E-5, F-8, G-3, H 5, I-1, J-1, K-2, L-3, M-4, N-5, O-7, P-8, Q-1, R-2, S-3, T-4, U-6, V-6, W-6, X-5, Z-7

ग्रहों के साथ अंकों का संबंध निम्न प्रकार है।

सूर्य-(1-4) चन्द्र-(2-7) मंगल-9, बुध-5, गुरू-3, शुक्र-6, शनि-8.

राहू और केतु ग्रह न होकर छाया ग्रह मात्र हैं अतः सूर्य के अंक १-व ४ का सूर्य व राहू में विभाजन कर दिया गया। सूर्य का अंक १ रहा और

राहू का ४ इसी प्रकार चन्द्रमा के अंकों का भी विभाजन हुआ अर्थात २ चन्द्रमा का रहा और ७ केतू का। पाश्चात्य विद्वान हमारे राहू केतु की जगह यूरेनस और नैपच्यून को मानते हैं अत: यूरेनस को ४ और नैपच्यून को ७ दिया। यही क्रम वहां अधिक मान्य है।

नई दुनिया (अमेरिका) के विद्वानों का मत इससे कुछ भिन्न है। उनके मतानुसार अंग्रेजी लिपि के अक्षरों का सांख्यिक मान (NumericalValue) निम्न प्रकार है।

A-1, B-3, C-4, D-4, E-2, F-5, G-8, H-9, I-7, J-6, K-3, L-2, M-1, N-5, O-8, P-7, Q-4, R-6, S-9, T-2, U-5, V-3, W-7, X-1, Y-8, और Z-6.

कुछ अन्य विद्वान ग्रीक गणितज्ञ पैथेगोरस के सिद्धान्तों के आधार पर इन दोनों उपरोक्त मतों से भिन्न ही मत रखते हैं। उनके मतानुसार सांख्यिक मान निम्न प्रकार है—

A1, B-2, C-3, D-4, E-5, F-6, G-7, H-8, I-9, J-1, K-2, L-3, M-4, N-5, O-6, P-7, Q-8, R-9, S-1, T-2, U-3, v-4, W-5, X-6, Y-7, और Z-8.

ग्रहों से संबंध निम्न प्रकार माना गया हे—

सूर्य-1, चन्द्र-2, मंगल 3, बुध=4, गुरू-5, शुक्र-6, शनि-7, यूरेनस-8 तथा नैपच्यून-9.

उपरोक्त भिन्न भिन्न सांख्यिक मानों को ध्यान से देखने पर कम से कम एक अन्तर तो स्पष्ट ही नजर आयेगा कि प्रथम मत वाले सिद्धान्त में किसी भी अक्षर का मान ९ नहीं माना गया है जब कि दूसरे और तीसरे सिद्धान्त में ऐसा नहीं है। यूरोपीय संख्या शास्त्रियों ने ९ के अंक को सर्व संपूर्ण माना है और वास्तव में ९ है भी ऐसा ही अंक। किसी भी छोटी से छोटी संख्या से लेकर बड़ी से बड़ी संख्या को ९ से गुणा करके गुणन फल के अंकों का योग करिये तो उत्तर सदा ही ९ मिलेगा। उदाहरणार्थ एक संख्या १२ ले लीजिये और दूसरी ३४२१९३४२१ इन्हे ९ से गुणा करने पर गुणन फल कमश: १२×९=१०८ और ३४२१९३४२१×९=३०७९७४०७८९ मिलेगा। अब इनके अंकों का योग करिये—१+०+८=९ तथा ३+०+७+९+७+४+०+७+८+९=५४=५+४=९ रहा। इस प्रकार ९ को पूर्ण अंक माना गया।

अब अधिक विस्तार में न जाकर हम इस बात पर विचार करेंगे कि ये अंक अपने आप में क्या क्या रहस्य छिपाये हुए हैं और हम उनसे किस प्रकार लाभ उठा सकते हैं। इस रहस्य को जानने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि कोई भी व्यक्ति अपना जन्मांक और नामांक अवश्य जान ले। इन्हें ज्ञात करने की विधि निम्न प्रकार है।

जन्माङ्क ज्ञात करने की विधि—मान लीजिये कि किसी व्यक्ति का नाम Deo Anand है और उसकी जन्म तिथि 5 जनवरी 1925 हैं। उसका जन्माङ्क ज्ञात करने के लिये जन्म तिथि के सभी अंकों का योग करिये। 5-1-1925=5+1+1+9+2+5=23=2+3=5. यही 5 उसका जन्माङ्क है। इसे आध्यात्मिक अंक या Spiritual Number भी कहते हैं।

नामाङ्क जानने की विधि—उपरोक्त व्यक्ति Deo Anand के नाम में प्रयुक्त सभी अक्षरों के नीचे उनका सांख्यिक मान (Numerical Value) रखकर जोड़ लीजिये-जैसे—

D E O A N A N D
4+5+7, 1+5+1+5+4
16 + 16
32 = 3+2=5. यही उसका नामांङ्क है।

अब संयोग देखिये कि जन्मांक और नामांक दोनों समान हैं। अगर जन्माङ्क को, जो कि ईश्वर प्रदत्त है और किसी भी हालत में बदला नहीं जा सकता; हम एक ब्रोड कास्टिंग स्टेशन मान लें और नामांक को एक रिसीवर सैट जो 5 पर Tune किया हुवा है तो स्वतः ही स्पष्ट हो जायेगा कि जो रहस्यमयी तरंगे जन्माङ्क प्रसारित करेगा उसे नामांक पूर्ण रूप से ग्रहण करेगा और परिणाम होगा Fine Reception इसे दूसरे शब्दों में यूं कहा जा सकता है कि देव आनन्द प्रकृति के साथ चल रहा है अतः पूर्ण रूप से लाभान्वित होगा— जीवन में उसे सफलता मिलेगी।

ऐसे संयोग अगर न बनें तो ?

मान लीजिये कि यही देवानंद अपना नाम Deo Anand की बजाय Dev Anand लिखने लगे तो उसका नामांक बदल जायेगा D=4+E=5+V=6=15 और आनन्द यूं का यूं ही 16 रहेगा। कुल योग होगा 15+16=31=3+1=4.

पहले लिखा जा चुका है कि 4 का स्वामी यूरेनस है अतः देव आनन्द यूरेनस की तरंगों से प्रभावित होने लगेगा 'जब कि ईश्वर या प्रकृति प्रदत्त अंक 5 उसके लिये भिन्न प्रकार की तरंगें प्रसारित करता है। परिणाम यह होगा कि ब्राड कास्टिंग स्टेशन 5 मीटर पर प्रसारण करेगा और देव आनन्द जी का रिसीवर सैट ट्यून मिलेगा 4 मीटर। रिसैप्शन कैसा होगा सो अब अनुमान लगा लीजिये और सफलता कैसी मिलेगी यह भी आसानी से समझा जा सकता है।

विस्तार पूर्वक सभी बातों पर विचार करना तो इस लेख में संभव नहीं है। अतः संक्षेप में यह कह देना पर्याप्त होगा कि मनुष्य को प्रकृति के अनुकूल चलने का प्रयत्न करना चाहिये। प्रतिकूल चलने वाले को प्रकृति स्वयं ही नष्ट कर देती है।

अन्त में हम अंकों के रहस्य का वर्णन करना उचित समझते हैं।

अंक-१—यह सूर्य का अंक है और सूर्य के समान ही शक्ति शाली होता है। इस अंक वाला स्वभाव से कुछ उग्र होता है। किसी के आधीन रह कर कार्य करने में वह अपना अपमान समझता है क्योंकि अपना मार्ग स्वयं बनाने की इस व्यक्ति में सामर्थ्य होतो है। अगर इस व्यक्ति पर अनुचित दवाव डाला जाये तो यह बगावत भो कर बैठता है। दृढ़ इच्छा शक्ति वाला होता है और किसी भी मामले में दूसरों से प्रभावित हुए बिना तुरन्त स्वतंत्र निर्णय करता है। अनुशासन प्रिय होने के कारण दूसरों पर कड़ाई से शासन करने का इच्छुक होता है। ऐसे जातक को अपने उच्चाधिकारियों से आदेश प्राप्त करते समय अपने आप पर खूब नियंत्रण रखना चाहिये-भड़कना नहीं चाहिये।

ऐसे व्यक्तियों को अपने महत्वपूर्ण कार्य १-१०-१९ और २८ तारीखों को करने चाहिये। अगर संयोगवश इन तारीखों में रविवार या सोमवार पड़े तो और भी शुभ दिन होगा।

ये लोग (१ अंक वाले) २,४ और ७ अंकों वाले व्यक्तियों के साथ भली भांति अपना निर्वाह कर सकते हैं। इनके लिये गहरे रंग अशुभ होते हैं और सुनहरा व पीला शुभ।

रत्नादि धारण करना चाहें तो सूर्यमणि, लाल या पुखराज पहनें।

सिकन्दर महान १ अंक वाले व्यक्ति थे (जन्म–१ जुलाई)

महमूद गजनवी—(१ नवंबर)

कैप्टिन कुक —(२८ अक्टूबर)

अंक २—इस अंक द्वारा शासित व्यक्ति वे होते हैं जो किसी मास की २, ११–२० और २९ तारीखों में जन्मते हैं। स्वभाव से ऐसे जातक रोमांटिक स्वभाव के होते हैं और अच्छे विचारक तथा वक्ता भी होते हैं। अपने मित्रों के केन्द्र बिन्दु बनकर उन्हें प्रभावित करते हैं। समुचित वातावरण मिले तो ये अन्वेषक भी बन जाते हैं। नम्रता और मधुर भाषण प्रधान गुण होता है। दोष सिर्फ यही होता है कि आज जिस कार्य को करने का दृढ़ निश्चय करते हैं कल उसे छोड कर, नयी योजना बनाने बैठ जाते है और अपने इसी अवगुण के कारण सफलता इनके हाथ आती आती रह जाती है। जहां तक आर्थिक पक्ष का संबंध है यह नम्बर विशेष लाभदायक नही है अतः इस अंक के व्यक्तियों को चाहिये कि अपने नाम के अंक को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करें। तात्पर्य यह है कि अपने आप को ३–५–६ आदि अंकों के आधीन प्रसिद्ध करें। दो नम्बर के व्यक्तियों के लिये चन्द्रमा का दिन सोमवार शुभ रहता है और चन्द्रमा का रत्न मोती ही इन्हें ऐसे ढंग से धारण करना चाहिये कि हर समय वह त्वचा से लगता रहे। श्वेत वस्त्र धारण करना स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव शालो सिद्ध होगा मगर काले और गहरे लाल रंग के वस्त्रों से बचना चाहिये।

अंक–३–किसी मास की ३–१२–२१ और ३० तारीखों को जन्म ने वाले व्यक्ति इस अंक के आधोन आते हैं। चूंकि इस शक्ति शाली अंक का स्वामी देवगुरु बृहस्पति है अतः जातक में इसी ग्रह के गुण अधिक मात्रा में विद्यमान रहते हैं। तीन नंबर वाले व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में अधीनस्थ होकर रहने से संतुष्ट न होकर अपने साथियों से ऊपर उठने का प्रयत्न करते रहते हैं। स्वभाव से उदार, सहायता देने वाले और महत्वाकांक्षी होते हैं। हर क्षेत्र में अनुशासन चाहते हैं और अवसर मिलने पर अच्छे शासक सिद्ध होते हैं। प्रेम संबंधी मामलों में इनमें दृढता और सचाई पाई जाती है—छिछोरपन या उथलापन नहीं होता। जिसे भी ये प्यार करते हैं उसके लिये त्याग भी करने में नहीं हिचकिचाते। प्रेम में निराश होने पर प्रेमी को ढोल बजाकर बदनाम करने की बजाय उसको याद को हृदय की गहराइयों में छिपा लेते हैं। बिना विरोध किये अपने उच्च अधिकारियों की आज्ञा का पालन करते हैं और चाहते हैं कि उनके अधीनस्थ भी उनके आदेशों का पालन करें। भविष्य की उन्नति संबंधी योजनाओं से अगर यह अंक संबंधित हो तो परिणाम भी शुभ होता है। ऐसे जातक सेना, जल सेना तथा सरकारी सेवा में शीघ्र उन्नति कर सकते हैं।

सप्ताह में गुरुवार तथा महीने में ३–१२–२१ और ३० तारीखें शुभ होती हैं और यदि इन तारीखों के दिन गुरुवार भी पड़े जो अत्यन्त शुभ। गुलाबी और बेंगनी रंग के वस्त्र इन को प्रसन्नता प्रदान करते हैं और इसी रंग के रत्न भी शुभ होते हैं।

इस अंक के ३ गुणक होते हैं ३ × २=६ तथा ३ × ३=९. इस लिये तीन नंबर वालों की ६ तथा ९ अंक वालों से अच्छी मित्रता निभ सकती है।

इस अंक के महापुरुष-चर्चिल-जन्म-३० नवम्बर
जहांगीर–जन्म–३० अगस्त
पंचमजार्ज-जन्म-३ जून।

हमारे देश भारत पर इस अंक ३ का खूब प्रभाव रहा है और रहेगा। उदाहरण के लिये यह देश संसार में India के नाम से जाना जाता है। सिद्धान्त नंबर एक के अनुसार इसका मान होगा–
I(१) + N(५) + D(४) + I(१) + A(१) = १२=
१ + २=३

प्रथम स्वाधीगता संग्राम=१८५७=१ + ८ + ५ + ७=२१=२ + १=३

स्वाधीनता मिली=१९४७=१ + ९ + ४ + ७=२१=२ + १=३

स्वाधीनता सेनानी गांधीजी की हत्या = ३० जनवरी=३+०=३

पाकिस्तानी आक्रमण १९६५=१+९+६+५=२१=२+१=३

? १९७१=१+९+७+१=१८=१+८=९ (तीसरा गुणक)

अंक ४—यूरेनस द्वारा शासित इस अंक से यथा शक्ति बचना ही चाहिये। यदि किसी का जन्म ही ४-१३-२२ या ३१ तारीख को हो तब जन्म तिथि में परिवर्तन करना तो असभव होगा मगर कम से कम जातक को नाम तो ऐसा धारण करना चाहिये जो योगांक ४ न दे। नाम में परिवर्तन कर लेना कोई असंभव कार्य नहीं है। इस अंक के जातक स्वभाववश हर आदेश व हर बात का उल्टा ही अर्थ निकाल कर असंतुष्ट रहते हैं और बगावत करते हैं या बगावत करने की योजना बनाते रहते हैं। परिणाम स्वरूप इनका दमन होता है और अपने ऊपर व्यर्थ ही मुसीबतें लाद लेते हैं। ऐसे जातक हर बात को व्यापारिक दृष्टि से ही देखते हैं-और अपना नफा ही सोचते हैं। लोग स्वार्थी कहते हैं। अच्छी संगत में बैठकर आमोद प्रमोद करने को ये समय नष्ट करना मान कर व्यर्थ ही अपने आप को काम में फंसाये रहते हैं। प्रेम संबंधी मामलों में सतर्क रह कर अपने प्रियजन पर भी भरोसा करने से हिचकिचाते हैं। अगर इनका बस चले तो ये सारी व्यवस्था को ही उलट पुलट कर देने की तैयारी किये मिलते हैं. अत्यधिक संवेदन शील होने के कारण यदि किसी कार्य में इन्हें सफलता नहीं मिलती तो अत्यन्त निराश होकर मुंह लटका कर बैठ रहते हैं। इन लोगों के अव्वल तो मित्र होते ही कम है और अगर कुछ होते भी हैं तो ये उनके पिछलग्गू ही बने रहते हैं।

रगों में आधा आसमानी या आधा हरा इनके लिये शुभ होता है।

रत्नादि में फीके रंग का नीलम इन्हें धारण करना चाहिये।

उपरोक्त वर्णन का यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि ४ अंक वालों में कोई महापुरुष हुआ ही नहीं। उदाहरण के लिये George Washington को ही ले लें। जन्म २२ फर्वरी था। परिणाम उपरोक्त ही होता मगर नाम की संख्या ने उसको बचा लिया और अपने गुण प्रदान कर दिये।

अंक—५-अत्यन्त शक्तिशाली और शुभ गिने जाने वाले अंकों में इसकी भी गिनती है। बुध द्वारा प्रभावित यह अंक अपने आप में अनेक विचित्रताऐं रखता है। अंग्रेजी में बुध को Mercury कहते हैं अत. इसके प्रभाव ही ऐसे ही होते है। स्वभाव इनका मर्करी (पारा) की तरह स्थिर नहीं होता मगर अपनी शारीरिक सुंदरता व हर कार्य में तत्परता दिखाने के कारण शीघ्र ही लोगों को प्रभावित करके अपना मित्र बना लेते हैं। जितना जल्दी किसी को अपना बनाते हैं उतनी ही जल्दी अपने चंचल स्वभाव के कारण दिल तोड़ कर चले भी जाते हैं।

इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जो ५,१४ व २३ तारीख को जन्म लेते हैं।

चंचल स्वभाव होने के कारण ये लोग हर बात का शीघ्र ही निर्णय करते हैं और शीघ्र ही कदम भी उठाते हैं। जिन कार्यों में दाव लगाना होता है उन कार्यो में ये बड़ी दिलचस्पी रखते हैं जैसे रेस, सट्टा इत्यादि। कहने का तात्पर्य यह कि कम समय में धनवान बनना ऐसे लोगों का प्रथम लक्ष्य होता है। ५ अंक वालों पर अगर कोई वार करे तो ये पलट कर फौरन ही वार करते हैं मगर दूसरे दिन सब भूल जाते हैं। इन लोगों के लिये ५, १४ व २३ तारीख व बुधवार शुभ होते हैं अगर दोनों साथ हों तो और भी शुभ। रत्नादि में हीरा व धातुओं में चांदी इनके लिये शुभ है।

इस अंक के महापुरुष–शेक्सपीयर–२३ अप्रैल
बाबर –१४ फर्वरी

अंक—६—यह विचित्र चुम्बकीय शक्ति रखने वाला नम्बर है जो शुक्र द्वारा प्रभावित रहता है। शुक्र को अंग्रेजी में Venus कहते हैं और सौंदर्य तथा प्रेम की देवी मानते हैं अतः ६ अंक वाले जातक अपने आकर्षक व्यक्तित्व और प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा सहयोगी प्रवृत्ति के कारण सहज ही लोगों को अपना मित्र बना लेते हैं। इस अंक का प्रभाव प्रेम संबंधों, स्त्री संपर्क तथा मातृत्व पर अच्छा पड़ता है। इनका गृहस्थी जीवन भी प्रेममय होता है जिसे प्यार करते हैं सच्चे दिल से करते हैं और उनके बेदाम के गुलाम हो जाते हैं। अपनी समस्त योजनाओं को बिना किसी से प्रभावित हुए दृढता से पूरी करने में जुटे रहते हैं। रोमांटिक प्रकृति के होते हुए भी आदर्श वादी होते हैं।

अच्छे मित्र, दयालु स्वामी और सहयोग देने वाले नागरिक होने के साथ ही साथ संगीत नृत्य व चित्रकला आदि के प्रेमी होते हैं। सप्ताह में शुक्रवार शुभ तथा महीने में ६–१५ व २४ तारीखें इनके लिये शुभ होती हैं। इन्हें फिरोजा या हीरा पहनना चाहिये।

इनकी मित्रता ऐसे व्यक्तियों से अच्छी निभ सकती है जो इसी ६ के गुणक वाले (३ व ९) होते हैं। क्रोधित होने पर ये भयानक शत्रु भी होते हैं। संक्षेप में यह एक भाग्यशाली नंबर है।

महापुरुषों में––क्लाइव–जन्म–१७२५=१५=१+५=६

महारानी विक्टोरिया २४ मई=२+४=६

अंक–७–यह नैपच्यून का अंक है और अपने जातकों को प्रायः एकान्त प्रिय बनाता है। यदि जातक इस प्रवृत्ति पर काबू न पा सके तो यह अंक उसे सर्वथा एकान्त वासी बना देता है। ऐसे व्यक्ति ७-१६–और २५ तारीख में जन्मने वाले होते हैं। चिन्तन इनका खास गुण होता है, संसार से विरक्त से रहते हैं अतः भौतिक उपलब्धियों में ये दूसरों से पीछे रह जाते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी निकलते हैं जो खूब सोच समजकर, खूब सलाह मशविरा करके साहसिक योजना बनाते हैं और उसे पूरा करके नाम अमर कर जाते हैं। इस अंक वाले व्यक्ति प्रायः ऐसे कार्य कर बैठते हैं जिसे दूसरे लोग उन्हें गलत समझने लगते हैं मगर फिर भी इनका व्यक्तित्व सबसे अलग ही नजर आता है। हृदय से हरिवर्तन प्रिय होते हैं। लम्बी-लम्बी यात्राओं की आकांक्षाऐं संजोये रहते हैं और देशाटन से खूब ज्ञान प्राप्त करते हैं। ऐसी कला पसंद करते हैं जिसमें खूब सोचना विचारना पड़ता है जैसे लेखन चित्रकारी तथा ग्रन्थ निर्माण–राज्य स्थापन या नये सिद्धान्त स्थापन।

शुभ दिन–सोमवार व तारीखे–७, १६ व २५.
शुभ रत्न–चन्द्रकान्त मणि या लहनिया या मोती।

प्रसिद्ध व्यक्ति—सर आइजक न्यूटन—जन्म–२५ दिसम्बर

वीर शिवाजी–जन्म—१६२७=१६=७

महाराजा रणजीत सिंह–जन्म-१७८०=१६=७

अंक–८–यह अंक शनि के आधीन है मगर कुछ लोग इसे यूरेनस का अंक मानते है। अनुभवों के आधार पर यह अंक शनि का ही सिद्ध होता है। जिस प्रकार भले आदमियों को नगर के दण्ड नायक या थानेदार से बच कर रहना चाहिये उसी तरह इस ८ के प्रभाव से भी बचना ही चाहिये क्यों सौर मंडल में (Solor System) शनि देव दण्ड नायक (Task Master) ही माने जाते हैं। ये ८ अंक वाले व्यक्ति जिस व्यक्ति में दिलचस्पी

नहीं लेते उसके साथ प्रादः अत्यत्त रूख और अभ्रद्र व्यवहार कर बैठते हैं और जिसे चाहत हैं सारे समाज के विरोध करने के बावजूद भी उसके बने रहते हैं। अधिक चुस्त चालक न होकर हठी स्वभाव के होते हैं। शरीर भी प्रायः सामान्य से कुछ स्थूल होता है और चाल भी धीमी पाई जाती है। किसी भी मास को ८-१७ और २६ तारीखों में जन्मने वाले व्यक्ति इस अंक के आधीन आते हैं।

इस अंक वाले जातक दूसरों द्वारा प्राय: गलत समझे लिये जाते हैं और ये ऐसा समझने लगते हैं जैसे समाज ने उन्हें तिरस्कृत कर के अपने से दूर कर दिया है। परिणाम स्वरूप ये भी समाज की ओर से तथा सामाजिक संगठन से उदासीन होते जाते हैं और यह प्रथकता की भावना कभी कभी उन्हें बागी बना देती है। यदि उचित मार्ग प्रदर्शन न मिल तो ऐसे व्यक्ति अपराधों की ओर भी झुक जाते हैं। इस प्रकार अपने जीवन में विचित्र रोल अदा करते हैं और उनकी अदाकारी का अन्त काफी दुखद होता है। भयानक दुर्घटनाऐं भी प्राय: इसी अंक से संबंधित रहती हैं। उदाहरण के लिये मुगल सम्राट शाहजहां को ही लीजिये अपनी बेगम ममताज को प्यार किया तो ऐसा किया कि ताज महल बनाकर उसे अमर कर दिया। ऐसे बादशाह का अन्त ऐसा हुआ कि अपने बेटे औरंगजेब की कैद में मरा। शाहजहां का जन्म १५९२ (१७=१+७=८) में हुवा था। अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह १८६२ (१७=१ +७=८) रंगून में मरा। शाहजहां संयोग वश गद्दी पर भी १६२८ (१७=१+७=८) में ही बैठा था। एक अण्य उदाहरण-१५०२ ई० में यूरोप से पहला विदेशी वास्कोडीगामा शासक बन कर आया और उसी दिन से भारत के भाग्य को ग्रहण लगा। प्रसिद्ध मंदिर सोमनाथ पर गजनवी का आक्रमण भी १०२५ में हुवा था।

इस प्रकार यह सिद्ध होता है ये ८ वाले व्यक्ति या तो अत्यन्त असफल रहते हैं या अत्याधिक सफल। जार्ज बर्नाडशा (जन्म-२६ जुलाई) सफलता के उदाहरण हैं।

अंक ९-इस अंक के स्वामित्व के बारे में भी मत भेद देखा जाता है। यूरोप वाले इसे 'मंगल का अंक मानते हैं और अमेरिकी विद्वान नैपच्यून का इसे नैपच्यून का कार्य क्षेत्र मानने वालों का कथन है कि इस अंक वाले जातक व्यापारिक क्षेत्र में सफलता पाने की अपेक्षा अपनी कलात्मक व अन्वेशक प्रवृत्तियों से अधिक लाभ प्राप्त करते हैं। इनकी मुख्य समस्या होती है किसी एक लक्ष पर अपना सारा ध्यान स्थिर करना और अपनी शक्ति को पहचानना। कला के क्षेत्र में इन्हें असीम सफलता मिलती है।

इस अंक को मंगल के आधीन मानने वालों का मत है कि ९-१८ व २७ तारीखों में जन्मने वाले व्यक्ति इससे प्रभावित होते हैं। ३ और ६ अंक वालों से इनकी मित्रता अच्छी निभती है। मंगलवार इनका शुभ दिन है मगर बुधवार और गुरुवार भी इनके लिये उपयुक्त होते हैं। लालरंग इनको प्रिय होता है और लाल रत्न शुभ। स्वभाव से ये व्यक्ति उग्र दुस्साहसी और दृढ निश्चय वाले होते हैं। प्रारम्भ में इन्हें काफी काठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं मगर अन्त में अपने दृढ निश्चय के कारण सफल रहते हैं। हर क्षेत्र में दूसरों से आगे निकलने की कोशिश करते रहते हैं। व्यस्त सड़क पर यदि किसी कार को बार बार आगे निकलने का प्रयत्न करते देखें तो समझ ही लीजिये कि उसका चालक अवश्य ही ९ अंक वाला है। ऐसा वह किसी कारण विशेष स नहीं करता उसका स्वभाव ही ऐसा होता है। ९ अंक वाले व्यक्तियों के लिये सेना, पुलिस,

फायर ब्रिगेड तथा ऐसे विभागों में उन्नति करने के अवसर अधिक मिलते हैं जहां कि साहस और निडरता की आवश्यकता पड़ती है। ये कुशल संगठन कर्त्ता और संचालक होते हैं बशर्ते कि अपने पर काबू बनाये रख कर कार्य करें। शत्रुता होने पर ये भयानक शत्रु सिद्ध होते है। इन्हें पराजित करने का सरल तरीका यह है कि स्वयं कुछ पीछे हटकर उन्हें बिजयी होने की गलत फहमी में पड़ जाने दीजिये और जब वे विजयोन्माद में फूल जायें तो अचानक चढ़ बैठिये-वे पराजित हो जायेंगे।

अन्त में हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि प्रकति के साथ चलिये-सफलता मिलेगी और अगर बिपरीत चले तो प्रकृति आपको नष्ट कर देगी। ★

लघु कथायें–जो शीर्षक न पा सकी (?)

पाठकों एवं लेखकों से विनम्र निवेदन है कि इस नये स्तम्भ में प्रकाशनार्थ भेजने वाली सामग्री को रुचिकर, व्यंगात्मक, एवं सरल भाषा में कम से कम शब्दों में दें ताकि उन्हें निर्धारित स्थान में प्रकाशित किया जा सके।

—सम्पादिका

★ एक गुरु के दो शिष्य थे। शाम को दोनों गुरुदेव के पैर दवाया करते थे। एक बायां दूसरा दायां–दोनों में पैरों का बंटवारा हो चुका था।

एक दिन एक शिष्य किसी काम से बाहर चला गया। दूसरा शिष्य अपने हिस्से में आये पैर को दवाता रहा इसी बीच गुरु ने करवट बदली तो दाहिने पैर के ऊपर बायां पैर आ गया । यह देखकर शिष्य बड़ा क्रुद्ध हुआ। दूसरे शिष्य का पैर मेरे पैर के ऊपर इसकी यह हिम्मत-उसने डण्डा उठाया और लगातार चार पांच डण्डे बांये पैर पर जमाये। गुरू जी चिल्ला पड़े। तब तक दूसरा शिष्य आ गया। कारण गुना तो गुरु भाई के कृत्य पर वह भी उत्तेजित हो उठा। उसने भी एक मोटा डण्डा उठाया और गुरु के दाहिने पैर को पीटने लगा। गुरु जी चीख मारकर रो पड़े। आश्रम के समीप के लोग दौड़े और गुरु को उन शिष्यो की भयंकर श्रद्धा-भक्ति से बचाया एक बुजुर्ग ने दोनों शिष्यों को समझाया-मूर्खो। तुमने यह भी नहीं सोचा कि एक दायां, एक बायां है तो क्या हुआ पैर तो दोनों एक ही गुरु के हैं किसो को पीटो कष्ट तो इन्ही को होगा। अपने काम की श्रेष्ठता पर सभी लड़ते झगड़ते और झूठी शान दिखाते हैं, कोई "यह नहीं सोचता कि काम तो सभी देश जाति के उत्थान के लिये किये जाते हैं तो उनका पालन, ईमानदारी, त्याग, तत्परता, लगन, श्रम और सच्ची भावना के साथ करना चाहिये।

—के. पी. वर्मा

★ सूरज आकाश में होकर गुजर रहा था तो उसने सुना कि कुछ लोग इकट्ठा होकर उसे देवता न कहकर आग का गोला मात्र बता रहे हैं। इस पर सूरज को बड़ा बुरा जान पड़ा और उसने दूसरे दिन अपने रथ पर चढ़ कर जाने से इन्कार कर दिया।

संसार में हलचल मच गई। प्रभात होने में देर होते देखकर सभी देव दानव चिन्ता में डूब गये। कारण जानने और बाधा को हटाने के लिये प्राची से कहा गया। प्राची ने सूरज की बहुत कुछ प्रशंसा और अभ्यर्थना की और उसे सदा की भांति रथ पर चढ़ जाने के लिये मनाया।

सूरज बोला–जिन लोगों का अनादि काल से मैं इतना उपकार कर रहा हूँ वे मुझे आग का गोला कहें, तो ऐसे कृतघ्नों का अब में मुँह भी न देखूंगा। अब मैं यात्रा पर जाना नहीं चाहता।

प्राची ने उसे समझाया—लोकदृष्टि तो बालकों द्वारा फैंके गये पत्थरों के समान है। विचारशील, समुद्र की तरह गम्भीर होते हैं, फैंके हुये पत्थर उसके गर्भ में विलीन हो जाते हैं। पर अहँकारी कच्चे घड़े के समान होता है जो छोटे से आघात को भी सहन नहीं कर सकता और जरा सी चोट में टूट कर छितरा जाता है। आपको क्षुद्र कच्चे घड़े की तरह नहीं वरन् गम्भीर समुद्र की तरह ही व्यवहार करना चाहिये।

सूरज विचारों में डूब गया और उसे यात्रा के लिये रथ पर सवार होकर जाना ही उचित जान पड़ा।

—शिवगोपाल मेहरोत्रा

★ हम अहंवादी हैं—अपने सामने किसी को कुछ नहीं गिनते । इसका ही एक अन्य फल यह होता है कि हमें अपने में गुण ही गुण दिखाई देते है। और हम दूसरों को दोषों का भण्डार समझते हैं। संसार में ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक नहीं होती जो आत्म प्रशंसा के इस रोग से मुक्त रह पाते है पर, जैसे हमें दूसरों को निन्दा करने में रस मिलता है वैसे ही हमारी निन्दा करना भी कुछ लोग अपना परम धर्म मानते हैं। सन्त कबीर ने ऐसे व्यक्तियों से संत्रस्त न होने की प्रेरणा दी है---

निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ।।

वे तो हमारे भाई है, हितू है, मुक्ति दाता है। उन्हें सिर आखों पर बैठाइये और उनसे बार बार आग्रह पूर्वक पूछिये कि उन्हें आपके स्वभाव में कौन कौन से दुर्गुण दिखाई देते हैं।

कहते है कि कच्चा वर्तन जरा सी आग पाकर ही तड़क जाता है। इसी प्रकार शीशे को जमीन पर डालिये, तुरन्त चकना चूर हो जावेगा, किन्तु मानव प्रकृति इससे सर्वथा भिन्न होनी चाहिये। अधैर्य अथवा असंय मनुष्य को शोभा नहीं देता। अपनी निन्दा सुनकर न तो कुपित होना चाहिये और न ही ऐसी बातों को अनसुना करना चाहिये हां, हम यह अवश्य कहेगे कि ऐसे लोगों के लिये आगन में कुटी बनवाने और वहां रहने की प्रार्थना करने के दिन अब नहीं रहे। आप उन्हें अवश्य अपने साथ चाय पीने के लिये आमन्त्रित कर सकते हैं और अपने दुर्गुणों की कुनैन को चाय की हर घूंट के साथ मधुर बनाकर ग्रहण कर सकते हैं।

—डा. सुरेन्द्र चन्द्र गुप्त एम. ए. पी. एच. डी.



ग्राहकों से निवेदन

ज्योतिष मार्तण्ड का ग्राहक बनने के लिये कम से कम एक बर्ष का अग्रिम शुल्क ८ रु० देना होगा। बिना एक वर्ष के शुल्क के दिये कोई महानुभाव ज्योतिष मार्तण्ड के ग्राहक नहीं बन सकेंगे। प्राप्त चन्दा किसी भी परिस्थिती में नहीं लौटाया जायेगा। चन्दे की दरो में परिस्थितियों के अनुसार विना पूर्व सूचना के वृद्धि की जा सकती है। ज्योतिष मार्तण्ड हर दूसरे महीने की पहली तारीख को प्रकाशित किया जायगा। अगला द्विमासिक अङ्क १–३–७० तक छप कर तैयार हो जायगा। एक प्रति १·५० रु०, वार्षिक ८ रु० विदेश में ३० शिलिंग में प्राप्त हो सकेगा।

जिन ग्राहकों का अग्रिम शुल्क जमा होगा वह मूल्य-वृद्धि होने पर जमा खर्च कर लिया जायगा। ग्राहकों के पते में परिवर्तन की सूचना पत्रिका निकलने वाले माह से पूर्व के माह की २० तारीख तक भेजना होगा। जिसमें पूरा नाम, पता व ग्राहक नम्बर साफ लिखा होना चाहिए।

यदि किसी ग्राहक की ज्योतिष मार्तण्ड की प्रति न मिले तो वह उसकी सूचना पत्रिका निकलने वाले माह की २० तारीख तक अवश्य भिजवादें। दूसरी प्रति भेजने का हर संभव प्रयास किया जायगा। यदि उपलब्ध न हुई तो उसके लिये सम्पादक जिम्मेदार न होगा।

—सम्पादक

सम्पादक के नाम पत्र

★ इस स्तम्भ में पाठकों के अपने-अपने विचार हैं जिसके लिये सम्पादिका उत्तरदायी नहीं है ।

★ स्तम्भ की लघुता को ध्यान में रखते हुये कृपया अपनी बात संक्षेप में ही प्रस्तुत करने का कष्ट करें ।

★ अनुसंधानात्मक लेखों पर लेखक अपने आपको किसी भी व्यक्ति के प्रति मनोमालिन्य अथवा राग-द्वेष से ऊपर उठ कर ही अपने विचार, प्रतिक्रिया, आलोचना एवं समालोचना प्रस्तुत करें । —सम्पादिका

★ महोदया,....२९ नवम्बर १९६९ के हिन्दुस्तान दैनिक के मुख्य पृष्ठ पर एक चित्र में छपा हैं जिसमें राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया के सामने "पंजाब" का हिन्दी नाम पट लगा हुआ है । वैसे जाहिर तरीके से यह एक भूल ही है, किन्तु कई बार यह तथ्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तरीके पर भावी का भी संकेत कर जाता है । इस चित्र (देखिये दैनिक हिन्दुस्तान २९-९-११-६९) को माध्यम मान कर देश के गण्यमान ज्यौतिविर्दो से अनुरोध करूंगा कि वे अपने ज्यौतिष सम्बन्धी विचार बंए निर्णय से अवगत कराऐं ।

—राजेन्द्र प्रसाद जैन एडव्रोकेट,

★ महोदया,....१. विंशोत्तरी महादशा का प्रारम्भ "कृतिका" नक्षत्र से क्यों किया जाता है जबकि नक्षत्र अश्विनी से ही शुरु होते हैं ?

२. ज्यौतिष शास्त्र में यह बताया गया है कि ग्यारहवें भाव में सब ही ग्रह शुभ फल देते हैं । दूसरी तरफ यह बताया गया है कि राहू, केतू व मंगल आदि क्रूर ग्रहों के साथ चन्द्रमा हो तो वह भी पाप ग्रह हो जाता है । इस पत्रिका के माध्मय से मैं देश के गणमान्य ज्योतिवर्दो से यह जानना चाहूंगा कि चन्द्र अगर ११ वें भाव में हो तो क्या शुभ फल देगा, इसी प्रकार धनु लग्न में शनि और शुक्र ११ वें माव में एक राशि गत तुला पर २०° और २५° के हों तो क्या शुक्र शुभ फल देगा ? क्योंकि ११ वें भाव में स्थित सब ग्रह शुभ फल देते हैं ।

—राधाकिशोर शर्मा, जयपुर

★ महोदया,....ज्यौतिष मार्तण्ड, ज्योतिष के क्षेत्र में एक उत्तम प्रयास हैं-मंत्रानुष्ठान एवं चिकित्सा का स्थायी स्तम्भ हो तो अधिक उपयोगी एवं आकर्षक रहेगा । अतः विद्वानों से अनुरोध है कि इस स्तम्भ के अन्तर्गत अपने लेख भेजे ।

—राधावल्लभ शर्मा, आऊवा

★ महोदया,....ज्यौतिष शास्त्र के रचयिता प्राचीन ऋषियों ने जहां राजयोग का वर्णन किया है, वहां राजभंग योग के लक्षण भी विस्तार से

लिखे हैं। प्रत्येक विद्वान का यह कर्त्तव्य है कि वह राजयोग के संबंध में जब विचार करे तब राजभंग योग के विषय में सब प्रकार से सुनिश्चित होकर राजयोग का फल बतलावें। ज्यौतिविर्दों को इस संबंध में निर्भय तथा निष्पक्ष रहना चाहिये। प्रायः देखा जाता है कि ज्योतिषी एक ही दृष्टि से यह बतला देते हैं कि जातक का राजयोग अति प्रबल हैं और यह प्रभावशाली, धन संपन्न तथा राज्यमान व्यक्ति होगा, परन्तु ऐसे व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करते हुये देखे गये हैं। ज्योतिष का कार्य करने वाले को या तो राजभंग लक्षणों का ज्ञान नही है अथवा जातक को प्रसन्न करने के लिये जो कटु सत्य है, उसे जानबूझ कर प्रगट नहीं करते हैं। कृपया आप इस पत्र द्वारा ज्योतिषियों से आग्रह करें. कि वे ज्योतिष विज्ञान की सत्यता को निर्भय तथा निष्पक्ष होकर प्रगट करें।

—नरोतमलाल आचार्य, जयपुर

★ महोदया,....मैंने ज्योतिष मार्तण्ड के गत दोनों अंकों का अवलोकन किया है। वैसे तो मेरी बचपन से ही ज्योतिष में अभिरुचि रही है। प्राचीन काल में जयपुर ज्यौतिष का महान केन्द्र रहा है मैं यह कामना करता हूं कि आपकी पत्रिका ज्योतिष मार्तण्ड अपने प्रदेश राजस्थान का ही नहीं भारत के गौरव की भी अभिवृद्धि करे। सदैव शुभ कामनाओं के साथ।

—हरीमोहन उपाध्याय, बरेली

★ महोदयाः—ज्यौतिष विद्या की उन्नति और प्रसार के हेतु आप जो अनथक परिश्रम और प्रयास कर रहे हैं वह स्तुत्य है। भगवान आप को इस दिशा में पूर्ण सफलता प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

—श्रीमती मायादेवी राणा
राभांवाल–देहरादून

★ महोदयाः—आपका ज्यौतिष मार्तण्ड देखा पढ़ा It is an authority in Astrology इसमें मुझे ज्यौतिष के बारे में काफी कुछ मिला है, आशा है आप इसे इसी प्रकार निकालते रहेंगे।

—उमानाथ शर्मा, भीलवाड़ा

★ ज्यौतिष विषय पर श्री देवधर पाण्डेय महामंत्री राजस्थान ज्यौतिष अनुसंधान अध्ययन केन्द्र का भाषण सुना, तदर्थं में उन्हें धन्यवाद देता हूं। भाषण से पता लगा कि श्री पाण्डेय एक अच्छे वक्ता, ज्यौतिष में काफी ज्ञान रखनेवाले, बात की पुष्टि काफी हास्य युक्ति और प्रमाण के आधार पर करते हैं, ईश्वर आपको सफलता दे।

—सीताराम उपाध्याय
जयपुर

★ महोदया,–मेरी मेष राशि। है पत्रिका में वर्णित राशिफल यथार्थ सिद्ध हुआ है। उदाहरण के लिए मई जून के महीनों में हानि का योग था जिसमें ऐसा लिखा था–"नए कारोबार में पूंजी लगाएंगे, जिसमें कठिनता से प्रगति होगी।" इस बात की परवाह न करते हुए मैंने कानपुर में डेरी खोली जिसका प्रारम्भ काफी छोटे स्तर पर किया था, परन्तु वह बेकार हो गया, और अब समाप्त हो गया है। इस कार्य को समाप्त करने से काफी कुछ बच गया है अन्यथा काफी नुकसान हो जाता।

जुलाई अगस्त सितम्बर में परिवर्तन सम्भव चित्त डांवाडोल....अक्टूबर नवम्बर में धन लाभ तथा सुखकारी हैं। इसे भी मैंने बहुत कुछ सत्य पाया है अतः मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ऐसी सत्य बातें बताने वाली पत्रिका एवं पत्रिका के कार्यकर्त्ता शीघ्र ही प्रगति की ओर बढ़ें।

—हरिशंकर वाजपेई, कानपुर

★ महोदया,--पुराणो में वर्णित कि रावण का पुत्र नारायण प्रतिदिन प्रातः चन्द्र लोक की सैर करने जाता था सत्य प्रतीत होती है। क्योंकि अमरीकी अान्तरिक्ष यात्री १२ जून १९६९ को चन्द्रतल पर उतर चुके हैं।

जितना व्यय इस अपोलों के निर्माण में हुआ यदि इतना व्यय समुद्र तल की खोज में लगाया जाता तो मानव जाति का कुछ न कुछ अवश्य ही भला होता।

चन्द्र अभियान का वास्तविक उदेश्य क्या है ? यह तो भविष्य बतायेगा।

—हरीमोहन, उन्नाव

★ महोदया,—वैसे तो ज्योतिष सम्बन्धी अनेक पत्र-पत्रिकाऐं निकलती हैं परन्तु पत्र-पत्रिकाओं को जनोपयोगी बनाना वास्तव में एक कठिन कार्य है। इस विषय में आपके द्वारा प्रकाशित "ज्योतिष मार्त्तण्ड" ने अपने जन्म काल से ही ज्योतिष-जगत में अभूतपूर्व जन जागृति उत्पन्न की है।

ज्यौतिष के वैज्ञानिक अध्ययन और शोध की बड़ी आवश्यकता है। आपका यह प्रयास इस दिशा में यदि ठोस योगदान दे सके, तो ज्यौतिष का और देश का बड़ा हित होगा। आपके इस प्रयास की सफलता के लिये हार्दिक शुभ कामनाएँ।

—डॉ० हरिकृष्ण छंगाणी एम. ए. डी. लिट्, फलौदी

★ महोदया,—"ज्यौतिष मार्तण्ड" पढा, धन्यवाद, आपका यह प्रयास सर्वथा स्तुत्य है। आज के समय में जब कि ज्यौतिष पर से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है इस प्रकार का पत्र कलियुगी अन्धकार में आकाशदीप की तरह उपयोगी है, इससे ज्यौतिष के प्रति लोगों की आस्था जमेगी। धन्यवाद।

—शिवगोपाल महरोत्रा-देहरादून,

★ महोदय:—"ज्यौतिष मार्तण्ड" पत्रिका से ज्यौतिषियों का मार्ग दर्शन होगा एवं ज्यौतिष पुनः अपनी खोई प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सकेगी ऐसी दृढ़ धारणा है, पत्रिका की सफलता की मांगलीक कामना करता हूं।

—चतुर्थी लाल शर्मा-रोंगस

★ महोदया—ज्यौतिष मार्तण्ड की प्रति मिली, अभीतक हिन्दी में इस प्रकार की पत्रिका का अभाव था जो साधिकार कहने का दावा कर सके। इस पत्रिका के प्रकाशन से जहां ज्यौतिष के प्रति लोगों की भावनायें दृढ़ होंगी, वहां जिज्ञासु पाठकों को अपने ज्ञानवर्द्धन के लिये देश के गण्यमान ज्यौतिविदों एवं विद्वानों के गवेषणात्मक लेख भी नियमित रूप से मिलते रहेंगे। आपके ज्यौतिष मार्तण्ड को देखकर आश्चर्य चकित रह गया कि आप इतनी सारी गवेषणात्मक सामग्री वह, भी "चन्द्रमा के बिषय में भारतीय शोध और अपोलो ११ का चमत्कार" "कैसे जुटा सकी। इसके लेखक केदारदत्त जोशी सचमुच बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के अन्य स्तम्भ जैसे त्रैमासिक राशि फल, पाठकों की व्यक्तिगत समस्यायें, ज्यौतिष विज्ञान सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर सब पाठकों के लिये आकर्षण का केन्द्र बने रहेंगे ऐसी आशा है। पत्रिका के लेखो का स्तर इतना अच्छा है कि इसे प्रत्येक महा विद्यालय में अन्य पत्रिकाओं के साथ छात्रों को पठन हेतु दिया जाना चाहिये।

आपने सचमुच पत्रिका के प्रकाशन में जिस साहस का परिचय दिया है वैसा तो पुरुष भी नहीं कर सकता। आपके कार्य की जितनी प्रशंसा करूं कम है। नव वर्ष में सुख, समृद्धि हेतु ढेर सारी शुभकानायें सहित।

—डा० प्रवीण नायक एम. ए. पी. एच. डी.
जबलपुर

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

इक्यावन कुण्डी विशाल गायत्री महायज्ञ, युगनिर्माण

卐 सम्मेलन एवं आचार्यप्रवर 卐

पं० श्रीराम शर्मा का शुभागमन

अखिल भारतीय गायत्री परिवार, तिनसुकिया शाखा असम द्वारा

स्थानः—स्टेट-ट्रांसपोर्ट के बगल में

धर्मप्रेमी बन्धुओं तथा शक्तिस्वरूपा देवियों !

आप लोगों को सूचित करते अपार हर्ष हो रहा है कि मोहग्रसित मनुष्यों को वेद का दिव्य ज्ञान देने तथा वास्तविक भारतीय अध्यात्म पर पूर्ण प्रकाश डालने हेतु गायत्री महायज्ञ तथा युग-निर्माण सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

ऋग्वेद के अनुसार यज्ञ एक सूक्ष्मतम वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिससे वायुमण्डल की शुद्धि होती है, जिसका सीधा प्रभाव मनुष्यों के विचार पर पड़ता है, जो सद्‌विचार, सद्‌बुद्धि की वृद्धि करता है। प्राचीन काल में देवतुल्य भारतवासी अपने अनुपम गुणों के कारण जगदगुरू के स्थान पर सुशोभित थे। आज भारतवर्ष ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व का वायुमण्डल आसुरी तत्त्वों से भर गया है। मानवता को इस भीषण संहार से बचाने हेतु यज्ञ एवं युग-निर्माण सम्मेलन अनिवार्य तथा कल्याणकारी है।

युग-निर्माण सम्मेलन का मूल सिद्धान्त विचारों की क्रान्ति है। स्वच्छ मन, स्वस्थ शरीर एवं सभ्य समाज की नव रचना ही इस युग की पुकार है। सद्‌बुद्धि की जननी गायत्री का घर-घर में अवतरण ही गायत्री-परिवार का भगीरथ प्रयत्न है। अखिल भारतीय गायत्री-परिवार द्वारा देश के कौने-कौने में गायत्री महायज्ञ, सत्संग, सत्साहित्य का प्रचार साधना, उपासना की पूर्ण विधि, निष्काम सेवा-वृत इत्यादि प्रक्रियाओं के व्यापक आन्दोलन चलाए जा रहे हैं, जिससे सारा देश महर्षि रमण, योगी अरविन्द, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द जैसे विश्व-प्रेमी आत्मदानी महापुरुषों से परिपूर्ण हो जाय।

इस पुनीत अवसर पर गायत्री परिवार का सम्मेलन भी आयोजित किया गया है जिसमें वेदमूर्ति तपोनिष्ट ऋषिवर युगपुरुष **पं० श्री राम शर्मा** आचार्य कुलपति, अखिल भारतीय गायत्री परिवार, संचालक अखिल भारतीय युग-निर्माण योजना, संस्थापक गायत्री तपो भूमि मथुरा (सिद्धपीठ) एवं सम्पादक "अखण्ड ज्योति" "युग निर्माण योजना" मासिक जो सारे विश्व में अद्वितीय साधना अंक के रूप में जगमगा रही है, जो गायत्री और यज्ञ तथा आध्यात्मिक जगत के तीन हजार आर्य ग्रन्थों के प्रणेता है जिसमें चारवेद, १०८ उपनिषद, ६ दर्शन, २४ स्मृतियाँ, गीता विश्वकोष तीनों भाग, गायत्री महाविज्ञान, १८ पुराणों की अत्यन्त विचार पूर्ण प्रेरणाप्रद टीका मुख्य है—स्वयं पधार रहे है। इस अलभ्य लभ्य अवसर पर देश के कौने-कौने से एक से एक तपे-तपाए दिव्य आत्मदानी निष्ठावान साधक भी पधार रहे हैं। इन्होंने आधुनिक भौतिक विज्ञान तथा भारतीय अध्यात्म का समन्वय करते हुए विश्व के वैज्ञानिकों तथा बुद्धिजीवियों का आह्वान किया है, ताकि वे अध्यात्म को भौतिक विज्ञान की भाषा में समझ सके कि भारतीय अध्यात्म केवल कोरी कल्पना ही नहीं, बल्कि आत्मा, शरीर तथा समस्त मानव समाज को पूर्ण विकसित करने का सूक्ष्मतम सर्वोपरि विज्ञान है।

अत: अनुरोध है कि स्वयं पधार कर एवं तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर अनन्त पुण्य और यश, कीर्ति के भागी वनें।

भवदीय—

भवानी प्रसाद गोयल (मंत्री)
अखिल भारतीय गायत्री परिवार
तिनसुकिया शाखा (असम)

पत्र व्यवहार का पताः—
भवानी प्रसाद गोयल भवानी स्टोर स्टेशन रोड
(तिनसुकिया असम)

ज्यौतिष मार्ण्तंड के वार्षिक ग्राहको को सुविधा

यदि आप ज्यौतिष-विज्ञान सम्बन्धी, उच्चस्तरीय पुस्तकें चाहते हैं, तो इनमें से चुनिये—

१. विशाल भृगु संहिता पद्धति — लेखक भगवानदास मीत्तल मूल्य १०)
२, ज्यौतिष रत्न — ,, डा० नारायणदत्त श्रीमाली ४)
३. कुण्डली दर्पण — ,, ,, ,, ,, ,, २)
४. सुवद हस्त रेखा — ,, ,, ,, ,, ,, ३)
५. भारतीय ज्यौतिष — ,, ,, ,, ,, ,, २)
६. नक्षत्र ज्यौतिष — ,, ,, ,, ,, ,, ६० पैसे
७. योग विचार–सात भाग — लेखक स्व : ह. ने. करवें १५) ५०
भाग एक मूल्य १) भाग दो मूल्य ३·५० भाग तीन २) भाग चार १·२५ भाग पांच २·२५ भाग छें ३) भाग सात २·५०
८. रवि विचार २), चन्द्र विचार २), मंगल विचार २·५०, बुध विचार २), गुरु बिचार २·५० शुक्र विचार २·५० शनि विचार २·५०, राहू, केतु विचार ३·५० — लेखक स्व. ह. ने. काठने १२·६०
९. सामुद्रिक दीपिका लेखक राज्य ज्यौतिषी लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी तीन भाग प्रथम भाग ४) द्वितीय भाग ७) तृतीय भाग १·६०
१०. जन्मांग नक्षत्र दीपिका लेखक राज्य ज्यौतिषी लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी मूल्य १·५० प्रथम भाग व द्वितीय भाग प्रेस में
11. Jaimini's Gnana Pradeepika. (Horary Astrology) By S.Kannan. Price Rs. 5=00
12. Swara Chintamani (Divinatton by breathion by Breath) ,, ,, Rs. 3=50
13. Fundamentals of Hindu Astrology. ,, ,, ,, Rs. 6=00
14. A guide of Astrology or Jyothisha Rahasyam. By. B. K. Lakshminarasimhiah Rs. 7=50
15. Astrological Correct Prediction. ,, Manu & Bhai.S.Shan Rs. 15=00 (Part I & II)
16. An Easy Way Of Casting Correct Horoscope. ,, ,, ,, ,, Rs. 6=00 (Part I & II)
17. Birth Chart and Strength. Of The housesin percentage. ,, ,, ,, ,, Rs. 5=00
18. Why Birth Chart Only. ,, ,, ,, ,, Rs. 1=00
19. Birth Chart and the Result of the Planets And it's-time. ,, ,, ,, ,, Rs. 3=50
20. Birth Charts and the Principles of Predictions. ,, ,, ,, ,, Rs. 2=00
21. Extract of Astrological Combinations. ,, ,, ,, ,, Rs. 3=00
22. Correct and Scientific Method of Yearly-Reading. ,, ,, ,, ,, Rs. 4=50
21. Bhrigu Sanhita Paddhati. By. Bhagawan Das Mittal.Rs.I0=00

यदि आप वार्षिक ग्राहक हैं तो आपको छपे मूल्य पर ५ प्रतिशत की छूट दी जायेगी पोस्टेज आपको स्वयं वहन करना पड़ेगा। वी० पी० पी० भेजने की व्यवस्था नहीं है मूल्य की धन राशि अग्रिम भेजने का कष्ट करें—

सम्पादिका

महर्षि पाराशर के मत से ग्रहों का शुभाशुभत्व

—कल्याणदत्त शर्मा
ज्यौतिषाचार्य

ज्यौतिष शास्त्र में, अहर्निश भ्रमणशील भचक्र के समान १२ भाग कल्पित कर प्रत्येक भाग को मेष वृषादि १२ राशियों के नाम से पुकारते हैं एवं सूर्यादि नव ग्रहों के नाम भी प्राय: सभी लोगों को ज्ञात हैं इन राशि और ग्रह के आधार पर ही सम्पूर्ण शुभाशुभ फल का विवेचन किया जाता है। किन्तु महर्षि पाराशर का मत इस विषय में भिन्नता रखता है। जातक ग्रन्थों में चन्द्र बुध गुरु शुक्र को शुभग्रह व शुभफल कारक माना है और मंगल शनि राहू के, व क्षीण चन्द्र को अशुभ ग्रह व अशुभ फल कारक माना गया हैं। परन्तु पाराशरीय दृष्टि का उपर्युक्त जातक पद्धति से मेल नही खाता उनका दृष्टिकोण ग्रह के शुभाशुभत्व से नहीं है वल्कि भाव के शुभाशुभत्व के ग्रह में शुभाशुभत्व आता है, इस लेख में इस बात का ही विचार किया गया है।

यावन्मात्र प्राणियों का जन्म मेषादि १२ राशियों में होता है यह बात निर्विवाद सिद्ध है। पाराशरीय मत से मेषादि लग्नजात प्राणियों के ग्रहों का शुभाशुभत्व निम्नोक्त है **मेष लग्नोत्पन्न** व्यक्ति के केन्द्राधिपति मं० च० शु० श० होते हैं एवं त्रिकोणाधिपति मं० सू० गु० होते है। महर्षि-पाराशर ने इन केन्द्र और त्रिकोणाधिपतियों का सम्बन्ध ही शुभ माना है जैसे मेष लग्न में शनि गुरु का सम्बन्ध सर्वोत्तम माना गया है हालांकि शनि, जातक पद्धति के मतानुसार पाप ग्रह है जो पाराशरीय दृष्टिकोण से सर्वोत्तम शुभफल कारक माना गया है।

बुध शुभग्रह होते हुये भी पाराशरीय मतानुसार तृतीय व षष्ठ भावाधिपति होने से अशुभफल कारक है इस प्रकार मेष लग्नजात व्यक्ति को सू० गु० श० का सम्बन्ध महान् शुभफल कारक है तथा इन ग्रहों की जब जब दशा अन्तर्दशा विदशादि प्रारम्भ होंगी वह समय हर प्रकार से शुभफल कारक होगा। मं० शु० का सम्बन्ध यदि सूर्य और गुरू से होगा तो शुभफल कारक होगा अन्यथा अशुभफल कारक होंगें। राहु केतु ग्रहों का सम्बन्ध श०गु०सू. से हो जाय तो महान शुभ फल कारक होगें बुध से सम्बन्ध होना अत्यन्त अनिष्टकारक होगा। इस प्रकार पाराशरीय दृष्टि से कोई शुभ ग्रह नहीं है और कोई अशुभ ग्रह नहो है केवल भावाधिपति के नाते ही शुभाशुभफल कारक होते हैं।

(२) **वृष लग्न** में सर्वोत्तम शुभफल कारक शनि होता है तथा गुरु महान् अशुभफल कारक होता है। बुध शुभफल कारक एवं चन्द्र मंगल शुक्र सूर्य इन ग्रहों का शनि बुध से सम्बन्ध हो जाय तो शुभफल कारक अन्यथा अशुभ होते हैं रा०के० भी बुध एवं शनि से सम्बन्धित शुभफल द्योतक होते हैं अन्यथा अशुभ फल कारक होते हैं।

(३) **मिथुन लग्न में** शु०श०गु०बु० का सम्बन्ध शुभ मंगल अशुभ सू०च० मध्यम फल कारक होते हैं। रा०के०श०गु०बु० से सम्बन्धित शुभफल कारक अन्यथा अशुभ होते हैं

(४) **कर्क लग्न में** मं० गु० का सम्बन्ध अत्यन्त शुभ होता है बु०श० ग्रह अशुभ फल कारक सू०च०

शु०रा०के० ग्रह मं० व गुरु से सम्बन्धित शुभ फल कारक अन्यथा अशुभ होते हैं।

(५) **सिंह लग्न में** मं०शु० का सम्बन्ध सर्वोत्तम, होता है इन दो ग्रहों से सू०च०गु० का सम्बन्ध हो जाय तो ये शुभ फल कारक होते हैं यदि इनका सम्बन्ध शनि से हो जाय तो अशुभ फल कारक हो जाते हैं। रा०के० का मं०गु०शु० से सम्बन्ध शुभ अन्यथा अशुभ फल कारक होता है।

(६) **कन्या लग्न में** बुध और गुरु का सम्बन्ध शुक्र व शनि से हो जाय तो उत्तम फल कारक होते हैं इस लग्न में बु० श० और शु० उत्तम फल कारक होते है मंगल अशुभफलदायी होता है सू० च० ग्रह शनि व शुक्र से सम्बन्धित शुभ फल कारक अन्यथा अशुभ होते हैं। रा० के० शुक्र शनि का सम्बन्ध शुभ अन्यथा राहु केतु अशुभ फल कारक होते हैं।

(७) **तुला लग्न में** चन्द्र बुध शनि शुभ फल कारक होते है। शुक्र गुरू अशुभ फल प्रद मगल का बुध व शनि से सम्बन्ध हो जाय तो शुभफल कारक होता है यदि मंगल का गुरू से सम्बन्ध हो जाय तो यही मंगल महान् अनिष्टफल प्रद हो जाता है। रा० के० केन्द्रस्थित होकर त्रिकोणेश श० बु० से सम्बन्ध स्थापित करें शुभ फल प्रद अन्यथा अशुभ होते हैं

(८) **वृश्चिक लग्न में** सू० च० गु० का सर्वोत्तम सन्बन्ध माना गया है। बुध अशुभ ग्रह। मं० शु०का सू० च० गुरू से सम्बन्ध हो जाय तो ये शुभ फल कारक अन्यथा मं० शु० अशुभ होते हैं केन्द्र त्रिकोणस्थ रा० के० का श० गु० सू० च० से सम्बन्ध उत्तम फल कारक अन्यथा शुभ नहीं होता।

(९) **धनु लग्न में** सू० बु० मं० सर्वोत्तम शुभ फल कारक होते हैं। गुरु का सम्बन्ध यदि मं० व सूर्य से हो जाय तो शुभ फल कारक अन्यथा गुरु अशुभ ग्रह है च० शु० निकृष्टफल कारक शनि मध्यम होता है। रा० के० इन दोनों का मं० सू० बु० से सम्बन्ध शुभ कारक अन्यथा अशुभ होता है

(१०) **मकर लग्न में** बुध शुक्र का सम्बन्ध अतीव श्रेष्ठ फल प्रद होता है। सूर्य और गुरु अशुभ फल प्रद होते हैं। मं० च० श० ये तीनो बुध और शुक्र से सम्बन्धित हों तों शुभफल कारक अन्यथा अशुभ फल प्रद होते हैं रा० के० का बुध शुक्र से सम्बन्ध शुभ अन्यथा रा० के० अशुभ होते हैं।

(११) **कुम्भ लग्न में** मं० शु० का सम्बन्ध अत्युत्तम माना गया है। यदि बुध भी मंगल शुक्र से सम्बन्ध स्थापित करे तो शुभ है अन्यथा अष्टयेशत्व का दोष, पञ्चमेशत्व के शुभ फल से अधिक बढ़ जाने से बुध शुभ फल कारक नहीं होता। चन्द्र प्राय अशुभफल प्रद शनि ग्रह बुध शुक्र मंगल से सम्बन्धित शुभ ग्रह अन्यथा अशुभ होता है। सूर्य और गुरू की दयनीय दशा रहती है। रा० के० का मंगल शुक्र व बुध से सम्बन्ध श्रेष्ठ माना गया है अन्यथा अशुभ फल कारक होते हैं।

(१२) **मीन लग्न में** मंगल गुरु चन्द्र सम्बन्ध अतीव शुभ फल प्रद होता है बुध का चन्द्र व मंगल में से किसी से भी सम्बन्ध होना शुभ है अन्यथा बुध अशुभ हो जाता है। सू० श० शुक्र अशुभ फल कारक होते हैं।

आशा है इस लेख से साधारण ज्यौतिष शास्त्र के ज्ञाता अवश्य लाभ उठावेंगें अपने परिचित व्यक्तियों की जन्म कुण्डलियां एकत्रित कर उनके जीवन से सम्बन्धित शुभा शुभफल को उपयुर्क्त नियमों द्वारा घटित करेंगें तो अवश्य सत्य होगा।



ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर

—देवधर पाण्डे
महा मन्त्री

"ज्योतिष मार्त्तंड" में उन सभी पाठकों के ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी कतिपय महत्व-पूर्ण प्रश्नों के निःशुल्क उत्तर प्रकाशित किये जाते हैं, जो पत्रिका के नियमित ग्राहक हैं। प्रश्नों के साथ पत्रिका में प्रकाशित कूपन भेजना अनिवार्य है।

कुछ पाठकों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर नीचे दिये जा रहे हैं।

—सम्पादिका

प्रश्नः—श्रीमती इन्दिरा गाँधी की शनि की दशा आने वाली है। शनि की सन्तुष्टि का क्या उन्होंने कोई प्रयत्न किया है, सुना है कि श्रीमती गाँधी की माता श्री आनन्दमयी ने एक रक्षा कवच श्रीमती गाँधी को दिया है।

—राधामोहन दिल्ली

उत्तरः—श्री श्री माँ आनन्दमयी आधुनिक सिद्ध, संत महा पुरूषों में एक महान् दैवी विभूति हैं, जहां तक हम समझते हैं वे किसी को भी कवच मंत्रादि नहीं देती, हां श्रीमती गांधी की माता श्रीमती कमला नेहरू श्री श्री मां आनन्दमयी की अनन्य भक्त थी, और मातृ संस्कार वश, श्रीमती गांधी श्री माता श्री आनन्दमयी के श्री चरणों में यदा-कदा पहुँचती हैं। अतः सन्त स्व-भावानुसार आदरणीया माताजी का आशीर्वाद मिलना स्वाभाविक ही है, श्रीमती गांधी जो रूद्राक्ष की माला धारण किये हुए हैं वह अवश्य श्री माता आनन्द-मयी ने दी है। वैसे प्रधान मन्त्री तिरूपति भगवान के मन्दिर को भेंट भेज चुकी हैं, भगवान रक्षा करें, यही हमारी प्रभु से प्रार्थना है।

प्रश्नः—बहुत से जातकों की कुण्डली सामान्य अवस्था बतलाती है जबकि उसी कुण्डली का जातक वास्तविक परिस्थिति में अत्युत्तम होता है, साथ ही कुण्डली में अत्युत्तम स्थिति प्राप्त करने वाला जातक प्रत्यक्ष परिस्थिति में विपरीत स्थिति में दिखाई देता है। ऐसा क्यों?

—भगवती प्रसाद, इलाहाबाद

उत्तरः—इसके कितने ही कारण हैं। स्वयं जातक की कुण्डली, जातक के जन्म के पूर्व के शुभाशुभ कर्म, जातक के घर के व्यक्तियों की कुण्डली का प्रभाव, जातक की पत्नी पुत्र पुत्रियों आदि की कुण्डली का प्रभाव, घर के पूर्वजों का पुण्य या पाप कर्मों का प्रभाव, घर के नौकर जानवरों इत्यादि का प्रभाव जातक पर पड़ता है, उदाहरण के लिए एक व्यक्ति की कुण्डली में दरिद्र योग है किन्तु वह लखपती है इसका कारण उसके घर पर जाने पर पता लगा कि उस व्यक्ति के नौकर चाकरों की कुण्डली में धन योग और वाहन योग उच्च और

उच्च पड़े हुए हैं जिनका उपयोग वह व्यक्ति करता है।

प्रश्नः—हम हाथ देख कर कैसे पता करें कि यह जातक देश का बड़ा नेता, व्यापारी, या फिल्म एक्टर बनेगा ?

—मञ्जू, जयपुर

उत्तरः—बड़ा नेताः—जिसके हाथ में अनामिका के के मूल में पुण्ड नाम रेखा हो। और मणि-बन्ध से भाग्य रेखा सीधी शनि पर्वत या शन्यंगुली पर जाय। तथा सूर्य रेखा मस्तक रेखा से मिली हो। और मस्तक रेखा स्पष्ट सीधी हो, तथा गुरु की ओर झुकने से चतुष्कोण बनाए एवं शनि पर्वत पर त्रिशूल चिन्ह बन जाय। चन्द्र रेखा का भाग्य रेखा से शुद्ध सम्बन्ध हो। या भाग्य रेखा हथेली के मध्य से प्रारम्भ होकर उसकी एक शाखा गुरु पर्वत पर और दूसरी सूर्य पर्वत पर जाय।

तो ऐसा व्यक्ति राज्य का बड़ा नेता बन कर बहुत समय तक राज्य सुख भोगने वाला, धनवान, शासक, सर्व सुख सम्पन्न होता है।

बड़ा व्यापारीः—जिसके हाथ की शनि और सूर्य की उंगलियां बराबर हों। हाथ गोल पतला चपटा हो, एवं मस्तक रेखा सीधी हो। कनिष्ठिका में अनामिका से अधिक उर्ध्व रेखाएँ हों और बुध रेखा मस्तक रेखा में जा मिले।

तो ऐसा व्यक्ति बड़ा व्यापारी, महाजन, यश और लाभ पाने वाला होता है ?

बड़ा फिल्म ऐक्टरः—जिसकी उंगलियां सम-कोण से कोमल हों, चन्द्र, बुध, शुक्र उच्च हों, उस पर गहरी रेखायें फैली हों, अंगुष्ठ और उंग-लियों के कोण उठे हों, साथ ही मस्तक रेखा की एक शाखा बुध क्षेत्र पर जाती हो, सूर्यांगुली गोल, पतली व लम्बी हो, अगूंठा सिरे पर पीछे की ओर मुड़ा हो, वह पुरुष या स्त्री बड़ा फिल्म ऐक्टर, धनवान तथा देश में नाम प्राप्त करने वाला बनता है।

प्रश्नः—विवाह न होने के या पति/पत्नी सुख न होने का क्या होग है ?

—परमानन्द, इटावा

उत्तरः—१. पाप युक्त सप्तमेश ६।८।१२ भाव में हों अथवा नीच या अस्तंगत हो तो विवाह का अभाव होता है।

२. सप्तमेश बारहवें भाव में हों तथा लग्नेश और जन्म राशि का स्वामी सप्तम भाव में हो तो विवाह नहीं होता।

३. षष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश सप्तम भाव में हों, शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट न हों अथवा सप्तमेश ६।८।१२ भाव के स्वामी हो तों पति/पत्नी सुख नही होता।

४. शुक्र चन्द्रमा एक साथ किसी भी भाव में बैठे हों, तथा शनि और मंगल उनसे सप्तम भाव में हों तो विवाह नहीं होता।

५. सातवें और बारहवें भाव में दो दो पाप ग्रह हों तथा पंचम में चन्द्रमा हो तो जातक का विवाह नही होता।

६. शनि चन्द्रमा के सप्तम में रहने से भी विवाह नहीं होता। अगर शुक्र बलवान हो तो विवाह के बाद भी तलाक ले लिया जाता है।

७. गुरु भी सप्तम में स्त्री सुख का बाधक है।

८. शुक्र और बुध सप्तम में एक साथ हों तथा पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होता।

प्रश्नः—जन्म पत्री से मकान का सुख कैसे जानेगें ?

—ललिता देवी सारस्वत भूपाल

उत्तरः—जन्म पत्र में चतुर्थ भाव से मकान, पिता, मित्र आदि के सुख का विचार करते हैं, इस स्थान पर शुभ ग्रह या शुभ ग्रह की दृष्टि होने से मकान का सुख होता है। चतुर्थेश पुरुष ग्रह हो और बली हो तो पिता का पूर्ण सुख तथा मकान आदि को प्राप्ति होती है। चतुर्थ स्थान पर चन्द्र बुध और शुक्र इनमें से किसी की पूर्ण दृष्टि हो तो बाग बगीचा। चतुर्थ भाव गुरु से युक्त या दृष्ट होने पर सुन्दर मकान मय देवालय के। बुध से युक्त या दृष्ट होने पर सुन्दर मकान का सुख होता है।

प्रश्नः—भाग्योदय कब होगा ? कैसे जानें।

—उमाकान्त शर्मा बीकानेर

उत्तरः—सप्तमेश या शुक्र ३।६।१०।११ या ७ वें भाव में हों तो ववाह के बाद।
भाग्येश रवि हो तो २२ वर्ष में।
,, चन्द्र हो तो २४ वर्ष में।
,, मंगल हो तो २८ वर्ष में।
,, बुध हो तो ३२ वर्ष में।
,, राहू केतु हो तो ४२ बें वर्ष में भाग्योदय होता है।

प्रश्नः—अकस्मात या ससुराल से धन मिलने का योग ?

—रमाशंकर फिरोजाबाद

उत्तरः—सप्तम और चतुर्थ स्थान का स्वामी एक ही ग्रह हो वह सप्तम या चतुर्थ में हो तो ससुराल से धन मिलता है। द्वितीयेश और चतुर्थेश शुभ ग्रह के साथ नवम भाव में शुभ राशि गत हो कर स्थित हों तो भूमि से धन मिलता है। लग्नेश द्वितीय भाव में हो और द्वितीयेश एकादशस्थ हो तो लौटरी से धन मिलता है।

प्रश्नः—सफल प्रेम विवाह का योग बतावे।

—शीला मसानी कानपुर

उत्तरः—जिस पुरुष और स्त्री की जन्म कुण्डली में सप्तमेश का व्यत्यय पंचमेश से होता है, उसका विवाह प्रेम विवाह (love marriage) होता हैं क्योंकि पंचमभाव प्रियतमा का है और सप्तम विवाह का— सफल प्रेम विवाह के लिये यह योग दोनों (स्त्री पुरुष की) जन्म कुण्डली में होने चाहिये तथा शुक्र शुभ स्थान पर होना चाहिये।

प्रश्नः—क्या अष्टक वर्ग से ज्योतिष का सही फलादेश सम्भव है ?

—सीताराम, जयपुर

उत्तरः—केवल अष्टकवर्ग सिद्धान्त से ही पूर्ण फलादेश सम्भव नहीं। क्योंकि इस सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य अपर्याप्त है, वर्तमान में जो कुछ साहित्य इस सम्बन्ध में उपलब्ध है उसमें अनेकों शंकायें पैदा हो जाती हैं जैसेः—

आयु गणना करते समय एक ही स्थान में एक ही दिन ४० मिनट के अन्तर पर जन्मे समान लग्न वाले तीन भिन्न २ व्यक्तियों की आयु गणना करना चाहें तो लग्न एक ही होने से उन तीनों के ग्रहों की स्थिति भी समान ही होगी, परिणामतः

उन तीनों की आयु भी समान ही ज्ञात होगी किन्तु ऐसा होता नहीं है, एक जीवित रहता है और दूसरा मृत्यु को प्राप्त होता है, इससे उपरोक्त सिद्धान्त से समान आयु सिद्ध नहीं होती।

इसी प्रकार एक पति-व-पत्नी का उदाहरण लें, जिनकी जन्म तिथियां भिन्न २ हैं। क्या अष्टक वर्ग द्वारा दोनों की सन्तान गणना-समान सिद्ध होगी ? नहीं।

प्रश्नः—क्या ज्यौतिष शास्त्र में ऐसे भी योग हैं जिससे जारज (पिता के अतिरिक्त अन्य से उत्पन्न होने का ज्ञान हो सके।

उत्तरः--जारज योग का विशद रूप से ज्यौतिष शास्त्र में बिचार किया गया है।

(१) छठे आटवें स्थान के स्वामी चन्द्र मंगल से युक्त होकर चतुर्थ भावस्थ हों तो जारज बनता है।

(२) षष्ठ और नवम भाव के स्वामी पापग्रहों से युक्त होवें।

(३) षष्ठ और नवम के स्वामी शनि से युक्त हों तो शूद्र के, बुध से युक्त हों तो वैश्य के, सूर्य से युक्त हों तो क्षत्रिय के, गुरु व शुक्र से युक्त हों तो ब्राह्मण के वीर्य से उत्पत्ति जाने।

(४) केन्द्रस्थान के स्वामी से तृतीय भाव के स्वामी का योग हो।

(५) २, ३, ५, ६ भावों के स्वामी लग्नस्थ हों।

(६) लग्न में पापग्रह, सप्तम में शुभ ग्रह और दशम में शनि हो।

(७) लग्न में चन्द्र, पञ्चम में शुक्र और तृतीय भाव में मंगल हो।

(८) लग्न में सूर्य और चतुर्थ में राहू होवे तो चाचा से उत्पन्न हुवा जाने।

(९) लग्न में राहू मंगल, और सप्तम में सूर्य चन्द्र हों तो नीच जाति से उत्पन्न हुवा जानना चाहिये।

(१०) सम्पूर्ण ग्रह २, ६, ८, १२ स्थान में हों तो जारज योग बनता है।

(११) दशम, लग्न, चतुर्थ में पापग्रह से युक्त चन्द्र स्थित हो और चन्द्र व लग्न को गुरु नहीं देखता हो।

(१२) सूर्य चन्द्र एकत्र स्थित हों उस पर गुरु की दृष्टि न हो।

(१३) लग्न, चतुर्थ, षष्ठ, नवम, भाव के स्वामियों का योग हो।

(१४) नवम, चतुर्थ भावों में पापग्रह हों लग्नेश निर्बल हो।

(१५) चतुर्थ स्थान पापग्रहों के बीच में हो लग्नपति निर्बल हो।

(१६) चन्द्र शनि का योग हो।

(१७) सप्तमेश धनभाव गत पापग्रहों से युक्त एवं भौम से दृष्ट हो।

इन योगों में जातक जारज होता है किन्तु यदि लग्नेश लग्न में हों अथवा लग्न को देखता हो तो जारज योग भंग समझना चाहिये। लग्न में गुरु हो अथवा लग्न पर गुरु की दृष्टि हो तो जारज योग भंग समझना चाहिये। लग्न तथा चन्द्रमा गुरु की राशि का अथवा गुरु के दशवर्ग में गया हो तो जारज योग का भंग समझना चाहिये। इन तीनों जारज भंग योगों का अभाव हो और उपर्युक्त जारज योगों में से ४,५ योग जन्मकुण्डली में उपलब्ध हो जांय तो निश्चित जारज समझना चाहिये।

आभार-प्रदर्शन

हमें निम्नांकित महानुभावों का पत्रिका के प्रचार और प्रसार में सहयोग प्राप्त हुआ है। हम इनके प्रति आभारी हैं।

१. श्री भवभूति शर्मा एम. ए. जयपुर
२. ,, लक्ष्मीनारायण, नरसिंहगढ़ (म. प्र.)
३. ,, घासीलाल मानव,-अजमेर
४. ,, वी. आर. त्रिवेदी, भूपाल
५. ,, अम्बालाल–मणिलाल पटैल, उडीसा
६. ,, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, व्यावर
७. ,, तिलकधारी उपाध्याय, बिहार
८. ,, शिवगोपाल महरोत्रा, देहरादून
९. ,, जगन्नाथाचार्य, कुण्डेरा
१०. ,, एन. एस. राणा, रायपुर
११. ,, सु. प्र. द्विवेदी, देवास
१२. ,, श्री सौ. शा. शर्मा, हिन्दूपुर
१३. ,, श्यामसुन्दर, हिसार
१४. ,, केदारदत्त जोशी, वाराणसी
१५. श्री गोचर शर्मा, रतलाम
१६. ,, अरुणकुमार, वाराणसी
१७. ,, केदारनाथ प्रभाकर, सहारनपुर
१८. ,, हीरालाल शर्मा, कुल्लू
१९. ,, हनुमान प्रसाद जोशी, कलकत्ता
२०. ,, राजेन्द्र प्रसाद एडवोकेट, भवानी मन्डी
२१. ,, वल्लभ व्यास, बम्बई
२२. ,, रामेश्वर प्रसाद त्रिवेदी, कानपुर
२३. ,, वाइकोली ज्योति उडीसा,
२४. ,, दिलीपकुमार जेटली, अमृतसर
२५. ,, अनन्तराम शर्मा, जयपुर
२६ ,, नटवरसिंह सोलंकी एम० ए० जयपुर

सम्पादिका

आपके लिये

"ज्योतिष मार्तण्ड" का वार्षिक चन्दा केवल आठ रुपये है। आप यदि इसके पांच ग्राहकों से आठ आठ रुपये के मनीआर्डर भिजवाने में सफल हों तो **ज्योतिष मार्तण्ड** पूरे वर्ष भर आपकी निःशुल्क सेवा करेगा यह १-१-१९७० से ३१-३-१९७० तक के समस्त ज्योतिष प्रेमियों के लिये एक स्वर्ण अवसर है।

सम्पादिका

कुछ ही प्रतियां बाकी बची है !

ज्योतिष मार्तण्ड के प्रथम अंक की अब चन्द ही प्रतियां शेष रह गई है, जो महानुभाव उक्त अंक खरीदना चाहें वे तुरन्त एक रुपये २५ नये पैसे के डाक टिकट भेजकर अंक प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पादिका

आचार्य वराहमिहिर–स्मृति उत्सव

आचार्य वराहमिहिर जो भारतीय ज्योतिष शास्त्र की ज्योति माने जाते हैं की जन्म तिथि के बारे में आज विद्वानों में अनेक भ्रान्तियां हैं। इसका मूल कारण यह जान पड़ता है कि हमारे पूर्वज अपनी उपलब्धियों को जन–सेवा में समर्पण कर देने के बाद उसके इतिहास को कोई भी महत्व नहीं देते थे। दूसरे विदेशी शासकों ने हमारी संस्कृति, धर्म, इतिहास, सभ्यता, परम्परा सभी का विकृत रूप ही हमारे सामने अवशेष में आने दिया है। साथ ही, उनके इस दृष्टिकोण में उनकी अनभिज्ञता में लिपटा हुआ पक्षपात रहा है। उनके पूर्वाग्रहों ने सही तत्वों को ढक लिया है, परिणाम यह हुआ है कि उनके चरण चिन्हों पर चलने वाले भारतीय विद्वानों ने भ्रान्तियों के प्रचार—प्रसार में अधिक सहायता पहुँचायी है। आचार्य व राहमिहिर सम्बन्धी तथ्यों पर भी इन्हीं भ्रान्तियों का प्रभाव है। जिसके परिणाम स्वरूप हम यह कहने का साहस भी नहीं कर पारहे हैं कि आचार्य वराहमिहिर का जन्म किस समय हुआ था ?

विगत वर्षो में, भारतीय ज्योतिष के प्रति बढ़ती हुई रूचि ने इन तथ्यों की खोज की ओर आकर्षित किया है। आये दिन नये तथ्य सामने आरहे हैं और हमें अपने अतीत के गौरव चिन्हों का प्रामाणिक स्वरूप स्पष्ट मिलता जा रहा है। आचार्य वराहमिहिर के विषय में भी कई भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के विचार सामने आये हैं। भारतीय अनुसंधानों के परिणाम स्वरूप कई टीकाओं एवं ऐतिहासिक साहित्य ग्रंथों की खोज भी हुई है। अतः उन तथ्यों के आधार पर आचार्य वराहमिहिर के विषय में कई रोचक एवं प्र मा–णिक तथ्य सामने आये हैं।

राजस्थान ज्योतिष अनुसंधान अध्ययन केन्द्र ने अपने इन ज्योतिपुंजों के विषय में समय–समय पर गोष्ठियां करना, उनकी सम्भावित जन्मतिथियों पर उत्सव आयोजित करना, उनके जीवन से सम्बन्धित विभिन्न विद्वानों के विचारों का संकलन प्रकाशन, प्रचार एवं प्रसार करने आदि की योजना बनायी है। इसी योजना के अन्तर्गत इस वर्ष 'बसन्त पंचमी १०–२–१९७० के दिन आचार्य वराहमिहर उत्सव, मनाने का निश्चय किया गया है।

इस महायज्ञ में इस अवसर पर हम आप को सांस्कृतिक चेतना की चिन्तनधारा में सहयोग देने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। ज्योतिष में रूचि रखने वाले समस्त विद्वानों प्रशंसकों एवं हित–चिन्तकों से विनम्र निवेदन है कि वे भाग लेकर समारोह को सफल बनाने का प्रयत्न करें।

यह एक नूतन आयोजन है, जिसका उद्देश्य राष्ट्र में सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति आस्था और श्रद्धा एवं पूजा का भाव बनाये रखना हैं। अतः जो महानुभाव समयाभाव अथवा अन्य परिस्थिति–वश भाग लेने में स्वयं को असमर्थ समझें, उनसे

विनम्र निवेदन है कि इस संदर्भ में अ लिखित रूप में भेजकर अनुग्रहीत करें।

सहयोग की अपेक्षा के साथ

भवदीय
देवधर पाण्डे
महामंत्री

"स्नेह सम्मेलन का आयोजन"

जयपुर के ज्यौतिष समाज तथा ज्यौतिष प्रेमी जनों के पारस्परिक परिचय हेतु एक अनौपचारिक गोष्ठी का आयोजन उपरोक्त संस्था के तत्वावधान में निम्नलिखित स्थान पर दिनांक ६-२-१६७० को सायं ५ बजे किया गया है। यदि आप इस स्नेह सम्मेलन में पधार कर अनुग्रहीत कर सके तो बडी अनुकम्पा समझूंगा।

भवदीय
देवधर पाण्डेय
महामन्त्री

टेलीफोन नं०
६२५०६

डी. १६ गणेश मार्ग
बापू नगर, जयपुर।

नोट—राजस्थान ज्यौतिष अनुसंधान अध्ययन केन्द्र के समस्त सदस्यों से निवेदन है कि वे इस आयोजन में अवश्य भाग लें।

महा मन्त्री



—: कुछ आगामी आकर्षण :—

१. ग्रह और उड़नतस्तरीया।
२. मेष लग्न पर बिचार।
३. शनि का स्वरूप, एवं जीवों पर प्रभाव।
४. ओजस् और तेज्स–सामुद्रिक विज्ञान पर एक लेख।
५. फलादेश की अनेक पद्धतियां।
६. ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में जीव तत्व पर विचार।
७. A. Scintific Approach to Astrology.
८. On Adhiyoga.
६. हस्त रेखा द्वारा नष्ट जन्माङ्क विचार।
१०. ज्योतिष का महत्व एवं ज्योतिष फलित के कुछ सिद्धान्त।
११. जयपुर की वेधशाला।
१२. मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र।
१३. विंशोत्तरी दशा।
१४. आपकी जन्म कुण्डली में बुध ग्रह का स्थान।
१५. स्वप्न–विचार।
१६. सम भाव विभाजन।
१७. चन्द्रलोक क्या वस्तु है।
१८. उन्माद और पागलपन से भरा चन्द्र अभियान का वास्तविक उद्देश्य—ग्रहों का गोचर फलादेश।

त्रैमासिक व्यापारिक-मार्ग दर्शन

—दुर्गाप्रसाद गुप्त, साहित्य विशारद

जनवरी १९७० वर्षारम्भ के पूर्व में शुक्राचार्य अस्त हो चुकेंगे, पौष मास में शुक्र अस्त धन धान्य में वृद्धि करता है। अतः जनवरी के आरम्भ में ही गल्ला गेंहूं, जौ, चना, मूंग, मटर आदि में मन्दी का वातावरण रहेगा। ता. २ जनवरी को पूमार्या भौम अलसी, सरसों, लोहा, एरण्डक सोंगीदाना आदि तिलहन रूई और सोना चांदी ताम्बा आदि धातुएं तेज करेगा। दक्षिण भारत में अनाज भी तेज होगा। ४ जनवरी को मकरस्थ बुध बक्री होकर तिलहन में तेजी और अन्न में मन्दी को प्रोत्साहन देगा। जूट, बारदाना, सोना, चांदी, रूई, गुड़, खांड में भी तेजी का उछाल आएगा। आज ही शनि मार्गी होगा।

दोहा :—बक्र चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय।

चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाय॥

(भविष्य भारती)

यहाँ तिलहन के अतिरिक्त सभी व्यापारिक जिन्सों में मन्दी चलेगी। रूई में अच्छी मन्दी की आशा है। अरब देश में भयंकर दुर्भिक्ष हो सकता है। त्रयोदशी मंगलवारी घी तथा गेंहूं का स्टाक करने की राय देती है। आगे लाभ होगा। बुधवारी अमावस्या मन्दी कारक है। परन्तु आज पश्चिम में बुध अस्त होने से अनाज में तेजी का रुख हो सकेगा। ता. १० को उ. षा. का सूर्य तिल, तेल, गुड़, चांदी, सोना, सन, हल्दी लाख चपड़ा तथा ऊनी कपड़े तेज करेगा। सरदी का जोर बढ़ेगा। ता. १३ को मंगलवारी मकर संक्रांति गुड़ादि पदार्थ नमक, घी, तेल तेज करेगी। अग्नि तथा चारों ओर उपद्रव बढ़ेगा। लाल रंग के पदार्थ गेंहूं, अलसी, मसूर, लाल मिर्च आदि तेज होंगे। ता. १५ जनवरी मीने भौम तृण काष्ट लकड़ी पशु तथा पशुओं का चारा तेज होगा। इनको पहिले ही खरीदने वाले लाभ उठाएंगे। मीन का भौम भारत में सुख शांति तथा जापान के लिए अनिष्ट कारक होता है। वहां मंत्रिमंडल में परिवर्तन, खाद्य पदार्थो का अभाव तथा अर्थ संकट होगा। यहां खनिज पदार्थों में तेजी होगी। कोयला पत्थर, चूना, सीमेंन्ट में तेजी रहेगी। ता. १७ को एकादशी से कार्तिक का संयोग होने से लाल रंग के पदार्थ तथा सोना होली तक तेज होगा। ता. १९ को बुधोदय, वर्षा बादल वायु के साथ रूई, कपास, सोना व चाँदी, गुड़, गेंहूं तेज करेगा। कई राज्यों तथा देशों में संघर्ष होगा। राजस्थान, मध्य प्रदेश, तथा सौराष्ट्र के लिए हानिकारक है। २० को अभिजित का सूर्य गुड़ की उपज में कमी करेगा। पूभार्या भौम गल्ला रूई, चांदी में तेजी लाएगा। पूर्णिमा पुष्ययुता मन्दी प्रतीक है। आगामी पक्ष में मन्दी रहेगी। पौष शुक्ला त्रयोदशी मंगलवारी है। शुक्ल त्रयोदशी पौष मन्द शुक्र कुजेयुंता, यदि वर्षतिजीमूत: कार्यों गोधूलम संग्रह : जिन क्षेत्रो में

आज वर्षा हो वहां व्यापारियों को गेहूं संग्रह करना चाहिये। यह एक चांस है। ता. २३ को सूर्य-शुक्र नक्षत्र युति मंदी कारक है। सरदी बढ़ेगी वायु का वेग हो। गेहूं, गन्ना, सोना, लोहा, लकड़ी कोयला जस्ता, ताम्बा कांसा पीतल में तेजी को बल मिलेगा। ता. २५ को बुध मार्गी होकर बाजार की लाईन बदल देगा। जो वस्तुएं मन्दी थी वे तेज और जो तेज थी वे मन्दी हो जायेगी ता. २९ को बदी ६ की वृद्धि तीन दिन के अन्तर्गत सभी वस्तुओं में मन्दी का झटका आएगा। आज रूई कपास बारदाना तेज रहेगा! ३१ को तिलहन में तेजी रहेगी। फरवरी ता. १ फरवरी को माघ बदी १० का क्षय मन्दी कारक है। माघ बदी को वृद्धि हुई थी।

जेहि पखवारे तिथि बढे, वाही में घट जाय।
सभी वस्तु मन्दी बिके मंहगाई हट जाय।

(भविष्य भारती)

अतः इस पक्ष में जनरल लाईन मन्दी रहेगी। ३ फरवरी को धनिष्ठायां भृगु चोर डाकुओं को कष्ट हवाई जहाज, रेल मोटर आदि के एक्सीडेण्ट होंगे। सोना, चांदी रूई, कपास, चावल तेज। गेहूं मंदा होगा। शुक्रवारी अमावस्या चांदी तेज करेगी। रूई कपास तिलहन मन्दा होगा। ता. ७ माघसुदी १ शनिवार माघमास प्रति-पदा शनिभोग: प्रशस्ते" सुभिक्षकारी है। परन्तु प्रतिपदा थोड़ी देर है। रेवत्या भौमः सोना मंदी किराना और चांदी में तेजी होगी। आज तिथि, नक्षत्र तथा योग का क्षय सभी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी करने वाला योग है। शनिवार चन्द्रोदय एक मास में अनाज में तेजी करेगा। किसी राज्य में मंत्रीमण्डल भंग होगा। ८ फरवरी को कुम्भे शुक्र सुख—सुभिक्षकारक है। वसन्त पंचमी मंगलवारी है। सोना चांदी में मन्दी और गुड़ खाण्ड गल्ला में तेजी रहेगी। ता. १२ माघसुदी ७ को भरणी नक्षत्र है" माघस्य च सप्तम्यां भरणी जायते, रोग नाश स्तदा लोके वसुदा बहु-धान्य भृत् उत्तम उपज के कारण गल्ला मन्दा होगा। आज कुंभ सक्रांति है। गुरुवार होने से सभी धातुएं, तिलहन रूई कपास, दुधारू पशुओं में मन्दी तथा जो गेहूं, चना में तेजी होगीं। इसका प्रभाव १० दिन तक रहेगा। ता: १९ श्रवणे बुध वर्षा के कारण चने की फसल में हानी होगी। गुड़ खाँड, चावल चना; में तेजी। १८ फरवरी को पश्चिम में शुक्रोदय होगा। कुम्भ राशी में उदय होने से वर्षा तथा चारे की कमी होगी। देवतागण में उदय सोना, चांदी, रूई, कपास, पाट, बारदाना गुड़, खाण्ड, घी तेल में तेजी, प्रजा में उपद्रव, एवं आन्दोलन, सिन्ध गुजरात में खेती का नाश तथा रोग हो। ता १९ को सूर्य राहु नक्षत्र युति मन्दी कारक योग है। यह युति ३ मार्च तक रहेगी। २१ को शनिवार पूनम तेजीकारक है। मघानक्षत्र आगे मन्दी सूचक है। गुरु बक्री होकर धातुए नमक अन्न तथा बारदाना तेज करेगा। फागुण बदी १ को पू. फा. नक्षत्र सुभिक्ष कारीं है। ता. २४ को अलसी आदि तिलहन गल्ला और गुड़ खाण्ड में तेजी का रूख रहेगा। २५ की रात को मेष राशि पर शनि मंगल की बैठक होगी। राजाओं में झगड़े, अग्नि काण्डो का जोर जनता में उपद्रव और गल्ले में तेजी को प्रोत्साहन मिलेगा। नीच राशि पर शनि होने से अलसी एरण्ड, तेल तिलहन लोहा, जस्ता, टाटा आयरन मशीनरी के साथ साथ अन्य व्यपारिक वस्तुये भी मन्दी होगी।

मार्चः— एकम मार्च कुम्भ बुध रस कस पदार्थो मे घट बढ़ से मन्दी तथा धातुओं में तेजी होगी। ३ मार्च व्यतिपात-क्षय घी तेल तेज करेगा। ४ मार्च पू. भा. पर सूर्य शुक्र युत कपास, रेशम, सूत सन, एरण्ड, तिल, तेल, गुड़ खाँड, गल्ला मन्दा होगा। रूई तथा चांदी में साधारण

तेजी में सुख शांति, बदी त्रयोदशी का क्षय तेजी कारक है। शनिवार अमावस्या तिलहन बारदाना, टाटा आयरन, मशीनरी,गल्ला तेज करेगी। आज आठ दिन की तेजी लगादें । ८ मार्च को कुम्भस्थ बुध का अस्त होगा। वायु का वेग बढ़ेगा वृक्ष टूटेगें, हिमतुषार से जनता को कष्ट होगा । ६ का चन्द्रदर्शन का फल वही है। जो गत मास में लिखा जा चुका है। १० मार्च को सोना, पीतल सन का भाव मन्दा रहेगा ! आज मुसलमानी हिजरी सन् १६६० का आरम्भ होगा। गुण का मालिक मंगल है। महान पुरुषों में विरोध वर्षा की कमो अतः मन्दा परन्तु दक्षिण में तेजी, उत्तर मे रोग अग्नि काण्डो, की अधिकता, मूसा तथा टिड्डी दल से खेती में हानि, गुड़, शक्कर में तेजी रहेगी । संयोग की बात है इस वर्ष विक्रमी संवत् भी मंगलवार को आरंभ होगा। १४ मार्च को मीन संक्राति शनिवार है। गल्ला, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल सरसो अलसी मूंग.फली, लोहा, जस्ता में घट बढ से तेजी, चावल सुपारी, नारियल मन्दा लाल रंग के पदार्थ तेज, सुदी ६ को आद्रानक्षत्र वर्षा की कमी सूचित करता है। ता. १८ मार्च मीने बुध सोना, चांदी रूई, पहिले तेज होकर एकदम मन्दी, रेवत्यां शुक्रः रूई चांदी चावल खाँड में मन्दी के झटके आवेगें, । यहां मीन राशी पर तीन ग्रहों की युती होगी एक राशी पर होय जब बुद्ध शुक्र गुरु सूर्य । वर्षा की कमती करें; तेजी को भरपूर (भ. भा.) सुदी त्रयोदशी शुक्रवारी होने से आगे बीमारी फैलने की आशंका है । सुदी पूर्णिमा की वृद्धि मन्दी करेगी , चांदी, चावल, चीनी सूत कपड़ा सन मन्दा होगा । २४ मार्च चैत्र बदी १ को हस्त नक्षत्र है। पूयात्रयं रोहिणी च हस्तश्च प्रतिपादिदते। पक्षादो वारूणां नेष्ट सर्व धान्य महर्घ कृत आगे सर्व प्रकार का अन्न तेज होगा। २६ मार्च रेवत्यां बुध गेहूं में तेजी और चांदी मन्दी हंगा। रविवारी षष्टी अन्न तथा घी में तेजी लाएगी। आज मेष राशी पर शुक्र शनी मंगल का मिलाप होगा। अति वर्षा के कारण दुर्भिक्ष के लक्षण हो सकते है। घी, तेल, सरसो, अलसी मन्दी अनाज तेज। बदीं ७ का क्षय तेजी मे सहायक होगा। ३१ मार्च रेवत्यां रविः चावल चांदी, चपड़ा, रूई नमक मोती रत्न लाख, सज्जी, और गल्ला तेज।

शकुन विचार

शकुन प्राकृतिक सूचनाए होती है। कई बार ग्रह योगफल शकुनों के कारण पलट जाते है। पथ पर चलने के लिए शकुन ज्ञात एक आवश्यक जानकारी है। अतः हम व्यापारियों के लभार्थ कुछ त्रैमासिक शकुन लिख रहे है। आशा है पाठक लाभान्वित होगें ।

पौषः— बदी आठे अगर बादल गरजे रात
चार मास बर्षात में हो उत्तम बरसात ॥१॥
पडवा दोयज पौष सुदी बादल बिजली देख,
वर्षा से खेती बढ़े उपजे अन्न विशेष ॥२॥
पौष सुदी एकादशी हो कृतिका नक्षत्र,
लाल वस्तुओं से रहे खूब लाभ सर्वत्र ॥३॥
पौष बदी एकादशी चाले दखिन पौन,
बिजली, बादल गाज हो, अतिदुर्भिक्ष कुसौन ।४।

माघ :—माघ बदी षष्टी दिना, निर्मल हो आकाश,
तो यह निश्चय जान लो उपजे नहीं कपास ।१।
माघ अन्धरी तीज को बादल बिजली गा
लाभ होय संग्रह करो, गेहूं आदि अनाज ।२।
पड़वा, दोयज, तीज यदि माघ सुदी घट जाय,
कीजे संग्रह अन्न का आगे महंगा आय ।३।
माघ उजरी सप्तमी भरणी नखत विचार,
बढ़े सम्पदा धान्य धन सुखी रहे संसार ॥४॥

फागुनः—फागुन पहिली प्रतिप्रदा-यदि पू. फा. नक्षत्र
सभी दोष दुख दूर हो सुख सुभिक्ष सर्वत्र
फागुन में बादल रहे, किन्तु न वर्षे नीर,
तो फिर वर्षा काल में वर्षा हो गम्भीर ॥२॥
फागुन में गुरु अस्त हो अथवा बक्री चाल
मन्दीकारक योग है। मन्दी हो सब माल
फागुन शुक्ला त्रयोदशी शुक्रवारी होय
तो निश्चय ही जेठ में कुछ बीमारी होय ।



ग्राहकों के सूचनार्थ

'ज्यौतिष मार्तण्ड' के ग्राहकों के अनुरोध पर इसका प्रकाशन अब द्वैमासिक कर दिया गया है। साथ ही, उसी के अनुसार, वार्षिक चन्दा ५) रुपये से बढा कर ८) रुपये मात्र कर दिया गया है।

जिन महानुभावों ने ५) रुपये शुल्क भेजे है, उनसे अनुरोध है कि वे शुल्क की शेष राशि तीन रुपये शीघ्रातिशीघ्र भिजवादें।

इसी प्रकार एक अंक का मूल्य भी १।) प्रति अंक से बढ़ाकर डेढ़ रुपये प्रति अंक कर दिया गया है।

सम्पादक

लेखकों से निवेदन

कृपया अपनी रचनायें साफ कागज पर हाशिया छोड़ कर सुन्दर अक्षरों लिख कर अथवा टाइप करा कर भेजें। रचना के साथ अगर आवश्यकता हो तो जन्म पत्री का उल्लेख अवश्य करें।

१—शोधपूर्ण स्वीकृत रचना पर यथाशक्ति परिश्रमिक लेखक के पते पर मनीआर्डर से भेज दिया जावेगा।

२—यद्यपि सभी रचनाओं की पूरी सुरक्षा करने की व्यवस्था की जाती है। पर यह अच्छा हो कि लेखक अपनी रचनाओं की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। सम्पादक खोई हुई रचना के लिये उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रत्येक रचना के साथ टिकिट लगा हुआ पते सहित लिफाफा अवश्य आना चाहिए। अस्वीकृत रचना को लौटाने का दायित्व सम्पादक का नहीं होगा।

ज्योतिष, सामुद्रिक शास्त्र, अंकशास्त्र ज्योतिष सम्बन्धी योग, तन्त्र-मन्त्र आदि के बारे में रचनाएँ आमन्त्रित की जाती हैं। सम्पादक, बिना कोई कारण बताये, किसी भी रचना को अस्वीकृत करने, व परिवर्तन करने का अधिकारी होगा। इस सम्बन्ध में सम्पादक से कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जा सकेगा। ज्योतिष मार्तण्ड से सम्बन्धी सभी पत्र व्यवहार सम्पादक के नाम होगा।

सम्पादिका

सन् १९७० ई० के लिये आप का भविष्य

—अनन्तराम शर्मा,
दैवज्ञभूषण, ज्योतिष विशारद

मेष:-यह वर्ष मेष राशिवालो के लिए शनि की साढ़े साती होने से मध्यम है। गुरू को स्थिति श्रेष्ठ फल दायी है। परिणाम स्वरूप अशुभ फल कम तथा शुभ फलों की प्राप्ति अधिक होगी। ता. १-१-७० से सू. शु. बु. ये तीनों ग्रह भाग्य, राज्य और लाभ में ता. १४-३-७० तक चलेंगे। गुरु तो तो लम्बे समय तक के लिए सप्तम स्थान में रहेगा इसलिए पत्नी सुख ठीक, राजकार्य, व्यापार, रोजगार में अच्छा लाभ होगा। मान सम्मान में कमी नहीं आयेगी। किन्तु स्वास्थ्य मध्यम रहेगा क्रोध की अधिकता, मिजाज में चिड़चिड़ापन रहेगा। भाग्य सम्वन्धी कार्यों में आशातीत सफलता मिलेगी। ता. १५-३-७० से ता. २-४-७० तक सू. बु. शु. आदि १२वें स्थान पर चलेंगे उस समय तक खर्च अधिक होगा कुछ व्यर्थ की परेशानियां सामने आयेगी। ता. ३-४-७० से ता. १४-४-७० तक शु. बु. श. लग्न में रहेंगे तथा सूर्य लग्न में उच्च का रहेगा अत: ता. १४-५-७० तक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की सम्भावना बढ़ेगी। ता. १५-५-७० से सू. बु. शु. मं. धन स्थान में रहते हुए पराक्रम स्थान तक चलेंगे और शु. चौथे स्थान पर चलेंगे। अत: ता. ७-७-७० तक पराक्रम से सफलता और पारिवारिक कार्य व्यापार नौकरी पेशा आदि में सुख प्राप्त होगा। ता. ८-७-७० से मंगल चौथे स्थान पर नीच राशि के होकर रहेंगे शु. पंचम में रहेंगे। अत: ता. २-८-७० तक शारीरिक कष्ट मानसिक अशान्ति महसूस करेंगे किन्तु ुद्धि औंर सन्तान पक्ष से लाभ रहेगा। ता, ३-८-७० से शुक्र नीच के होकर शत्रु पक्ष में वृद्धि करते हैं अत: ३०-८-७० तक नौकरी, व्यापार एवं परिवार में संघर्षमय वातावरण बना रहेगा। ता. ३१-८-७० से शुक्र और गुरु का साथ ता. ९-१०-७० तक रहेगा इसलिये व्यापारिक कार्यों में सफलता मिले। विद्या पक्ष में कामयाब होंवें। ता. १०-१०-७० से शु. आठवें स्थान और मंगल सूर्य बुध छठे स्थान में चलेंगे। अतः ता. ३०-१०-७० तक स्वास्थ्य सुख मध्यम व्यापार में हानि तथा नौकरी पेशे में भी परेशानियां आयेंगी। ता. ३१-१०-७० से शु. बु. गु. सू. चार ग्रहों का योग सातवें घर में चलेगा अत: पारिवारिक सुख मिले स्त्री के सहयोग से नवीन योजनायें सफल होवे। ता. १२-१२-७० से गु. आठवें स्थान में चलेंगे और शु. मं, सातवें चलेंगे इसलिए ता. ३०-१२-७० तक अच्छाई बुराई दोनों का योग चलेगा। शारीरिक चोट लगने से पीडा बढ़े। ता. १६-१२-७० से सू. बु. भाग्य में चलेंगे अत; भाग्य के अनुकूल कार्यों में सफलता मिले। स्वास्थ्य सुख एवं स्त्री सुख साधारण रहेगा। शत्रु परास्त होंगे व्यापार में लाभ सामान्य होगा। मित्रों का सहयोग अधिक मिलेगा। भरणी नक्षत्र में पैदा होने वालों को अधिक सफलता मिलेगी। तथा अश्वनी व कृतिका वालों को मध्यम रहेंगे।

वृष:–इस वर्ष में भाग्येश और राज्येश शनि व्यय भाव में है तथा गुरु राहु केतु भी शनि के साथ सहयोग करते हैं अतः व्यापार नौकरी आदि में हानि का योग बनाते हैं। ता. १-१-७० से सू. शु. अष्टम भाव में चलेंगे अत: ता. १५-१-७० तक घर गृहस्थ में झंझट होंगे जिससे शारीरिक व्यथा महसूस होगी। ता. १६-१-७० से सू. शु. नवम और बु. अष्टम में चलेंगे। इसलिए ता. ७-२-७० तक राजकार्यों में विद्रोह तथा कुटुम्ब में द्वेष भाव बढ़ेगा। ता. ६-२-७० से बु. नवम में चलेंगे अतः भाग्य का सहारा रहेगा। सू. शु. दसवें और मंगल ग्याहरवें चलेंगे अत: स्थिति में सुधार होगा मित्र समागम होगा, आत्म संतोष मिलेगा। पत्नी के तथा स्वयं के स्वास्थ्य में सुधार होगा। ता. ४-३-७० से शु. ग्याहरवें उच्च के चलेंगे मंगल बाहरवें चलेंगे। अतः ता. २८-३-७० तक भाग्य, राज्य एवं लाभ पक्ष से सफलतायें मिलेंगी। पदोन्नति का योग बनेगा तथा हर्ष दायक समाचार सुनेंगे। धार्मिक कार्यों में खर्च अधिक होगा। ता. ४-४-७० से शु. बु. रा. श. ये चारों ग्रह बारहवें चलेंगे। ता. १३-४-७० से सूर्य भो बाहरवें स्थान में आजायेंगे अतः ता. १४-५-७० तक का समय संघर्षमय चलेगा। मित्रों में द्वेष भाव बढ़ेंगे। स्थानांतरण का योग बनेगा। व्यर्थ के वादविवाद पैदा होंगे मुकदमे में धन खर्च होगा। ता. १५-५-७० से सू. मंगल लग्न में चलेंगे। अतः ता. ८-६-७० तक परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। आत्म संतोष मिलेगा किन्तु खर्चा पूर्ववत होता रहेगा। ता. ६-६-७० से बु. लग्न में चलेंगे। ता. १५-६-७० से सू. मं. धन भाव में चलेंगे। अत: आमदनी बढ़ेगी व्यापार में लाभ मिलेगा। ता. २८-६-७० से बुध भी धन भाव में आजायेंगे। अतः ता. १६-७-७० तक धन पक्ष ठीक रहेगा लाभ के सभी द्वार खुल जायेंगे। ता. १७-७-७० से सू. मं. बु. तीसरे चलेंगे शु. चौथे चलेंगे इसलिए ता. २-८-७० तक सुख अधिक मिलेगा। हर्ष युक्त समाचार मिलेंगे। ता. ३-८-७० से शु. नीच राशि के होकर ५वें भाव में चलेंगे। नीच के मंगल तीसरे चलेंगे। अतः ता. ३०-८-७० तक कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। ता. ३१-८-७० से शु. गु. छठे भाव में और मं सू. बु. चौथे भाव में चलेंगे ता. १७-६-७० से सू. पांचवे घर में आजायेंगे अतः ता. ६-१०-७० तक शत्रु परास्त होंगे, विद्या पक्ष में लाभ होगा सन्तान सुख मिलेगा। ता. १०-१०-७० से शु. सप्तम और मं. पंचम में चलेंगे। आगे सू. बु. गु. छठे भाव में चलेंगे। अत: सन्तान, विद्या, व धन पक्ष में कमजोरी आयेगी शत्रुता बढ़ेगी खर्च अधिक बढ़ेगा ! ता. ६-११-७० से बुध सप्तम में चलेंगे। ता. १६-११-७० से सूर्य भी सप्तम भाव में आजायेंगे। अत: ता. २८-११-७० तक व्यापार के कार्यों में धीरे धीरे सफलता मिलेगी। स्त्री सुख मिलेगा। ता. २६-११-७० से बुध अष्टम में और शु. मं. गु. छठे भाव में चलेंगे। अतः ता. १५-१२-७० तक समय प्रतिकूल रहेगा। ता. १६-१२-७० से सू. गु. सप्तम भाव में चलेंगे। अत: ता. ३१-१२-७० तक पारिवारिक कार्यों में सुख समृद्धि मिलेगी। यह वर्ष अधिक सफल नहीं रहेगा। परेशानियों का उतार चढ़ाव होता रहेगा। स्त्री को पीड़ा होगी। पुत्र, मित्र सुख अच्छा है। कृतिका नक्षत्र वालों को श्रेष्ठ फलदाता रहेगा। रोहिणी तथा मृगशिरा वालों को मध्यम रहेगा।

मिथुन—:इस वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके लिए उत्तम तथा उत्तरार्द्ध मध्यम रहेगा। भाग्येश शनि लाभ में तथा राज्येश गुरु पंचम में है ये दोनों ही श्रेष्ठ फलदाता है। नौकरी में पदोन्नति हो, तथा व्यापारियों को धन लाभ मिले। विद्या एवं सन्तान पक्ष में सुख सफलता मिलेगी। ता. १-१-७० से सू. शु. सातवें चलेंगे। ता. १३-१-७० से बुध सातवें, साथ ही, सू. शु. आठवें चलेंगे। ता. ८-२-७० से बुध अष्टम स्थान में चलेंगे। अतः ता. १-३-७० तक मानसिक अशांति एवं कलह का वातावरण रहेगा। ता. २-३-७० से बुध नवें और सूर्य

शु. दसवें तथा मंगल ग्याहरवें चलेंगे। इसमें भाग्यो लाभ्योदय एवं पदोन्नति का योग है। ता. १५-५-७० से सू. शु. बाहरवें और मंगल लग्न में रहेंगे। श. बु. ग्याहरवें चलेंगे। यह समय ठीक रहेंगा। ता. १५-६-७० से सू. मं. लग्न में साथ हों ता. २७-६-७० से बु. भी लग्न में आजायेंगे इसलिए ता. ७-७-७० तक समाज में सम्मान, स्वास्थ्य उत्तम तथा पदोन्नति का योग बनेगा। ता. ८-७-७० से मं. नीच के होकर दूसरे स्थान पर चलेंगे। यह ठीक नहीं रहेंगे, किन्तु ११-७-७० व १७-७-७० से क्रमश: बु. सू. भी द्वितीय स्थान में आजायेंगे। अतः ता. १-८-७० तक समय श्रेष्ठ रहेगा। ता. २-८-७० से शुक्र नीच के होकर चतुर्थ स्थान पर चलेंगे। नीच के मंगल धन स्थान में चलेंगे। अत: यह समय ता. ३०-८-७० तक संघर्ष मय व्यतीत होगा व व्यय अधिक होगा। ता. ३१-८-७० से गु. शु. पंचम में और सू. मं. के. तीसरे चलेंगे। ता. ९-९-७० तक बुध भी तीसरे चलेंगे। अतः ता. ३-१०-७० तक कार्यों में सफलता मिलेंगी मनोकामनायें पूर्ण होगी। ता. १०-१०-७० से शु. छठे और मं. सू. बु. चौथे चलेंगे। थोड़े समय बाद सू. बु. भी पांचवें आजायेंगे। अत: ८-११-७० तक पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी रोंजगार उत्तम चलेगा। ता. ३०-११-७० से बु. सातवें चलेंगे। गु. शु. मं. पांचवें चलेंगे। ता. १६-१२-७० से सू. भी सातवें आजायेंगे। अत: ता. ३०-१२-७० तक रोजगार उत्तम चलेंगे। सोचा हुआ काम सिद्ध होगा। मान प्रतिष्ठा तथा धन लाभ होगा, मित्रों से सहयोग मिलेगा। स्त्री सुख, स्वास्थ्य सुख रहेगा। आर्द्रा में जन्म लेने वालों को मृगशिरा व पुनर्वसु वालों से अच्छा रहेगा।

कर्क:—इस वर्ष भाग्येश गुरु भाग्य को नहीं देख रहे हैं अत: आपके भाग्य के उदय होंने में काफी परेशानियां आयेंगी। राहु तथा केतु भी क्रमश: आठवें और दूसरे चलेंगे जो नेष्ठ फल दाता है। मानसिक चिन्ता, लोगों से मतभेद, यात्रा में असफलता, अशक्ति, धन हानि. स्त्री कष्ट, पारिवारिक क्लेश तथा शत्रु पक्ष की प्रबलता रहेगी, ता. १-१-७० से सू. शु. छठे व मं. आठवें चलेंगे। ता. १६-१-७० से सू. शु. सातवें और मं. नवें चलेंगे। अत: ८-२-७० तक समय अच्छा निकलेगा। ता. १३-२-७० से सू. शु. अष्टम चलेंगे। अत: ता. ४-३-७० तक कई परेशानियों का सामनां करना पड़ेगा। ता. ५-३-७० से शु. भाग्य में उच्च के होकर चलेंगे तथा मंगल स्वगृही होकर राज्य पक्ष में चलेंगे। यह समय राज्य पक्ष व भाग्य पक्ष दानों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। ता. २९-३-७० से शु. दसवें, ता. ९-४-७० से मंगल लाभ स्थान में व ता. १४-४-७० से सूर्य भी उच्च के होकर राज्य में चलेंगे। अत: ता. २३-५-७० तक भाग्योदय, लाभ, सम्मान पदोन्नति आदि मिलेंगे। ता. २४-५-७० से मगल बाहरवें ता. १५-६-७० से सू. तथा २८-६-७० से बु. भी बाहरवें चलेंगे अत: ता. १६-७-६० तक खर्चा अधिक होगा, मानसिक चिन्तावें बढ़ेगी। ता. १७-७-७० से सू. मं. बु. लग्न में चलेंगे। शु. धन भाव में चलेंगे अत: १-८-७० तक समय अनुकूल रहेगा। ता. २-८-७० से शु. नीच के तीसरे व मं. नीच के लग्न में चलेंगे। यह समय मध्यम रहेगा। ता. ३१-८-७० से शु. गु. चौथे व मं. सू. धन भाव में चलेंगे। अतः ता. ९-१०-७० तक भूमि तथा पारिवारिक सुख बढ़ेंगे, आर्थिक सफलता मिलेगी। ता. १०-१०-७० से शु पांचवें, मंगल तीसरे चलेंगे। पुनः शु. बु. गु. सू. चौथे चलेंगे अत; ता, ३०-१२-७० तक पारिवारिक सुखों में वृद्धि मान सम्मान, व्यापार में लाभ व समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मनोकामनायें सफल होगो। पुष्य नक्षत्र वालों को श्रेष्ठ रहेगा व पुनर्वसु एवं अश्लेषा नक्षत्र वालों को मध्यम रहेगा।

सिंहः-यह वर्ष सिंह राशि वालों के लिए साधारण रहेगा। भाग्य स्थान में शनि व पराक्रम में गुरु के होने से विशेष प्रयत्न करने पर कार्यो में

सफलता मिलेगी । स्त्री सुख में कमी व अनेक कष्टों के कारण मन में व्यग्रता रहेगी । ज्ञान में वृद्धि होगी । अप्रेल में स्वास्थ्य कमजोर रहेगा । ता, १-१-७० से १३ १-७० तक सू. शु. पांचवे और मंगल सातवें रहेंगे । अतः विद्या बुद्धि व संतान सुखों में वृद्धि होगी । ता. १५-१-७० से सू. शु. छठे मं. आठवें और बुध पांचवें चलेंगे । ता ३-२-७० से सू. शु सातवें चलेंगे अतः समय श्रेष्ठ निकलेगा । ता. २-३-७० से बु. सू सातवें और मंगल नवें भाव में चलेंगे । शुक्र अष्टम में उच्च के चलेंगे अतः ता. १८-३-७० तक पारिवारिक सुख एवं व्यापार में लाभ रहेगा । ता. १६-३-७० से सू. बु. शु अष्टम भाव से चलेंगे अतः शारीरिक पीड़ा का योग बनता है । ता. ३-४-७० से बु. शु. मं. श. ये चारों ग्रह भाग्य में चलेंगे । ता. १४-४-७० से सूर्य भी उच्च के होकर भाग्य में चलेंगे । मं. बु शु. भी राज्य के पक्ष में चलेंगे । इस काल में सभी कार्यों में सफलता मिलेगी. राज्य पक्ष से लाभ मिलेगा । यह समय १०-६-७० तक चलता रहेगा । ता. ११-६-७० से शुक्र व्यय भाव में चलेंगे किन्तु सू. मं. लाभ में और बु. राज्य में चलेंगे । ता. २८-६-७० से बु. भी लाभ में आजायेंगे अतः ता. ७-७-७० तक धन लाभ श्रेष्ठ रहेगा । व्यापार में उन्नति व नौकरी में पदोन्नति होगी । ता. २८-७-७० से १६-७-७० तक सू. मं. बु. व्यय भाव में खराब चलेंगे । अतः ता. २३-८-७० तक समय कमजोर चलेगा । खर्च अधिक होगा । ता. २४-८-७० से ता. ३१-८-७० तक सू. मं. लग्न में तथा गु. शु. तीसरे स्थान में चलेंगे अतः मान सम्मान बढ़ेगा । ता. १६-१२-७० से सू. बु. पांचवें और गु. चतुर्थ भाव में चलेंगे अतः ३१-१२-७० तक परिवार व संतान सुख बढ़ेगा । मंगल के तीसरे स्थान पर चलने से धन लाभ व मित्रों द्वारा सहयोग एवं भाग्योदय होगा । इस वर्ष में पूर्वाफागुनि नक्षत्र वालों को अधिक सफलता मिलेगी । यह वर्ष मघा नक्षत्र वालों को पूर्वाफाल्गुनि से मध्यम रहेगा, उत्तरा फाल्गुनि वालों को परेशानियां रहेगी ।

कन्या:-इस वर्ष में शनि आठवें केतु बाहरवें तथा गुरु धन भाव में रहेंगे अतः वर्ष मिश्रित फल वाला है कभी दुःख और कभी सुख के मिलने से मन में व्यग्रता अशांति बनी रहेगी । मन एवं बुद्धि पर कुलषित भावनायें छाई रहेंगी । खर्च अधिक होगा शारीरिक अस्वस्थता बनी रहेगी । स्वभाव सामान्य रहेगा । मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी । पारिवारिक सुख मध्यम रहेगा । ता. १-१-७० से सू. श. चतुर्थ भाव में मं. छठे, राहु छठे, केतु बाहरवें और गुरु दूसरे भाव में चलेंगे । ये मिश्रित फल देंगे । ता. १६-१-७० से मं. सातवें सू. शु. पांचवें और बुध चौथे चलेंगे । अतः ता. ४-३-७० तक अच्छे बुरे दोनों प्रकार के फल मिलते रहेंगे । हर्ष व शोकयुक्त दोनों समाचार मिलेंगे । ता. ५-३-७० से शु. उच्च के होकर सातवें चलेंगे । बुध छटे और मंगल आठवें चलेंगे । ता. १८-३-७० से सू. बुध सातवें स्थान में आजायेंगे । अतः ता. २८-३-७० तक परिस्थितियों में प्रयत्न करने पर कुछ सुधार होंगे । ता. ३-४-७० से शु. बु. मं. श. चारों ग्रह अष्ठम में चलेंगे । आगे ता. १३-४-७० से सूर्य भी अष्टम में चलेंगे अतः ता. १६-५-७० तक व्यर्थ के विवाद, दोषारोपण, पारिवारिक क्लेश एवं शारीरिक व्याधि से परेशान रहेंगे । झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करें । ता. १७-५-७० से शुक्र राज्य में तथा सू. मं. भाग्य में चलेंगे इसलिए ता. ८-६:७० तक भाग्य साथ देता रहेगा । किन्तु बाधायें बनी रहेगी ता. ८-७-७० तक बु. भाग्य में व सू. मं. राज्य में चलेंगे । यह समय अच्छा व्यतीत होगा । ता. १६-७-७० से सू. मं. बु. लाभ में चलेंगे । ता. २७-७-७० से बु. व्यय भाव में चलेंगे । ता. १७-८-७० से सू. मं. भी व्यय भाव चलेंगे अतः ता. ६-१०-७० तक खर्च की अधिकता रहेगी । ता. १०-१०-७० से शु तीसरे मं. सू. बु. लग्न में चलेंगे । ता. १-११-७० से सू. बु. गु. शु. चारों ग्रह धन भाव में चलेंगे । अतः ता. ११-१२-७० तक धन लाभ में वृद्धि होगी ता. १२-

१२-७० से ता. ३०-१२-७० तक गु. शु तीसरे सू. बु. चौथे भाव में चलेंगे अतः परिश्रम करने पर घरेलू सुख व सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा। सावधानी से ही सफलता मिलेगी। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र वालों के लिए श्रेष्ठ रहेगा हस्त और चित्रा मध्यम पर, चित्रा नक्षत्र वालों को कुछ परेशानियां रहेगी।

तुला:—यह वर्ष शनि के सातवें तथा राहु के पञ्चम स्थान में और गुरु के लग्न में रहने से मिश्रत फल वाला रहैगा। कौटुम्बिक क्लेश एवं पत्नी से झगड़ा रहेगा। व्यापार मध्यम रहेगा खर्च अधिक होगा कई कार्यों में पश्चाताप होगा। मित्रों से सहयोग का अभाव रहेगा, लोग भला करने पर भी बुरा मानेंगे। स्त्री पुत्रादि के सुख में वाधा रहेगी ता. १-१-७० से सू. बु. शु. तीसरे चलेंगे, मंगल पाँचवे, और केतु ग्याहरवें चलेंगे। ता. १६-१-७० से सू शु चतुर्थ भाव में तथॉ मंगल छठे भाव में चलेंगे अतः ता. २५-२-७० तक गृहस्थ सुख मिलेगा धन लाभ होगा किन्तु वाधाये अवश्य आयेंगी। ता. २७-२-७० से मंगल सातवे स्वराशि में चलेंगे। बु. पाँचवे शुक्र छठे व सूर्य भी छठे चलेंगे। इसलिये ता. २-४-७० तक राज्य व भाग्य सम्बन्धी कार्य सफल होंगे किन्तु बीच २ में अड़चने अवश्य आयेंगी। ता. ३-४-७० से मं. बु. शु. श. सप्तम में चलेगें तथा सूर्य भी १४-४-७० से सप्तम में चलेंगे। इस काल मे स्त्री से पूर्ण सुख पारिवारिक सुख तथा सभी कार्यो में सफलता प्राप्त होगी ता. ६-४-७० से मंगल तथा ता. २३-४-७० से शुक्र दोनों अष्टम में चलेंगे इस काल में शरीरिक पीड़ा व गृह क्लेश मित्रों से वैर भाव बढ़ेगें। ता. १५-५-७० से सू. मं अष्टम, श. बु. सातवें चलेंगे इसलिये ता. १४-६-७० तक सामान्य लाभ मिले मित्रों से सहयोग मिले। ता. १५-६-७० से सू. मं. भाग्य में, शुक्र राज्य में तथा ता. २८-६-७० से बुध भी भाग्य में चलेंगे अतः ता. ७-७-७० तक भाग्योदय तथा व्यापार में लाभ हो, हर्ष दायक समाचार मिले नौकरी में पदोन्नति मिले। ता. १६-७-७० से मं. बु. सू. राज्य पक्ष मे तथा शुक्र लाभ में चलेंगे अतः ता. २-८-७० तक प्रत्येक कार्य में सफलताये मिलती रहेंगी। ता. २-८-७० से शु. व्यय भाव में नीच के चलेंगे अतः ता. ३०-८-७० तक समय मध्यम रहेगा व्यय अधिक होगा। ता. ३१-८-७० से गु. शु. लग्न में चलेंगे तथा सू. मं. बु. के. ग्याहरवे चलेंगे अतः ता. ३-१०-७० तक लाभ सम्मान, सहयोग, व्यापार में लाभ आदि मिलते रहेंगे। ता. १०-१०-७० से बु. सू. मं व्यय भाव में चलेंगे और शुक्र धन भाव में चलेंगे। अतः ता. २१-१०-७० तक व्यय अधिक होगा। ता. ३१-१०-७० से सू. बु. गु. शु लग्न में चलेंगे मंगल व्यय भाव में चलेंगे। ता. २७-११-७० तक मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी स्वास्थ्य ठीक रहेगा। खर्च अधिक होगा। ता. २८-११-७० से शु.मं. गु. लग्न में रहेंगे, सू. धन भाव में चलेंगे, बु. तीसरे चलेंगे ता. ५-१२-७० से गुरु भी धन भाव में आजायेंगे अतः ता. ३१-१२-७० तक व्यापार में लाभ मान, परिवारिक सुख आदि में वृद्धि हो। महिलाओं के लिये यह वर्ष श्रेष्ठ नहीं है। विद्यार्थियों के लिये मध्यम है। स्वाति नक्षत्र सर्व श्रेष्ठ रहेगा। और चित्रा व विशाखा नक्षत्र वालों को स्वाति वालों से मध्यम रहेगा।

वृश्चिक:— यह वर्ष मध्यम रहेगा। शुभ व मांगलिक कार्यों में व्यय अधिक होगा। बीच २ में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा दुर्जन व्यक्ति सम्पर्क में अधिक आयेंगे तथा ये आपके विचारों में भी परिवर्तन करा सकेंगे। शत्रु मात खायेंगे: स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सन्तान पक्ष ठीक रहेगा। परिश्रम अधिक करने पर सफलता मिलेगी। ता० १-१-७० से सू. बु. शु धन भाव में मं. रा चतुर्थ भाव में गुरु व्यय भाव में तथा श. व केतु क्रमश छठे दसवें चलेंगे। ता. १५-१-७० तक समय मध्यम रहेगा। ता. १४-१-७० से सू. बु. शु तृतीय भाव में चलेंगे तथा मंगल पाँचवे। यह समय श्रेष्ठ व्यतित होगा। ता. १२-२-७० से स. शु. चतुर्थ में चलेंगे। अतः ता.

२५-२-७० तक मान वृद्धि, पारिवारिक कार्यों में सफलतायें मिलेंगी। बुद्धि व आत्मबल में विकास होगा। ता. ५-३-७० से बुध चौथे शुक्र पाँचवे व मंगल छठे चलेंगे फिर, सू. बु भी पाँचवे चलेंगे। अतः ता. २-४-७० तक विद्या व संतान पक्ष द्वारा लाभ मिले। ता. ३-४-७० से शु. बु. मं. श. शत्रु पक्ष में चलेंगे ता. १४-४-७० से सूर्य भी छठे चलेंगे अतः ता. २२-४-७० तक संघर्ष मय समय व्यतित होगा। झगड़ों से बचते रहें। मान हानी से बचें। ता. २३-४-७० से मं. शु. सातवें चलेंगे। अतः ता. १६-५-७० तक रोजगार श्रेष्ठ चले पारिवारिक सुख में वृद्धि व स्त्री सुख मिले। ता. १७-५-७० से शुक्र आठवे सू. मं. सातवें चलेगे। ता. २४-५-७० से मंगल आठवें चलेगें और सू. बु सातवें चलेंगे। अतः ता. १४-६-७० तक शारीरिक कष्ट एवं पारिवारिक कठिनाईयां बढ़ेगी। ता. १७-७-७० से सू. मं. बु. भाग्य में शु. राज्य में चलेंगे अतः भाग्य व राज्य दोनों में सफलता मिलेगी। ता. २७-७-७० से बु. दसवे व ता. १७-८-७० से सू. दसवे चलेंगे, ता. २४-८-७० से मंगल भी राज्य में चलेंगे अतः नौकरी में पदोन्नति, व्यापार में लाभ एवं यश मिले ता. १७-९-७० से शु. ग्याहरवे चलेंगे, ता. १०-१०-७० से बु. मं भी लाभ में चलेंगे शुक्र व्यय भाव में चलेंगे अतः ता. १५-११-७० तक आय व्यय समान रहेगी। ता. १६-११-७० से सू. बु. लग्न में चलेंगे शु. मं व्यय भाव में चलेंगे। ता० १२-१२-७० से गुरु लग्न में आजायेंगे अतः ता. ३१-१२-७० तक मान सम्मान बढ़ेगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति मध्यम रहेगी। व्यय अधिक होगा। महिलाओं को यह वर्ष सामान्य रहेगा विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष साधारण से अच्छा रहेगा। अनुराधा नक्षत्र वालों को सफलता अधिक मिलेगी। ज्येष्ठा वालों को यह वर्ष अनुराधा वालों से कम फलदायी रहेगा।

धनुः— यह वर्ष आपके लिये उत्तम रहेगा। शुभ कार्यों की वृद्धि होगी। सभी कार्यों से आपको यश मिलेगा। परिवारिक सुख बढ़ेंगे तथा इससे विचारों को बल मिलेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यापार व नौकरी की दशा ठीक रहेगी। कृषि कार्य में लाभ मिलेगा। संतान पक्ष मध्यम व कष्ट दायक रहेगा। जमीन जायदाद के सुख भोग से मन प्रसन्न रहेगा। ता. १-१-७० को सू शु. लग्न में चलेगे और १५-१-७० से द्वितीय स्थान में आजायेंगे। अतः ता १२-२-७० तक व्यापार व नौकरी में लाभ मिलेगा। ता. १३-२-७० से सू. शु. रा. तीसरे स्थान में चलेंगे। प्रयत्न और हिम्मत से कार्य सफल होंगे ता. १४-३-७० से सू बु. शु. चतुर्थ भाव में चलेंगे और शनी मंगल पाँचवे चलेंगे। इस काल में गृह क्लेश व विद्या और सन्तान पक्ष मध्यम रहेगा। ता. ३-४-७० से शु. बु. मं श. ये चारो ग्रह पाँचवे चलेंगे ता. १३-४-७० से सू पाँचवे और मंगल छठे चलेंगे। इस काल में मिश्रित फल प्राप्त होगा। संतान व विद्या पक्ष श्रेष्ठ रहेगा। ता. २३-५-७० से सू. मं. सातवें और शु. आठवें चलेंगे। २७-६-७० से बुध भी कलत्र पक्ष में चलेंगे। इसलिये ता. १६-७-७० तक घर गृहस्थ एवं व्यापार में सफलता मिले। स्त्री सुख मिले। ता. १७-७-७० से सू. मं. आठवें ता. २७-७-७० से बुध भाग्य में तथा ता. २-८-७० से शुक्र नीच के होकर राज्य पक्ष में चलेंगे। अतः ता. ३०-८-७० तक समय मध्यम रहेगा। ता. ३१-८-७० से शु. गु. लाभ में और सू मं. बु. के. भाग्य पक्ष में चलेंगे। ता. १७-९-७० से सूर्य राज्य पक्ष में तथा ता. ४-१०-७० से बुध भी सूर्य का साथ देगे। अतः ता. १६-१०-७० तक यश प्राप्ति भाग्योदय एवं राज्य पक्ष से लाभ मिलेगा। पदोन्नति का योग भी बनेगा। ता. २१-१०-७० से गुरु लाभ में और शुक्र भी ता ३१-१०-७० से लाभ में चलेंगें। यह समय १५-११-७० तक श्रेष्ठ रहेगा। ता. १६-११-७० से सूर्य व्यय भाव में ता. २७-११-७० से मं. गु. शु. लाभ में और बुध लग्न में चलेंगे। अतः ता. ११-१२-७० तक लाभ और यश प्राप्ति होगी किन्तु खर्चा अधिक होगा। ता. १२-१२-७० से गुरु

व्यय भाव में चलेंगे और ता. १६-१२-७० से सू. बु. लग्न में और मंगल लाभ मे चलेंगे अतः ता. ३१-१२-६० तक आपके साधन बढ़ेगे। यश प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य में धन खर्च होगा। समाज में प्रभाव बढ़ेगा। महिलाओं के लिये जून तक समय श्रेष्ठ रहेगा फिर मध्यम चलेगा। विद्यार्थियों के लिये वर्ष शुभ नहीं है। मूल नक्षत्र वालों को मिश्रित फल मिलेंगे व पूर्वाषाढ़ वालों के लिये मध्यम रहें। उतराषाढ नक्षत्र वालों को श्रेष्ठ रहेगा।

मकर:—इस वर्ष में शनि चतुर्थ तथा राहु धन स्थान में रहने के कारण मानसिक चिन्ता, शारीरिक पीड़ा तथा व्यय अधिक होने का योग है। केतु के अष्टम स्थान में रहने के कारण आर्थिक स्थति कमजोर रहेगी। कई प्रकार के संघर्ष और विरोध सामने आयेगा। परिश्रम अधिक करना पड़ेगा। शत्रुता बढ़ेगी। कामकाज सामान्य चलेगा। ता. १-१-७० से सू. शु व्यय भाव में चलेंगे। १४-१-७० से सू. शु. लग्न में चलेंगे अतः ता. ८-२-७० तक परिस्थितियों में सुधार होगा। कार्यो में सफलता मिलेगी। ता. ५-३-७० से बु. शु. मं. क्रमश दूसरे तीसरे और चौथे भाव में चलेंगे अतः ता. २२-४ ७० तक परिवारिक सुखों के अलावा आर्थिक लाभ व राज्य पक्ष में भी सफलतायें मिलेगी। ता. २३-४-७० से सू. बु. श चतुर्थ भाव में और मं. शु पाँचवे भाव में चलेंगे अत: ता. १४-६-७० तक विद्या, वृद्धि तथा सन्तान सम्बन्धी परेशानियां रहेगी। परिवारिक संघर्ष भी बढ़ेगा। ता १५-६-७० से सू. मं. छठे शुक्र सातवे चलेंगे। अतः ता. ६-७-७० तक समय सामान्य रहेगा। किन्तु परिवारिक जीवन में सफलता मिलेगी। ता. ७-७-७० से शुक्र आठवें तथा मंगल और बुध सातवें चलेंगे ता. १६-७-७० से सू. भी सातवें चलेंगे अतः ता. १६-८-७० तक गृहस्थीं में परेशानियां रहेगी। स्त्री से मन मुटाव बढ़ेगा। ता. ३१-८-७० से शु. दसवें चलेंगे सू. आठवें, बु. मं. भाग्य में चलेंगे अतः ता. १६-१०-७० तक भाग्योदय और सभी कार्यो में सफलता मिलेगी। व्यापार व नौकरी में लाभ मिलेगा। ता. ३१-१०-७० से सू. बु. गु. शु. दसवें स्थान में चलेंगे। ता ६-११-७० से बुध लाभ स्थान में चलेंगे। मंगल भाग्य में होते हुए राज्य में चलेंगे और ता. १६-११-७० से सूर्य भी लाभ में चलेंगे ता. ५-१२-७० से गुरु भी लाभ में चलेंगे। अत: ता. १५-१२-७० तक धन लाभ राज्य में पदोन्नति तथा पारवारिक सुखों में वृद्धि होगी। ता. १६-१२-७० से सू. बु. व्यय भाव में चलेंगे। मं. शु. दसवें चलेंगे। अत: ता. ३०-१२-७० तक धन लाभ मान प्रतिष्ठा आदि मिलेंगे। कार्य सफल होंगे। महिलाओं के लिये वर्ष सामान्य रहेगा। विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष उत्तम रहेगा। उत्तराषाढ़ नक्षत्र में पैदा होने वालों को श्रेष्ठ रहेगा। श्रवण, वालों को मध्यम तथा धनेष्ठा। वालों को सामान्य परेशानियां रहेगी।

कुम्भ:—यह वर्ष आपके लिये सामान्य रहेगा कामकाज भी अच्छा चलेगा। शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक अशान्ति बढ़ेगी तथा शरीर में गुप्त रोग होंगे। सरकारी कार्यो में सफलता मिलेगी। कहीं से गुप्त धन भी मिले। मित्रों का सहयोग मिलेगा। स्त्री व संतान का सुख मध्यम रहेगा। शत्रु वर्ग पराजित होगा। सालाना वजट घाटे का रहेगा किन्तु खर्च मांगलिक कार्यो में अधिक होगा। ता. १-१-७० से १३-१-७० तक सू. शु. लाभ पक्ष में चलेंगे। अत: धन लाभ होगा। ता. १४-१-७० से सू. शु. बाहरवें बुध ग्याहरवें तथा मंगल धन भाव में चलेंगे। अत: ता. १२-२-७० तक धन लाभ तो होगा किन्तु खर्च भी कम नहीं होगा। ता. १३-२-७० से सू. शु. लग्न में बु. बाहरवें चलेंगे। अतः ता. १-३-७० तक मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी किन्तु व्यय अकिध

होगा । ता. २-३-७० से मं. तीसरे सू. बु. लग्न में और ता. ३-३-७० से शु. धन भाव में चलेंगे अतः ता. १८-३-७० तक धन लाभ मान सम्मान मिलेगा । ता. २-४-७० तक शु. बु. सू. धन भाव में चलेंगे । इसमे गुप्त धन मिलने का योग है। तथा व्यापार में लाभ का योग है। ता. ३-४-७० से शु. बु. मं. श. ये चारो ग्रह तीसरे भाव में चलेंगे । ता. १३-४-७० से सू. भी तीसरे चलेंगे तथा मंगल चौथे चलेंगे । ता. २१-४-७० से शुक्र चतुर्थ भाव में चलेंगे अतः ता. १६-५-७० तक प्रयत्न करने पर कार्यो में सफलतायें मिलेंगी पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी । ता. १७-५-७० से शु. पाँचवे, बु. तीसरे सू. मं. चौथे चलेंगे। अतः ता. १०-६-७० तक विद्या, बुद्धि, संतान पक्ष व पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी । राज कार्यो में सफलता मिलेगी । ता. १५-६-७० से सू. मं. पाँचवे. शु. छठें और बुध चौथे चलेंगे । अतः ता. ७-७-७० तक संतान सुख व विद्या बुद्धि में सफलता मिलेगी । ता. ११-७-७० से मं. बु. छठें, शु. सातवें तथा ता. १६-७-७० से सूर्य भी छठे चलेंगे । अतः ता. २-८-७० तक शत्रुओं पर विजय प्राप्ती होगी । पारिवारिक संघर्ष बढ़ेंगे । ता. ३-८-७० से नीचके शु. अष्टम में, नीच के मंगल छठे और बु सातवें चलेंगे । अतः ता. ३०-८-७० तक भाग्य कमजोर रहेगा व शारीरिक व्याधायें बढ़ेगी । ता. ३१-८.७० से शु. गु. भाग्य में व मं सूर्य के. सातवे रहेंगे । अतः ता. ६-१०-७० तक भाग्योदय व पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी । ता. १०-१०-७० से शु. राज्य में गुरु भाग्य में और सू. मं. बु. आठवे चलेंगे । अतः ता. २०-१०-७० तक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा । स्वाथ्य भी ठीक नहीं रहेगा । ता. २१-१०-७० से सू. बु. गु. भाग्य में और ता. ११-१०-७० से शुक्र भी वक्री होकर भाग्य में चलेंगे । अतः ता. २६-११-७० तक भाग्य सम्बन्धी सभी कार्यों में सफलतायें मिलेगी । ता. २७-११-७० से गु. मं. शु. भाग्य में सू. राज्य में चलेंगे । ता. ५-१२-७० से गु राज्य में और ता. १६-१२-७० से सू. बु. लाभ में चलेंगे । अतः ता. ३१-१२-७० तक राज्य व व्यापार से लाभ एवं भाग्योदय से सफलतायें मिलेगी । शुभ कार्या में बाधायें आयेगी तथा धन भी खर्च होगा । महिलाओं के लिये यह वर्ष मध्यम रहेगा । विद्यार्थियों के लिये श्रेष्ठ है । शतभिषा नक्षत्र में पैदा होने वालों को अधिक सफलता मिलेगी । पूर्वाभाद्रपद वालों को मध्यम तथा धनेष्ठा नक्षत्र वालों को सामान्य रहेगा ।

मीन:-आपके लिए यह वर्ष उत्तम नहीं रहेगा । गुरु आठवें शनि धन भाव में तथा राहु के व्यय भाव में रहने से शरीर में अस्वस्थता, खर्चे में अधिकता तथा मानसिक चिन्ता बनी रहेगी । नेत्र व शिर में पीड़ा होगी । शत्रु वर्ग बढ़ेगा व अपने भी पराये जैसा व्यवहार करेंगे । भाग्योदय में रुकावटें पैदा होगी । स्त्री सुख मध्यम रहेगा । ता. १-१-७० से सू. बु. शु. राज्य पक्ष में चलेंगे, मं. बाहरवें तथा केतु छठे चलेंगे । अतः ता. १३-१-७० तक भाग्य कमजोर रहेगा, व्यय अधिक होगा । ता. १४-१-७० से सू. लाभ में तथा मं. लग्न में चलेंगे । अतः ता. ११-२-७० तक समय ठीक रहेगा । कार्य सफल होंगे । ता. १२-२-७० से सू. शु. रा. बाहरवें, मंगल लग्न में और या ग्याहरवें चलेंगे । अतः ता. १४-३-७० तक खर्चे की अधिकता रहेगी । शोकदायक समाचार सुनेंगे । किन्तु मं. बुध सान्त्वना देंगे । ता. १५-३-७० से सू. शु. बु. लग्न में, मंगल धन भाव में चलेंगे अतः मान प्रभाव बढ़ेगा । ता. ३-४-७० से शु. मं. बु. श. धन भाव में तथा ता. १४-३-७० से सू. भी धन भाव में चलेंगे । ता. २३-४-७० से मं. शु. तीसरे चलेंगे अतः ता. २३-५-७० तक वर्ष का सर्व श्रेष्ठ समय निकलेगा । परिश्रम अधिक करना पड़ेगा बिगड़े कार्यों में सफलता मिलेगी । ता. २४-५-७० से मं. शु. चौथे

चलेंगे । ता. १५-६-७० से सूर्य भी चौथे शु. पांचवें और बु. तीसरे चलेंगे । अतः ता. ७-७-७० तक धन लाभ होगा, पारीवारिक सुख मिलेगा। ता. ८-७-७० से मं. पांचवें ता. १६-७-७० से सू. बु. भी पाँचवें व शुक्र केतु छठे चलेंगे । अतः ता. १६-८-७० तक समय मध्यम रहे, शत्रुता बढ़ेगी सन्तान पक्ष में चिन्ता बढ़ेगी । ता. १७-८-७० से सू. बु. के. छठे तथा २४-८-७० से मंगल भी छठे चलेंगे । अत: ता. ६-६-७० तक समय संघर्षों में व्यतीत होगा । ता. १७-६-७० से सू. सातवें चलेंगे शु. गु. आठवें और मं. बु. छठे चलेंगे । अत; ता. २०-१०-७० तक व्यापार व नौकरी में लाभ मिले, शत्रु परास्त होवे । ता. २१-१०-७० से सू. बु. गु. शु. आठवे चलेंगे मंगल सातवे चलेंगे अत: ता. २६-११-७० तक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा । अधिक प्रयासों से कार्य सफल होगा । नौकर वर्ग के लिये स्थानान्तरण का योग है तथा अधिकारी से मन मुटाव होवे । ता. २८-११-७० से बु. दसवें सू. भाग्य में रहेंगे ता. ५-१२-७० से गुरु भाग्य में आजायेंगे सू. बु. राज्य में चलेंगे । अतः ता. ३०-१२-७० तक परिश्रम के द्वारा सफलता का योग बनता है । राज्य द्वारा मान व धन लाभ हो । किन्तु मानसिक अशान्ति बनी रहेगी । महिलाओं के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा । विद्यार्थियों के लिए जून तक मध्यम तथा जौलाई से दिसम्बर तक श्रेष्ठ रहेगा । उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र श्रेष्ठ रहेगा । पूर्वा भाद्रपद वालों को मिश्रित फल मिले व रेवती नक्षत्र वालों के लिये यह वर्ष मध्यम रहे ।

पुस्तक समीक्षा



विश्वशांति की खोज

(लेखक :-ब्रजनारायण महरोत्रा)

सम्पादक:=बालकुमार खेर एम. ए. (दर्शन)

प्रकाशक :-रघु साहित्य प्रकाशन २४।१६५ रामनारायण बाजार, कानपुर-१

मूल्य :-विशिष्ट संस्करण ८) रु.

साधारण संस्करण ४) रु.

पृष्ठ संख्या-१८०

आजकल भौतिकवाद की प्रधानता है, इसीलिए जब कोई नवीन चमत्कार आविष्कृत होता है, तो सहज ही मनुष्यों में हल चल मच जाती है, और ऐसा होना स्वाभाविक भी है, किन्तु वह समय दूर नहीं है कि जब यह भौतिकवाद ही मानव के अधः-पतन का कारण बनेगा।

हमारे मनीषी महर्षियों की दृष्टि अधिदेव और अध्यात्मकों को विशेष महत्व देती थीं। उनका लक्ष्य योग और मोक्ष था। भोग की अपेक्षा इनका स्थान बहुत ऊंचा है। और मानव को शांति प्राप्त कराने के लिए योग और मोक्ष ही साधन मात्र हैं। भौतकवाद से विश्व में भोग विलास की भावनाएं उत्पन्न होंती हैं किन्तु स्थायी शांति तो मानव को ईश्वरीय शक्ति में अटूट विश्वास करने से ही प्राप्त होगी।

ज्योतिष मार्तण्ड कार्यालय (डी०-१६ गणेश मार्ग, बापूनगर जयपुर-४) को समालोचनार्थ पुस्तक भेजने वाले लेखकों से निवेदन है कि वे एक पुस्तक की दो प्रतियां अवश्य भेजें।

—सम्पादिका

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने अपने जीवन में घटने वाली घटनाओं के आधार पर मानवता की प्राप्ति के सहज, सुलभ साधन वर्णित किए हैं, जो लेखक के जीवन में प्रयोगों द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं।

मानव जीवन सहयोग के सिद्धांत पर ही आधा-रित है, और वह सहयोग तब ही सुलभ हो सकता है, जब एक दूसरे को भिन्न अथवा विपरित नहीं समझें। लेखक ने बहुत सुन्दर ढंग से इस विषय में विवेचन किया है, और व्यावहारिकता को भी उत्तम रूप से समझाया है। पुस्तक न केवल पढ़ने योग्य वरन् घर में रखने योग्य है जिससे परि-वार के अन्य सदस्य तथा मित्रगण भी लाभ उठा सकें।



'शुभाशुभ ग्रह निर्णय विचार'

लेखक :-ज्योतिर्विद स्व. ह. ने. काटवे

प्रकाशक :-नागपुर प्रकाशन, नागपुर-१

मूल्य : ३.५० रुपये, पृष्ठ ८६

मूल ग्रन्थ मराठी भाषा में लिखा हुआ है। यह संशोधित हिन्दी अनुवाद है। इसमें केन्द्र और त्रिकोण के ग्रहों का शुभाशुभ विचार है तृतीय,

षष्ठ, एकादश, स्थान के स्वामी अशुभ फल देते हैं "द्वितीय एवं सप्तम स्थान से मारक विचार" धनेश व व्ययेश की युति, राजयोगकारक ग्रहों के फल, आदि विषयों का विद्वान लेखक ने विस्तार से वर्णन किया है। पुस्तक ज्योतिष प्रेमियों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★

'भावेश विचार'

लेखक : ज्योतिर्विद स्व. ह. ने. काटवे प्रकाशन, नागपुर-१ मूल्य चार रुपये, पृष्ठ, १०२ मूल ग्रन्थ मराठी भाषा में लिखा गया है, यह उसका संशोधित हिन्दी अनुवाद है। जातकशास्त्र में जन्मकुण्डली से फलादेश बतलाने के लिए जो आधार दिये गए हैं, उनमें भावेशफल भी एक है, इस पुस्तक में भावेश का स्वरूप, भावेश फल की उपयोगिता आदि विषयों पर चौदह प्रकरण दिये गये हैं विद्वान लेखक ने भावेश के फल आदि विषयों का शास्त्र सम्मत स्पष्टीकरण किया है, ज्योतिषियों के लिए मूल पुस्तक लाभकारक है।

★

भाव विचार

लेखक : ज्योतिर्विद स्व, ह. ने. काटवे, मूल्य तीन रुपया पचास पैसा पृष्ट ५६ प्रकाशक : नागपुर प्रकाशन, नागपुर -१ भाव का अर्थ क्या है, तथा बारह भावों का विभाजन कैसे किया गया है, इस सम्बन्ध में संस्कृत व अंग्रेजी ग्रन्थों में जो विवरण मिलता है, उसके आधार पर लेखक ने यह पुस्तक संकलित की है, इसमें बारह भाव, राशि ग्रह, नक्षत्र, आदि के पर्याय नाम, स्वरूप, कारकत्व, आदि विषयों पर पर्याप्त रूप से प्रकाश डाला गया है पुस्तक ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

★

रवि विचार

लेखक : ज्योतिष स्व. ह. ने. काटवे, अनुवादक : प्रो. विद्याधर जोहरापुरकर, प्रकाशक : नागपुर प्रकाशन नागपुर नं. १ मूल्य एक रुपया पचास पैसा पृष्ठ ६५ यह पुस्तक स्व. ह. ने काटवे द्वारा प्राचीन ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन करके लिखी गई है। 'रवि' का द्वादश भावों में राशी अनुसार विचार करके उसके मूल स्वरूप कारकत्व इत्यादि के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला गया है, इसमें वैद्यनाथ, हिल्ला जातक कारक आर्य ग्रन्थकार, पवनमत. राफेल, आदि का मत प्रकट करते हुए लेखक ने अपने अनुभव के आधार पर भी मत प्रगट किया है। पुस्तक ज्योतिष की जानकारी के लिऐ अति उपयोगी है।

★

'चन्द्र विचार'

लेखक : स्व. ह. ने. काटवे, अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर प्रकाशक : नागपुर प्रकाशन, नागपुर-१ मूल्य दो रुपया पृष्ठ ६६ चन्द्र प्रधानतः स्त्री स्वभाव ग्रह है। स्त्री के अच्छे और बुरे दोनों गुण धर्म चन्द्र में होते हैं। जन्म कुण्डली में चन्द्र अकेला होता है। अथवा पुत्र ग्रहों से सम्बन्धित होता है। तब उसमें स्त्री के स्वाभाविक गुण पाये जाते हैं। इस पुस्तक में लेखक ने चन्द्र के कारक तत्व ग्रह योनी में भेद, तथा द्वादश भाव का विवेचन किया है। आचार्य गर्ग, काशीनाथ कल्याण वर्मा, हिल्लाजातक, पवनमत पाश्चात्य मत, अलनलिओं आदि के चन्द्र की स्थिति के विषय में मत देते हुए अपने अनुभव के आधार पर विवेचनात्मक विचार प्रगट किए हैं। पुस्तक ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है।

★

'मंगल विचार'

लेखक : विद्याधर जौहरापुरकर एम. ए. प्रकाशक : नागपुर प्रकाशन, नागपुर-१ मूल्य दो रुपया पचास पैसा पृष्ठ एक सौ तीस मंगल ग्रह को शास्त्रकारों ने शक्ति का प्रतिनिधि माना है। इस ग्रह का मानव की बाल्यावस्था पर स्वामित्व होता है, इस कारण यह अवस्था रक्त दूषित हो जाने की अधिक सम्भावना रहती है, इस ग्रह के बलवान होने के विषय में आचार्यों ने भिन्न भिन्न मत प्रगट किए हैं। पराशर के मत से इसे कृष्ण-पक्ष तथा संध्या समय बलवान माना गया है। किन्तु जयदेव ने इसे रात्री के समय तथा मध्यान्ह काल में बलवान कहा है। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने मंगल का स्वरूप कारकत्व विचार मूल स्वरूप द्वादश भाव विवेचन, महादशा विचार तथा वस्तु विचार आदि प्रकरणों पर भिन्न भिन्न आचार्यों का मत प्रगट करते हुए निजी अनुभव के आधार पर भी सारगर्भित मत प्रगट किया है। पुस्तक उपयोगी है।

★

बुध विचार

लेखक : ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे अनुवादक : विद्याधर जौहरापुरकर एम. ए., प्रकाशक : नागपुर प्रकाशन, नागपुर-१ मूल्य दो रुपया, पृष्ठ ८१ ज्योतिष में बुध ग्रह का महत्वपूर्ण स्थान है। इस सम्बन्ध में कितने ही विद्वानों ने भिन्न भिन्न विचार प्रगट किए हैं। प्रस्तुत पुस्तक में बुध का स्वरूप, कारकत्व द्वादश भाव विवेचन आदि विषयों में सर्व श्री आचार्य कल्याण वर्मा, वैद्यनाथ, गर्ग, वाराहमिहिर, गुणाकर, पराशर, काशीनाथ आदि पुरातन ग्रन्थाकारों के एवं यवन जातक तथा पाश्चात्य ज्योतिषियों के मत दिए गए हैं। और लेखक ने अपने स्वयं के अनुभव के अनुसार भी मत प्रगट किया है। पुस्तक की उपयोगिता का महत्व ज्योतिष जिज्ञासु ही पढ़कर समझ सकते हैं। पुस्तक के पढ़ने से ऐसा आभास होता है कि लेखक ने ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न ग्रन्थों का अध्ययन करके यह पुस्तक सर्व साधारण के हित के लिए प्रस्तुत की है।

★

गुरु विचार

लेखक : ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे . प्रकाशक : नागपुर प्रकाशन, नागपुर-१ मूल्य दो रुपया पचास पैसा पृष्ठ ११९ गुरु ग्रह विद्वानों का प्रतीक है, समाज में आर्थिक दृष्टि से विद्वानों की मान्यता नहीं हैं। उनकी अवहेलना होती है, किन्तु उनकी कीर्ति मृत्यु के पश्चात फैलती है। पुराणों में गुरु ग्रह के अशुभ फलों के बारे में भी वर्णन मिलते हैं। कहते हैं लग्न में गुरु होने से राम को बनवास हुआ, तृतीया के गुरु से बलि राजा पाताल गया, चतुर्थ से राजा हरिश्चन्द्र को सत्य परीक्षा हुई, छठे में द्रौपदी का वस्त्र हरण हुआ, आठवे में रावण का नाश हुआ दसवें में दुर्योधन तथा बारहवें में पांडु की मृत्यु हुई। इसके अतिरिक्त और भी भावों में गुरु की स्थिति के विषय में अशुभ फल पाया गया है। इस पुस्तक में गुरु ग्रह का सामान्य परिचय, गुरु का स्वरूप, कारकत्व, विचार, द्वादश भाव फल, महादशा विवेचन, एवं उच्च नीच विचार आदि विषयों पर सम्पूर्णता से मत प्रगट किया है।

★

शुक्र विचार

लेखक : ज्योतिषी स्व. ह. ने. काटवे प्रकाशक :नागपुर प्रकाशन, नागपुर-१ मूल्य दो रुपया पचास पैसा पृष्ठ १०१ जिसकी जन्म कुण्डली में शुक्र बलवान होता है, उसका जीवन सफल होता

है, व्यवसाय में यश, संतति, सम्पत्ति, कीर्ति आदि की प्राप्ति होती है। तृतीय, और अष्टम का होने से शुभ फल नहीं मिलते हैं। इस पुस्तक में लेखक ने शुक्र का सामान्य स्वरूप, कारकत्व, द्वादश भाव, महादशा एवं शुक्र कुण्डली आदि विषयों पर अनेकानेक आचार्यो के शास्त्र सम्मत मत प्रकट करते हुये स्वयं के अनुभव के आधार पर भी विवेचनापूर्वक मत प्रकट किया हैं। पुस्तक सरल एवं सहज है।



शनि विचार

लेखकः ज्योतिष स्व. ह. ने. काटवे, प्रकाशकः नागपुर प्रकाशन, नागपुर-१ मूल्य दो रुपया पचास पैसा पृष्ठ ११६, ज्योतिष शास्त्र में शनि ग्रह को मारक तथा अशुभ फल देने वाला माना गया है। पाश्चात्य विद्वान इसे दुर्दैव लाने वाला कहते है। किन्तु यही शनि यदि कृपायुक्त हो तो आनन्द का मार्ग देता है। इस पुस्तक में शनि में सामान्य स्वरूप का विस्तृत वर्णन, कारकत्व विचार द्वादश भावफल, एवं महादशा आदि विषयों पर विचार प्रकट किये हैं। पुस्तक ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिये उपयोगी है।



राहू--केतु विचार

लेखकः ज्यौतिषीः स्व. ह. ने. काटवे मूल्यः तीन रुपया पचास पैसा पृष्ठ १५१ प्रकाशकः नागपुर प्रकाशन, नागपुर —१ लेखक ने इस पुस्तक को, अनेक संस्कृत ग्रन्थो का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करने के पश्चात संकलित किया है। राहु-केतु के द्वादश भाव फल, महादशा, विचार, कारकत्व तथा योगो के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण आदि देकर राहू-केतु का संपूर्ण रूप से विवेचन किया है। ज्योतिष के अनेक विद्वानो की सम्मति इन ग्रहों के फल आदि के विषय में प्रस्तुत करते हुये अपने निजी अनुभव के आधार पर भी सम्मतियां प्रकट की है। लेखक का परिश्रम सराहनीय है। ज्योतिष का कार्य करने वालो के लिये पुस्तक अति उपयोगी है।



"ज्यौतिष एवं हस्तरेखा विज्ञान"
(प्रश्नोत्तरी)

लेखक : राधेश्याम कोशिक प्रकाशक : ज्योतिष विज्ञान आश्रम मीरापुर (मुजफ्फर नगर) मूल्य दो रुपया पचास पैसा पृष्ठ ३०० प्रस्तुत पुस्तक गुरु शिष्य प्रश्नोत्तरी के रूप में लिखी गई है। इसमें चार अध्याय में ज्यौतिष संबंधी प्रश्नोत्तर है, तथा पांचवे अध्याय में जन्म लग्न ग्रह एवं हस्त रेखा का तुलनात्मक दृष्टि से वर्णन किया गया है।

आरंभ से अन्त तक प्रत्येक प्रश्न का शंका समाधान सरल भाषा में किया गया है। ज्यौतिष एवं हस्तरेखा विज्ञान के प्रेमियों के लिये पुस्तक लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।



प्रश्नोत्तरी मुहूर्त एवं ज्यौतिष विज्ञान

लेखकः राधेश्याम शर्मा ज्यौतिष शास्त्री प्रकाशकः ज्यौतिष विज्ञान आश्रम, मीरापुर जिला मुजफ्फर नगर मूल्यः १ रु. ५० पैसे पृ. १८० प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने जीवनपयोगी संबंधी विचारों को प्रश्नोत्तारी के रूप में सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया है, चार अध्याय में गृहस्थियों के हितार्थ मुहूर्त, शकुन एवं स्वप्न विचार आदि पर समुचित प्रकाश डाला है। मुहूर्त विज्ञापन पर विश्वास करने वाले व्यक्तियों के लिये यह पुस्तक परम हितकारी है।



'कुण्डली दर्पण'

लेखकः डा० नारायण दत्त श्रीमाली प्रकाशकः अनुपम पाकेट बुक्स, शक्ति नगर दिल्ली–६ मूल्य दो रुपया पृष्ट संख्या २०३ प्रस्तुत पुस्तक में विशिष्ट व्यक्तियों को जन्म कुंडलियाँ दी गई हैं। कुडली में द्वादश भावों में स्थित ग्रह ग्रहबल और उस भाव पर शुभाशुभ ग्रहो की दृष्टि आदि पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला गया है।

ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इसमें वर्णित द्वादश भावो में स्थित ग्रह राशि आदि की जानकारी से मनुष्य अपना भविष्य. शिक्षा- विवाह आदि मानव उपयोगी विषयों का लाभ सरलता से प्राप्त कर सकता है।



भारतीय ज्योतिष

लेखक : डा० नारायण दत्त श्री माली प्रकाशक अनुपम पाकेट बुक्स, शक्ति नगर, दिल्ली–६ मूल्य २ रुपया पृष्ठ संख्या २२८ यह निःसन्देह सत्य है कि सर्व प्रथम ज्यौतिष का आविष्कार भारत में हुआ और यहां से ही यह विद्या संसार के अन्यत्र भागो में प्रसारित हुई। ग्रहों का चक्र निरन्तर चलता रहता है, और उनका प्रभाव न केवल मानव जीवन पर बल्कि पशु– पक्षी आदि जीवों पर भी पड़ता है, और शुभाशुभ कर्मों का फल शुभग्रहो द्वारा ही प्राप्त होता है। मानव जीवन के विभिन्न अवयवों पर प्रभाव डालने वाले मुख्यतः सौर मंडल में, सूर्य चन्द्र, मंगल, बुध गुरु शुक्र शनि सात ग्रह है। वाराहमिहिर के अनुसार इन्हीं सातो ग्रहों और वारह राशियों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है।

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने मानव जीवन पर ग्रहों तथा राशियों के अच्छे बुरे प्रभाव का सविस्तार वर्णन किया है। पुस्तक की भाषा एवं शैली इतनी सरल है कि सामान्य पढ़ा–लिखा व्यक्ति भी अपनी ग्रहस्थिती तथा उसके प्रभाव के विषय में सुगमता से जान सकता है। यह पुस्तक ज्योतिष विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने वालों के लिये अत्यन्त उपयोगी है।



व्यवसाय का चुनाव और आपकी आर्थिक स्थिति

लेखक : ज्योतिविंद जगन्नाथ मसीन प्रकाशक: गोयल एन्ड कम्पनी, दरीबा दिल्ली–६ मूल्य पाँच रुपये पृष्ठ १८३ प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने व्यक्ति को आर्थिक स्थिति को सुधारने की प्रक्रिया को ज्योतिष की सहायता से, अनेक दृष्टिकोणों के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं। धनका लग्नो से संबंध, स्वक्षेत्री शुभ ग्रह, और केतु को एकत्र स्थिति विशेष धन की प्राप्ति, सुदर्शन विचार से धन बाहुल्य, स्वामी दृष्टि भाव से धनाधिक्य, कारक योग से प्रचुर धन, चन्द्राधि् योग से सहस्त्रों की आय, विपरीत राज योग से करोड़ोकी आमदनी, विषयों पर अनेक बहुमूल्य तथा उपयोगी सिद्धान्तों द्वारा अध्याय लिख कर, प्रचुर धन प्राप्ती के लक्षणों का दिग्दर्शन किया है। इसके अतिरिक्त किस व्यवसाय से धन तथा कितना धन और कब, व्यवसाय चुनने की पद्धिति आदि विषयों का भी लेखक ने विशेष अध्यायों में उदाहरण सहित सरल वैज्ञानिक शैली में वर्णन किया है। धन प्राप्ति की अभिलाषा प्रत्येक व्यक्ति को होती है, और वह इस दिशा में जीवन भर प्रयत्न करता रहता है।

उसको जीवन निर्वाह के साधन जुटाने के लिये कौनसा व्यवसाय उपयुक्त होगा और किस प्रकार उसकों प्रचुर धन की प्राप्ति हो सकती है, इस क्रम में व्यक्ति सर्वदा प्रयत्नशील रहता है,

ज्योतिष शास्त्र इस जिज्ञासा को जानने का एक अनुपम साधन है। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने ज्योतिष के प्राचीन एवं मौलिक ग्रन्थो में से अलभ्य नियमों एवं सौ से अधिक प्रसिद्ध पुरुषों की कुंडलियां देकर धन प्राप्ति तथा व्यवसाय के चुनाव संबंधी नियमो का विद्वतापूर्ण स्पष्टीकरण किया है। पुस्तक ज्योतिष शास्त्रीयों के लिये तो लाभदायक है ही किन्तु उन जिज्ञासुओं के लिये भी पथ प्रदर्शक है, जो स्वयं अपने लिये कुछ जानना चाहते है।



फलित सूत्र

(सार रूप में फलित ज्योतिष)

लेखक : ज्योतिर्विद जगन्नाथ भसीन प्रकाशक : गोयल एण्ड कम्पनी दरीबा, दिल्ली—६ मूल्य पांच रुपये पृष्ठ, १६७ व्यक्ति के जन्म के समय नक्षत्र, ग्रह आदि जो आकाश में स्थित होते हैं, जन्म कुंडली उसी आधार पर बनाई जाती है। संसार में जो भी उत्पन्न होता है, वह उस समय की प्रकृति के गुण दोषों को लेकर ही उत्पन्न होता है। जन्म कुन्डली को समझने के लिए ज्योतिष ग्रन्थों को पढ़ना पड़ता है। प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने फलित ज्योतिष का सार रूप में विवेचन किया है। व्यक्ति की आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक, राजनीतिक जीवन, स्त्री कैसी, पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति, व्यवसाय, रोग, चोट तथा अचानक लाभ आदि विषयों पर सरल भाषा में अनूठे ढंग से प्रकाश डाला है, इसके अतिरिक्त आधुनिक समय में जो समस्याएं व्यक्ति के समक्ष उपस्थित होती है, जैसे प्रेम विवाह, तलाक, लाटरी आदि पर लेखक ने समुचित रूप से यथा स्थान उल्लेख करके पुस्तक को सर्वोपयोगी बनाने का प्रयास किया है। पचास से अधिक कुंडलियां देकर जीवन में घटने वाली घटनाओं को ज्योतिष सिद्धांत द्वारा सिद्ध करने का भी प्रयत्न किया है। पुस्तक ज्योतिष के विद्वानों के लिए तो अमोघ शास्त्र है ही किन्तु सामान्यजन भी इसको पढ़कर ज्योतिष के विषय में सरलता से ज्ञान प्राप्त कर सकता है।



ज्योतिष्मती त्रैमासिक पत्रिका

सम्पादक एवं संचालक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य प्रकाशक : ज्योतिषनिकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश) एक प्रति २.१५ पैसे 'ज्योतिष्मती' का प्रकाशन गत बारह वर्ष से हो रहा है। यह अंक इसके तेरहवे वर्ष का प्रथम नव वर्षाङ्क है, जो कार्तिक कृष्णा १-सं. २०२६ को प्रकाशित हुआ है।

ज्योतिष्मती में प्रायः भारत के ख्याती प्राप्त उच्च कोटि के विद्वानों के लेख प्रकाशित होते रहते हैं, इस अंक में डा. श्री रूद्रदेव त्रिपाठी द्वारा 'तन्त्र साहित्य : एक सिंहावलोकन विषय पर अत्यन्त गवेषणापूर्वक लेख लिखा गया है, जिसमें लेखक ने वैष्णव तन्त्र, शैव तन्त्र, शाक्त तन्त्र, गाणपत्य तन्त्र, बौद्ध तन्त्र और जैन तन्त्र आदि पर शास्त्र सम्मत विचार प्रगट करते हुए यह सिद्ध किया हैं कि यदि साधक नियमानुसार सविधि इन तन्त्रों में से किसी एक की साधना करे तो वह केवल अपनी रक्षा ही नहीं प्रत्युत प्राणिमात्र पर एकाधिपत्य प्राप्त कर सकता हैं।

श्रीमती चचला बिड़ला द्वारा लिखित "हाथ की रेखाएं विज्ञान की कसौटी पर" एक महत्वपूर्ण लेख है, इसमें मानव जीवन में भूत, भविष्य तथा वर्तमान में घटने वाली घटनाओं का हस्तरेखाओं से क्या सम्बन्ध है, इस पर उत्तम ढंग से विवेचन किया है।

इसके अतिरिक्त और भी कई विद्वानों द्वारा साहित्यिक, परिचायक एवं ज्यौतिषविज्ञान आदि विषयों पर महत्वपूर्ण लेख है। त्रैमासिक व्यापारिक भविष्य फल एवं त्रैमासिक राशि फल भी पत्रिका में दिये है। सम्पादक एवं संचालक श्री त्रिवेदी महोदय स्वयं ज्योतिर्विज्ञान एवं संस्कृत साहित्य के उच्चकोटि के विद्वान हैं। उनका यह प्रयास सराहनीय है।



अखंड ज्योति

मासिक पत्रिका मूल्य ६) रुपया वार्षिक, पता अखण्ड-ज्योति संस्थान, मथुरा (यू. पी.) 'अखण्ड ज्योति' आध्यात्मिक पत्रिका है। इसका ध्येय मानव को आत्मिक जीवन की महत्ता का बोध कराना है। इस युग का मानव केवल भौतिक जीवन को ही जीवन समझ बैठा है और केवल शरीर को ही सब कुछ समझे हुए हैं उसे यह पता नहीं कि शरीर में आत्मा भी कुछ महत्व रखती है। मानव जोवन की विशेषता तो आदर्शवादिता और उत्कृष्टता पर निर्भर है। यदि समय रहते इस दिशा में कुछ नहीं किया गया तो अन्त में निसंदेह यही कहना पड़ेगा कि जीवन व्यर्थ ही चला गया।

'अखण्ड ज्योति' इसी उद्देश्य को लेकर गत तीस वर्षों से मानव को आत्मज्ञान का बोध कराने की दिशा में लेखन माला द्वारा प्रचार कर रही है। आज के व्यावसायिक युग में सबसे विशेष बात यह है कि यह एक व्यवसायिक पत्रिका नहीं है, इसमें विज्ञापन आदि के लिए भी कोई स्थान नहीं है।

इस पत्रिका का प्रासंगिक आलोच्य अङ्क नवम्बर, ६६ है। इसमें प्राय: सब लेख उत्तम है, किन्तु 'भगवान का स्वरूप दार्शनिकों और वैज्ञानिकों की दृष्टि में' 'आत्मा की अमरता कल्पनामात्र नहीं' "आध्यात्मिक जीवन इस तरह जीयें" और 'मनोविकार हमारे सबसे बड़े शत्रु' शीर्षक लेख सारगर्भित एवं विशेष उल्लेखनीय हैं।



युग निर्माण योजना

मासिक पत्रिका मूल्य ६) रु. वार्षिक, पता अखण्ड-ज्योति संस्थान, मथुरा (यू. पी.) पत्रिका का उद्देश्य चरित्र निर्माण, भ्रष्टाचार उन्मूलन, नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान आदि है। मनुष्य में व्याप्त सद्‌गुण उसकी श्री, समृद्धि, प्रगति और शांति की प्राप्ति के कारण होते हैं और दुर्गुणी व्यक्ति प्राप्त की हुई अथवा उत्तराधिकार में मिली हुई समृद्धियों से भी हाथ धो बैठते है। सदगुणों की विभूतियां ही व्यक्ति को प्रतिभावान बनाती है। और प्रखर व्यक्तित्व ही हर दिशामें सफलता प्राप्त करता है। प्रस्तुत अङ्क नवम्बर, ६६ में समाज सुधार सम्बन्धी कई उत्तम अङ्क है। पत्रिका का प्रकाशन व्यवसायिक दृष्टि से न करके केवल समाज सुधार के हित से किया जाता है। इसमें विज्ञापन आदि के लिए कोई स्थान नहीं हैं।



"युवक"

(मासिक-पत्र)

कार्यालयः युवक मासिक पत्र; जीवनी मंडी, आगरा मूल्यः ७रु० वार्षिक यह युवक का शहीद स्मृति अंक, सितम्बर. अक्टूबर, १९६६ है। इसका मूल्य एक प्रति का २.५० है। इस अंक के संपादक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, प्रेमदत्त पालीवाल एवं रामशरण विद्यार्थी है।

भारत के क्रान्तिकारी शहीदों का एक लम्बा और रोमांचकारी इतिहास है। किसी देश और

जाति की महानता का माप दण्ड उसमें उत्पन्न हुये शहीदों द्वारा होता है। किसी महान लक्ष्य की पूर्ति के लिये अपना बलिदान करने वाले महापुरुष ही उस देश के इतिहास की अक्षयनिधि होते हैं, और उसकी आत्मिक शक्ति और चारित्रिक उच्चता के द्योतक होते है। शहीदों की परम्परा वाला देश चाहे जितना अशक्त हो जावे परन्तु कभी पराजित नही होता क्यो कि जहां सेनायें हार जाती हैं, और शस्त्र चूक जाते है, वहां आत्मिक बल एवं संकल्प अक्षुण्ण रहते है, जो युवा पीढी में विद्रोह की अग्नि धधका कर उसको आत्माहुति के पथ का दावेदार सव्यसाची बना देते है और शहीद प्रेरणा के अक्षय स्रोत बनकर विद्रोह की अखंड-ज्योति बनाये रखते है।

अंग्रेजी साम्राज्यशाही से स्वतंत्रता के लिये दीर्घ एवं कठिन संघर्ष के इतिहास का प्रत्येक पृष्ठ शहीदो के रक्त से लिखा गया है। यद्यपि हमने अपनी स्वतत्रता अनेक देशो की भांति सशस्त्र क्रान्ति द्वारा नही प्राप्त की किन्तु इसकी नीव के पत्थर निश्चय ही वे क्रान्तिकारी युवक है, जो हंसते हंसते फांसी के तख्तो पर झूल गये। अग्रेजों की गोलियों के शिकार हुये, अथवा अण्डमान की काल कोठरियों में अपनी बलि चढा गये वे ऐसे जोशीले और स्वाभिमानी नवयुवक थे जो सीखंचो में बन्द रहने के लिये नहीं जन्मे थे वे सिंह की भांति जीना जानते थे, अतः उन्होंने क्रान्ति का मार्ग अपनाया और विदेशी शासन से जूझते हुये शहीद हो गये इन शहीदो में सर्व श्री चन्द्र शेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, वटुकेश्वर दत्त, यतीन्द्रनाथदास राजगुरु, सुखदेव, राजेन्द्र लहरी, रामप्रसाद विस-मिल खुदीराम बोस, अशफाक उल्लाखां', एवं महावीर सिंह आदि ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र है, जिनका अमर प्रकाश सर्वदा देश के युवको का मार्ग दर्शक बना रहेगा।

भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति का श्रेय कांग्रेस को दिया जाता है, यह आंशिक रूप से ही सत्य है, वास्तव में यदि देखा जाय तो सन् १९१९ में जब कांग्रेस ने राष्ट्रीय आन्दोलन का कार्यक्रम स्वीकार किया उसके पहले से भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये जो कुछ हुआ वह क्रांतिकारियों द्वारा ही हुआ है, और उसके पश्चात् भी स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी क्रान्तिकारी ही रहें हैं। १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम भी क्रांतिकारियों के प्रयास से हुआ था। सर्व प्रथम अग्रेजो के विरूद्ध मंगल पांडे ने गोली चलाई थी, इसी से बहुत से क्रान्तिकारी मंगल पांडे को राष्ट्रपिता कहते है।

प्रस्तुत अंक में प्रख्यात क्रांतिकारियों के विषय में समुचित वर्णन किया है, इसे पढ़ने से यह प्रतीत होता है कि भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति का आधार वे वीर युवक ही थे, जिन्होंने अपने जीवन की बलि चढाकर अंग्रेज साम्राज्य शाही से देश को मुक्त कराया। कांग्रेस जन जो केवल सात दिन जेल भुगत कर और चार कोड़े खाकर अपने आपको स्वतंत्रता संग्रामी होने का दम भरते है। वे केवल दम्भ करते हैं, और देश की भावी पीढ़ी को धोखा देते हैं, उनका इस प्रकार कहना मिथ्या प्रचार एवं अनैतिक है। पूज्य बापू सरदार पटेल, बाबू राजेन्द्र प्रसाद आदि देश के प्रभृति नेताओं ने इस तरह का मिथ्या एवं अनैतिक प्रचार कभी नहीं किया इसलिए उन महान पुरुषों के लिए जनता के हृदय में महान आदर है, और रहेगा।



चिन्ताहरण जन्त्री

(सन् १९७०) प्रवर्तक : पं. बचान प्रसाद त्रिपाठी रमल सम्राट, तांत्रिक शिरोमणि कसमंडा राज्य (सीतापुर) प्रकाशक : ठाकुर प्रसाद एन्ड संस, राजादरवाजा, वाराणसी पृष्ठ : १५१, मूल्य : एक रुपया पचास पैसा, इस जंत्री की यह विशेषता है कि इसमें तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्र, ग्रह,

राशी नक्षत्र इत्यादि का समय घटी और पल के अतिरिक्त घंटा और मिनिट में भी दिया है जिससे साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी अति सुगमता से तिथि, नक्षत्र आदि का समय मालूम कर सकता है, राशी प्रवेश वाले ग्रह और नक्षत्र, नवांश स्थूल अक्षरों में मुद्रित हैं, सप्ताह में सप्तवार के व्रतों का सहज और सूक्ष्म व्यवसाध्व विधि-विधान भी इसमें जन कल्याणार्थ अङ्कित किया है सन् १६७० में सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि एवं पुष्पामृत योग भी इसमें दिए गए हैं-सांख्यों का रहस्य भावी ज्ञान का सरल उपाय, दैवज्ञ की दृष्टि में व्यापार चक्र, सन् १९७० आपका भविष्य तथा व्यापारिक भविष्य फल आदि विषयों पर विद्वान प्रवर्तक ने विस्तार से प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त और भी विषय है जो दैनिक जीवन की जानकारी के लिए व्यक्ति के लिए अति उपयोगी है ज्योतिष का कार्य करने वालों के लिए भी यह जन्त्री महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।

★

मन्दिर आस्तिकता और सत्प्रवृत्तियाँ जगाने में लगें

[पं० श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा लिखित और युग-निर्माण योजना मथुरा द्वारा प्रकाशित 'मन्दिर जन-जागरण के केन्द्र बनें' पुस्तिका का सारांश]

~~~*~~~

भगवान् हर जगह मौजूद है। उसे साकार और निराकार विधि से कहीं भी-किसी भी प्रतीक माध्यम से पूजा जा सकता है। कागज का चित्र या मिट्टी की प्रतिमा घर पर रखकर भी भावना-पूर्वक पूजा से उपासना का प्रयोजन पूरी तरह प्राप्त किया जा सकता है। विशालकाय मन्दिरों का निर्माण करने की प्रक्रिया भारतीय मनीषियों ने अति महत्वपूर्ण प्रयोजना की पूर्ति के लिए विनिर्मित की हैं।

भगवान् की मन्दिरों में स्थापना करके सर्वसाधारण के मन में आस्तिकता की मान्यतायें परिपुष्ट करना हमारे देवालयों का प्रमुख प्रयोजन है। आस्तिकता का अर्थ है ईश्वर के आदेशों का पालन करना —नैतिक जीवन जीना। दुष्कर्मो से बचे रहना और विश्वात्ममय—परमात्मा को सुरभित बनाने के लिए अपना अधिकाधिक योगदान देना। आस्तिकता का प्रथम चरण जप, ध्यान एवं पूजा-पाठ हो सकता है पर उसकी पूर्णता भगवान्‌को, उनके आदेशों को जीवन में घुला लेना ही है। नेक सदाचारी, भला और परमार्थ परायण जीवन क्रम ही किसी की आस्तिकता का प्रमाण हो सकता है। इस आस्तिकता के ऊपर ही व्यक्ति और समाज की उत्कृष्टता एवं सुख-शांति निर्भर है। भगवान हमारे अति समीप अन्तः करण में विद्यमान है। उसे किसी की निंदा स्तुति से कुछ लेना देना नहीं उसकी प्रसन्नता, अप्रसन्नता—कृपा-अकृपा इस बात पर निर्भर है कि कौन उसके आदेशों का कितना पालन करता है। इस तथ्य को समझने वाला सज्जनोचित सदाचारी जीवन ही जीयेगा और समाज के प्रति अपने महान् कर्त्तव्यों को ध्यान में रखते हुए लोक—मंगल के लिये अपना बढ़ा-चढ़ा अनुदान देने में तत्पर रहेगा। आस्तिकता व्यक्ति और समाज की भावनात्मक भूमिका को ऊँची उठाने का प्रयोजन पूरा करती है। इसलिए उसे मानव जीवन की एक महत्ती आवश्यकता माना गया है। पूजा—उपासना का
~~~

सारा कलेवर इसी प्रयोजन के लिए खड़ा किया गया है। मन्दिरों की स्थापना में व्यापक प्रकाश पहुँचाया जाय।

मंदिरों के निर्माण में विपुल धन सम्पत्तियों के लगाए जाने में एकमात्र प्रयोजन यह है कि इन धर्म केन्द्रों के द्वारा आस्तिकता की सर्वतो मुखी प्रवृत्तियों का विस्तार किया जाय। पूजा-आरती भी वहाँ होती रहे सो ठीक है लोग दर्शन करने आयें और यह स्मरण करें कि सत्ता इस संसार में विद्यमान् है। अस्तु हमें उसके दण्ड से वचने और अनुग्रह को पाने के लिए सज्जनोचित जीवन जीना चाहिये। मनुष्य की भगवान को भूलकर ही कोई कुकर्म कर सकता है। यदि परमात्मा और उसकी न्याय व्यवस्था हमारी स्मृति में बनी रहे तो अनीति की दिशा में एक कदम भी बढ़ सकना सम्भव नहीं। भावनात्मक परिष्कार की दृष्टि से आस्तिकता का भारी महत्व है। व्यक्ति एवं समाज का कल्याण उसी पर निर्भरहै। मन्दिरों का प्रयोजन है कि भगवान् की प्रतिमा का दर्शन पूजन करने के लिए जनसाधारण को आमंत्रित आकर्षित करें। साथ ही उन आगन्तुकों में आस्तिकता की मूल मान्यतायें हृदयंगम कराने के लिए बहुमुखी प्रवृतियों का संचालन करें।

मंदिर वस्तुतः एक धर्म केन्द्र है। जहाँ से मनुष्य के भावात्मक निर्माण के लिए आवश्यक हर प्रवृत्ति का संचालन होता रहे। नित्य के कथा प्रवचन वहां इसीलिए होते हैं। जुमा की नमाज के बाद मसजिदों में मुल्ला लोग भाव भरे और दिशा देने वाले प्रवचन करते हैं। गिरजाघरों में पादरी लोग रविवार को प्रार्थना के बाद उपस्थित धर्म प्रेमियों को उनके व्यक्तिगत एवं सामाजिक कर्त्तव्यों का बोध कराते हैं। हिन्दू धर्म किसी समय सबसे आगे था, वहाँ कथा प्रवचनों के माध्यम से वह सब कुछ हर दिन नियमित रूप से सिखाया जाता था जो समय स्थिरता एवं प्राप्ति के लिए आवश्यक था। इतना ही नहीं, वहां पाठशालाओं, पुस्तकालयों, व्यायामशालाओं, सङ्गीत एवं कला—कौशलों की समस्त उन प्रवृत्तियों का संचालन होता था, जो भावात्मक निर्माण में सहायक हो सकती है। सर्वतोमुखी विकास की सम्पूर्ण योजनायें और प्रक्रियायें मन्दिरों के धर्म-केन्द्र ही संचालित करते थे। उनका भारी प्रभाव पड़ता है। आस्तिकता की भावनायें किस प्रकार कार्यान्वित की जा सकती हैं? उनका रचनात्मक, व्यावहारिक स्वरूप क्या हो सकता है? इसका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने और प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति मंदिरों में जाता था और उनकी उपयोगिता अनुभव करता था उनके निर्माण को पुण्य कर्म मानना और उनमें विपुल धन लगाया जाना, इसीलिए उपयुक्त माना जाता था कि उन रचना से अगणित व्यक्ति प्रकाश पाने और समग्र उत्कर्ष के लिए अग्रसर होने में समर्थ होंगे।

धर्म प्रेमी लोग अपनी उपार्जित सम्पत्ति को मन्दिरों के बनाने और उनके चलाने में समर्पित करके अपने को धन्य मानते थे, क्योंकि उससे अच्छा उपयोग किसी पैसे का हो नहीं हो सकता। जनता भी देव प्रतिमा के आगे कुछ न कुछ श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती रहती थी, ताकि उस पैसे से रचनात्मक सत्प्रवृतियों का संचालन हो सके। पुजारी लोग पूजा—अर्चा में प्रातः सायं देव प्रतिमा के लिए लगाकर शेष सारा समय मन्दिर संस्था द्वारा संचालित सत्प्रवृत्तियों में लगाते रहते थे। वे सुयोग्य विद्वान् ही नहीं, सदाचारी और लोक-सेवी भी होते थे। उन्हें सामाजिक आवश्यकताओं का ज्ञान रहता था, तदनुरूप वे अपने व्यक्तित्व, प्रभाव एवं आधार का उपयोग जनमानस की दिशा सुव्यवथित करने में लगाये रहते थे। समर्थगुरु रामदास ने महाराष्ट्र में सैकड़ों महावीर मन्दिर स्थापित किये थे और उन स्रोतों से शिवाजी के स्वतन्त्रता संग्राम धन एवं जन शक्ति को विपुल

मात्रा में उपलब्ध किया था। सिख धर्म के सारे गुरुद्वारे अनुपयुक्त शासन को हटाने में केन्द्र बिन्दु बनकर अपनी स्थापना का महत्त्व प्रतिपादित करते रहे। बुद्ध बिहार विश्वव्यापी धर्म प्रसार योजना के सुव्यवस्थित केन्द्र थे। यहां सदा से यही परम्परा प्रचलित रही और मन्दिरों ने अविस्मरणीय भूमिका सदा से प्रस्तुत की।

आज कुछ उल्टा हो गया है। मन्दिर केवल शंख घड़ियाल बजने और आरती उतारने तक सीमित हैं। पुजारी लोग प्रातः सायं की थोड़ी-सी टंट-घंट करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। उन विशाल इमारतों का कोई उपयोग नहीं और जो प्रचुर धन उनमें लगा हुआ है, वह उन मठाधीशों की व्यक्तिगत सम्पत्ति बनता और उन्हीं के उपयोग में व्यय होता देखा जाता है। किन्हीं प्रेरक प्रवृत्तियों के संचालन की बात भी वहां गुन्जाई नहीं पड़ती। ऐसी दिशा में उन्हें प्राण रहित निर्जीव कलेवर की तरह ही जहाँ—तहाँ देखा जा सकता है। उपयोगिता खोजने पर जन-आकर्षण का घट जाना भी स्वाभाविक है। किन्हीं मेले उत्सवों पर थोड़ी भीड़ दीखने के अतिरिक्त नियमित रूप से पहुँचने वाले वहां थोड़े से ही रहते हैं। जो पहुंचते हैं वे भी समय काटने की दृष्टि से ही जाते हैं मिलता इन्हें भी कुछ नहीं। अनुपयोगी चीज सड़ने लगती हैं। इन धर्म स्थानों में धीरे-धीरे अनाचार का प्रवेश जिस प्रकार हो रहा है, उससे दुःख और दोष ही उत्पन्न होते हैं।

हमारे मन्दिरों में लगभग सौ अरब रुपये की सम्पत्ति लगी है। उनकी दैनिक आमदनी करोड़ों रुपया है। इमारतें इतनी विस्तृत हैं कि उनमें ईसाई मिशन के द्वारा संसार भर में हो रहे कार्यो से भी कई गुने रचनात्मक कार्य आरम्भ किये जा सकते हैं। करीब एक लाख व्यक्ति उन मंदिरों की सेवा—पूजा में नियुक्त हैं। इतने व्यक्ति यदि काम के हों और उन्हें रचनात्मक दिशा में लगाया जा सके तो सारे समाज का काया-कल्प हो सकता है। जनता जिस श्रद्धा से धन इनमें चढ़ाती है, उसके अनुरूप यदि धर्म संस्थापना की बहुमुखी प्रवृत्तियां भी इनमें संचालित हो सकें तो हमारा समाज कुछ ही दिनों में कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है। साधनों के अभाव में काम रुका रहे यह समझ में आता हैं, किन्तु प्रचुर साधन होते हुए भी उनका सदुपयोग न हो सके यह बड़ी लज्जा की बात है।

समय आ गया है कि इन धर्म-केन्द्रों का सदुपयोग करने की दिशा में हम विचार करें और साहसपूर्ण कदम उठायें। जिनके हाथ में मन्दिर संचालन व्यवस्था है, उन्हें सोचना चाहिये कि—क्या इन केन्द्रों में लगे हुए धन का सही उपयोग हो रहा है? भगवान् की पूजा उचित है और आवश्यक भी, पर यह अबुद्धिमत्तापूर्ण है कि प्रचुर धन-शक्ति और जन-शक्ति का उपयोग इतने भर के लिए ही समाप्त हो जाय। ईश्वर भक्ति, पूजा-आरती तक ही सीमित नहीं है। व्यक्ति और समाज का भावनात्मक उत्कर्ष भी ईश्वर भक्ति का ही अङ्ग है। देश-धर्म, समाज और संस्कृति की उत्कृष्टता अभिवर्द्धन के लिए जो रचनात्मक कार्य हो सकते हैं उन्हें ईश्वर पूजा से कम महत्त्व का किसी भी प्रकार नहीं समझा जाना चाहिए। मन्दिरों की उपयोगिता तभी अक्षुण्ण रह सकती है, जब उनमें पूजा के साथ-साथ आस्तिकता के अभिवर्द्धन एवं परिपोषण में सत्प्रवृत्तियाँ भी संचालित होती रहें।



पाठकों की व्यक्तिगत समस्यायें और समाधान

—कल्याणदत्त शर्मा
ज्योतिषाचार्य

(यदि आप ज्योतिष के द्वारा अपने भविष्य (विवाह, सन्तान, सम्पत्ति, व्यवसाय, इत्यादि प्रश्नों के उत्तर) को जानने के इच्छुक हैं तो कूपन को अपने प्रश्न के साथ नत्थी कर भेजें। प्रश्न के साथ जन्म पत्री, जन्म तिथि, जन्म स्थान व समय लिखकर अवश्य भेजें, यह सम्भव न हो तो प्रश्न लिखने का सही समय, य तारीख लिखकर भेजें। प्राप्त प्रश्नों के उत्तर पत्रिका में यथाक्रम से प्रकाशित करने का भरसक प्रयत्न किया जायेगा। सम्पादक को अधिकार होगा कि वह बिना कारण बताये किसी प्रश्न को प्रकाशित करे अथवा न करे।

यदि आप अपने पते पर अपने प्रश्न का उत्तर चाहें तो सम्पादक के नाम ५) रुपया प्रत्येक प्रश्न हेतु मय कूपन के साथ टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें। एक प्रश्न के साथ एक कूपन भेजना अनिवार्य होगा। शुल्क प्राप्ति की तिथि से तीन माह की अवधि में प्रश्न का उत्तर डाक से प्रेषित किया जायेगा।

—सम्पादिका

प्रश्न १. मेरे विवाह का योग कब लगेगा जन्मांग संलग्न हैं।

—रमादेवी, जबलपुर

उत्तर : जन्मपत्रिका से सप्तम भाव का स्वामी बुध है जो दशम स्थान पर उच्च का है तथा शुक्र शनि के साथ स्वराशिगत ११ वें भाव में शनि के साथ हैं शनि दूसरे घर का स्वामी है जहाँ केतु स्थित है अतः आपकी शादी एक जगह बातचीत होते ही पक्की हो जायगी बुध की महादशा और केतू का अन्तर तथा शुक्र का प्रत्यन्तर जब आपकी उम्र २२ वर्ष ४ महीने की होंगी।

प्रश्न २. शुक्र की महादशा में शनि का अन्तर काल कैसा रहेगा ? प्रश्न कों स्पष्टता के लिये कुन्डली भेज रहा हूं।

—सीयासरन, उदयपुर

उत्तर : इस अन्तर काल में आपका स्वयं का मकान होगा तथा आपकी आमदनी चार हजार रुपये माह से कम न होगी पर आप अपने स्वास्थ्य की तरफ से चिन्तित रहेगे।

प्रश्न ३. मेरे हाथ-से कोई जलाशय बनने का योग है यदि बनेगा तो कब तक, जन्मांग सलग्न है।

—रमादेवी, बीकानेर

उत्तर : आपके कारकाश लग्न में कुम्भ राशि नहीं है तथा दशमेश गोपुरांश में भी नहीं गया है। अतः जलाशय निर्माण का योग प्रतीत नहीं होता।

प्रश्न ४. जन्मपत्र सलग्न हैं, मुझे किस देवता की आराधना से सफलता मिल सकती है।

—हरी ओमशंकर, ब्यावर

उत्तर ; आपकी जन्म कुण्डली में पंचम भाव चन्द्र और शुक्र से दृष्ट हैं अतः शक्ति की उपासना अति लाभप्रद रहेगी।

प्रश्न ५ मेरा भाग्योदय कौन से वर्ष से होगा जन्मपत्रिका संलग्न है।

उत्तर : आपका भाग्योदय शुक्र क्षेत्रगत है, अतः २५ वर्ष से पूर्ण भाग्योदय का योग बनता है।

प्रश्न ६. मेरी स्त्री सर्वदा रुग्ण रहती है, इसका क्या कारण है जन्मकुण्डली संलग्न है।

—कृष्ण कान्त, देहरादून

उत्तर : आपका सप्तमेश अष्टमस्त है और अष्टमेश सप्तम भावगत है, तथा सप्तमेश पाप ग्रहों से दृष्ट है, अतः आपको स्त्री सुख से सर्वदा बाधा बनी रही है और बनी रहेगी।

प्रश्न ७. मेरे प्रथम पुत्र होगा अथवा पुत्री, जन्मांग सलग्न है।

—मदन मोहन—पूना

उत्तर : आपकी जन्मपत्रिका में लग्नेश द्वितीय भाव में गया हैं तथा चन्द्र, मंगल और शुक्र तीनों द्विस्वभाव राशि में गये है। अतः प्रथम पुत्रोत्पति का प्रबल योग है।

प्रश्न ८ ....

—वी. एम. पाठक, बम्बई

उत्तर : इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर इस स्तम्भ में नहीं दिये जाते, क्षमा करें।

प्रश्न ९, क्या इसमें कुछ धन तथा ख्याति योग है।

गुरुदया—गुजरात

उत्तर : इस कुण्डली में सिंह लग्न है, लग्नेश सूर्य धनेश तथा लाभेश बुध के साथ लाभ में स्थित होने से स्वोपार्जित द्रव्य का विशेष योग बनता है यह लक्षादिपति योग कहलाता है दशमेश चन्द्र उच्च राशिगत होकर स्वराशिस्थ मंगल के साथ हैं, एवं स्वराशिगत मंगल से गुरु भी दृष्ट है सिंह लग्न के लिये मंगल और शुक्र ही अत्युत्तम राजयोग बनाते हैं इसका सम्बन्ध पूर्ण रूपेण हो रहा है अतः ख्याति और धन प्राप्त होगा।

प्रश्न १०. मेरी जन्मपत्री में दत्तक पुत्र लेने का योग बनता है कि नहीं।

—ओम प्रकाश, अमृतसर

उत्तर : आपकी जन्मपत्रिका में पंचम भाव में मकर राशि है उसमें चन्द्र शनि युक्त है, एवं शनि स्वनवांश गत है। अतः दत्तक पुत्र लेने का प्रबल योग है।

प्रश्न ११. मेरे प्रमेद की शिकायत है, जन्म पत्रिका में किन ग्रहों से यह योग बनता है।

—रमा, अजमेर

उत्तर . आपके दशम भावस्थ मंगल पर चतुर्थ भावस्थ शनि की दृष्टि होने से इस बीमारी का योग बना,

प्रश्न १२. ....

—हरीमोहन अग्रवाल, इटावा

उत्तर : आपके प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है पर इस प्रकार के प्रश्नों के लिये पूरी जन्मपत्रिका उपलब्ध होनी चाहिये तथा सम्पादक के नाम ५) का मनीआर्डर तथा टिकिट लगा लिफाफा और कूपन साथ आना अनिवार्य है ।

प्रश्न १३. बार बार जुकाम लग जाती है यह किस ग्रह के प्रभाव से है, तथा इसका क्या उपचार किया जावे ?

—बनवारीलाल. बरेली

उत्तर : आपका लग्नेश चन्द्र षष्ठ स्थानगत होने से बार बार जुकाम लग जाता है अतः आप चांदी की अंगूठी में मोती सोमवार को धारण करें ।

प्रश्न १४. मेरी पदोन्नति का योग कब बनता है ।

—राधाकिशोर शर्मा, जयपुर

उत्तर : शनि की महादशा में सूर्य के अन्तर काल में जो सम्वत २०२७-७-२ से सम्वत् २०२८-७-४ तक रहेगा पदोन्नति होगी ।

प्रश्न १५. श्री जे. एस. चतुर्वेदी जयपुर आपका प्रश्न बहुत लम्बा है इस कारण इस स्तम्भ में उत्तर नहीं दिया जा सकता ।

प्रश्न १६. पदोन्नति कब होगी ।

—भानुप्रसाद, देवास

उत्तर : शनि की दशा में बुध के अन्तर काल में १६-११-१६७० तक ।

प्रश्न १७ मेरा व्यवसाय और आर्थिक स्थिति के बारे में बताएँ ।

—बीनू एम पटेल, गुजरात

उत्तर : आपकी जन्म कुन्डली में लाभेश सप्तमेश, पंचमेश, दशमेश का स्थान सम्बन्ध है, व दृष्टि सम्बन्ध बन रहा है जो अत्युत्तम है, पंचम भावस्थ सूर्य बुध चन्द्र का योग भी उत्तम है इन सबसे आप बुद्धि जीवी बने रहने में सफल होंगे तथा मंगल, शुक्र, बुध की दशा अन्तरदशा में द्रव्य व मान प्रतिष्ठा मिलती रहेगी ।

प्रश्न १८. क्या मेरा स्थान्तरण केन्द्रीय सरकार की सेवा से राज्य सरकार की सेवा में हो सकेगा जहाँ में पहले था ।

—धन्नालाल, जोधपुर

उत्तर : प्रश्न कुण्डली के आधार पर आपका १६७० में स्थान्तरण का योग बनता है ।

प्रश्न १६. मधु सक्सैना, शेखर, इन्द्रा-उमा-काननू......

—जयपुर

उत्तर : इस स्तम्भ में केवल एक ही प्रश्न का विचार किया जाता है उसमें भी कुण्डली के साथ विंशोत्तरी दशा व नवमांश परम आवश्यक हैं अतः उत्तर देने के लिये पूरी सामग्री भेजिये ।

प्रश्न २०, क्या मेरी जन्मकुण्डली में लौटरी योग बनता है एवं जीवन में आर्थिक उन्नति कब है ।

—डा० गोपालकृष्ण रोहिला, जयपुर

उत्तर : आपकी कुण्डली में लौटरी योग नहीं बनता तथा आर्थिक उन्नति २५ वर्ष की अवस्था के बाद होगी—आपकी कुण्डली में चन्द्रमा नीच राशिगत अष्टमभाव में है जो सुखेश भी हैं । अतः चांदी की अंगूठी में मोती धारण करना चाहिये । अधिक खर्च करने की आदत आपको चैन नहीं लेने देगी ।

प्रश्न २१. धन व व्यवसाय का भविष्य कैसा है ।

—पीली वंगा

उत्तर : आपकी कुण्डली के अनुसार आपका भविष्य २८ वर्ष के बाद बहुत उत्तम रहेगा--अधिक धन लाध होगा तथा मकान आदि बनवाएंगे—व्यापार बहुत अच्छा चलेगा उस समय गोमेद धारण करना परमावश्यक है ।

सूचना :—जिन प्रश्नों के साथ ज्योतिष मार्तण्ड का कूपन नही होगा, या पुराने अंकों का कूपन होगा हम उनके उत्तर प्रकाशित करने में असमर्थ है, जिन महानुभावों ने प्रश्नों के उत्तर मंगाये थे पर टिकिट लगा लिफाफा नहीं भेजा था उनके उत्तर भेजने में हम असमर्थ है । कृपया अपना पता साफ साफ लिखें ।



आपका त्रैमासिक राशि भविष्य

जनवरी, फरवरी, मार्च--१९७०

—नन्दकिशोर शर्मा
(बी. ए. बी. एड़ ज्योतिष विशारद)

मेषः—

जनवरीः— यह मास परिवारिक कष्टों में व्यर्त त होगा। पर ११ दिन बाद आर्थिक स्थिति मे परिवर्तन लाभमय होगा। शारीरिक कष्ट एवं जुकाम की सम्भावना रहे। राज्य पक्ष श्रेष्ठ रहे किसी नवीन मित्र द्वारा धोखा खा सकते है। अतः इससे सचेत रहे। इस मास मे ताः ७, १३, १४, २२, २३. २४ अशुभ है।

फरवरीः— इस मास में शत्रुओं से संघर्ष की अधिक सम्भावना है। आर्थिक स्थिति मे सुधार होवे। गत मास की अपेक्षा इसमे खर्चा अधिक हो। मानसिक अशान्ति बनी रहे। मन में दुर्भावनाये पैदा हो। सू. बु. शु. राज्य व लाभ मे रहने से दोनों में लाभ रहे। ताः १-६-११-१८-१९-२०-२८ अशुभ है।

मार्चः— मास का प्रथम सप्ताह सफलता पूर्वक व्यतित होवे धार्मिक कार्यो मे पैसा खर्च होवे। नोकरी में पदोन्नति का प्रयत्न करेंगे और उसमें सफलता की सम्भावनाये बढ़ेगीं। व्यापार में पैसा लगाना लाभदायक नही होगा। सन्तान पक्ष की तरफ से चिन्तायें बढ़ेगी शनि का दान कराये ताः ६. ७. ८. १५. १६. १७. २५. २६. अशुभ है।

वृष :—

जनवरी :—गत मास की अपेक्षा इस मास में व्यापारिक कार्यो में अधिक सुधार की सम्भावनाये बनें। अनेक शुभ कार्यो के होने पर भी खर्च कीं अधिकता बनी रहे। शत्रु वर्ग से भय बना रहे। ऋण बढ़ने या संचित धन में से खर्च हो सकता है। राजकीय झगड़ो से बचते रहे वर्ना हानि उठानी पडेगी क्यों कि गुरु अनुकूल नहीं है। इस मास की ता: १४. १५. १६. २४. २५. २६. खराब है।

फरवरी :—यह मास सामान्य रूप से अच्छा है। अपने महत्वपूर्ण और उलझे हुये कार्यों के बनने की सम्भावनाये बने किन्तु सफलता प्राप्त न हो। खर्चा अधिक होने से मानसिक सन्तुलन ठीक न रहे। शत्रुओं से भय बना रहेगा। ताः १२ के बाद मित्रों से कम सहयोग प्राप्त होवे। घरेलू कार्यो में खर्चे की अधिकता से परेशानिया बढ़ेगी। शनि का दान कराये, मास का अन्तिम सप्ताह श्रेष्ठ रहेगा। इस मास की ता. २. ३. ४. ११. १२. २०. २१. २२. खराब है।

मार्च :—यह मास सामान्य उत्तम रहेंगा। इस मास में अनेक शुभ फल मिलने पर भी भविष्य के प्रति शंकाये बनी रहेगी। दो नई समस्याऐ या

बौद्धिक उलझने आयेगी और दिन चर्या ग्रस्त व्यस्त हो उठेगी सांसारिक उलझनों से परेशानी उठानी पड़ेगी। बहुत सम्भव है कि आपके मित्र और प्रिय जन भी विरोध करने लगे। स्त्री तथा सन्तान पक्ष की ओर से चिन्तायें बढ़ेगी मास का दूसरा व अन्तिम सप्ताह ठीक रहेगा। ता: २. ३. ४. १०. ११. १२. २०. २१. २२. श्रेष्ठ है।

मिथुन :—

जनवरी :—यह मास संघर्ष पूर्ण है। कई प्रकार की नवीन उलझनों में भटकते रहेंगे मास के पूर्वार्द्ध में शारीरिक पीड़ा तथा अनहोनी घटनाओं से चिन्तित रहेंगे। पाप कार्यो की ओर प्रवृत्ति रहेगी, घर बाहर कलह विवाद के अवसर आयेंगे। धनिष्ट मित्र व प्रियजन भी विरोधी बन जायेंगे। धन लाभ सामान्य। विशेष व्यय और हानि। धार्मिक कार्यो में खर्चा अधिक हो। कोई नया व्यक्ति धोखा देने का प्रयत्न करेगा उससे सावधान रहें। पत्नी से वैमनस्यता बढ़ेगी। स्वास्थ सामान्य रहें। इस मास की ता. १७. १८. १६. २६. २७. २६. नेष्ट है।

फरवरी :—यह मास सामान्य अच्छा रहेगा। प्रयासों में सफलता और धन लाभ पाने के लिए मास का प्रथम सप्ताह श्रेष्ठ रहै। व्यापारिक कार्यों में लाभ कम हो। मन में बुरे २ विचारो का प्रादुर्भाव हो। मित्रों परिजनों का उत्तम समागम खान पान भ्रमण वार्तालाप मनोरंजन के अवसर नवीन वस्त्र वैभव, हर्षदायक समाचार और पत्र प्राप्त हो, यात्रा से लाभ की सम्भावना। मान प्रतिष्ठा बढे। धार्मिक कार्यों में खर्चा होवे। ता. १० के बाद बिगड़े काम बनें। इस मास की ता. ५. ६. १३. १४. १५. २३. २४. २५. खराब है।

मार्च :—इस मास में व्यापार सन्तोषजनक चलै। सन्तान सुख में वृद्धि। पारवारिक जनों द्वारा विवाद का भय बना रहे। व्यर्थ के कार्यो में अधिक खर्चा हो। वायु विकार से शारिरिक कष्ट बढने की सम्भावना, अप्रिय या शोक समाचार प्राप्त हो। वैवाहिक सुखों में बाधायें। यात्रा अवश्य। स्वास्थ में सुधार अन्तिम सप्ताह में। ता. ४. ५. ६. १२. १३. २२. २३. २४. ३१ नेष्ट।

कर्क —

जनवरी :—यह मास संकट संघर्ष पूर्ण है और किसी अप्रिय परिवर्तन की सूचना देता है। गुप्त शत्रु से सतर्क रहे वर्ना धोखा खाने की सम्भावना बने। कठिन परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। वाद विवाद से बच निकलने का प्रयास करें, नहीं तो शारीरिक हानि उठानी पड़ेगी। मन कुभावनाओं की ओर दौड़ेगा, उस पर संयम रखने की आवश्यकता है। चालबाज लोगों और शीघ्र धनी बनाने वाली योजनाओं से दूर रहें। पत्नी से आकस्मिक झगड़े की सम्भावना बने। स्वास्थ्य सामान्य तथा ठीक रहें। तारीख १६-२०-२१-२६-३०-३१ नेष्ट हैं।

फरवरी :—यह मास सामान्यतया मध्यम रहेगा। इस मास में शारीरिक कष्ट का योग पाया जाता है किन्तु काम धन्धों में सफलता प्राप्त होती रहेगी। व्यापार के प्रति नवीन विचार उत्पन्न होंगे। सहयोगी तथा मित्रों से बिगाड़ होने का योग भी बनता है। भाग्योदय के अवसर नौकरी में पदोन्नति की आशा, व्वसाय में प्रगति, स्थानांतर सम्भव, सन्तान पक्ष से चिन्तित, स्त्री सुख पूर्ण। ता. ६-७-८-१५-१६-१७-२५-२६-२७ खराब है।

मार्च :—यह मास पर्याप्त अच्छा है। श्रेष्ठ और मंगलमय कार्यो की सूचना देता है। प्रयासों में सफलता की सम्भावना. नौकरी में पदोन्नति, धार्मिक कार्यों में पैसा खर्च होगा। सट्टा लाटरी का व्यापार न करें वर्ना हानि उठानी पड़ेगी। गुरु